Rs. 15

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

क्रान्ति

जून 2010

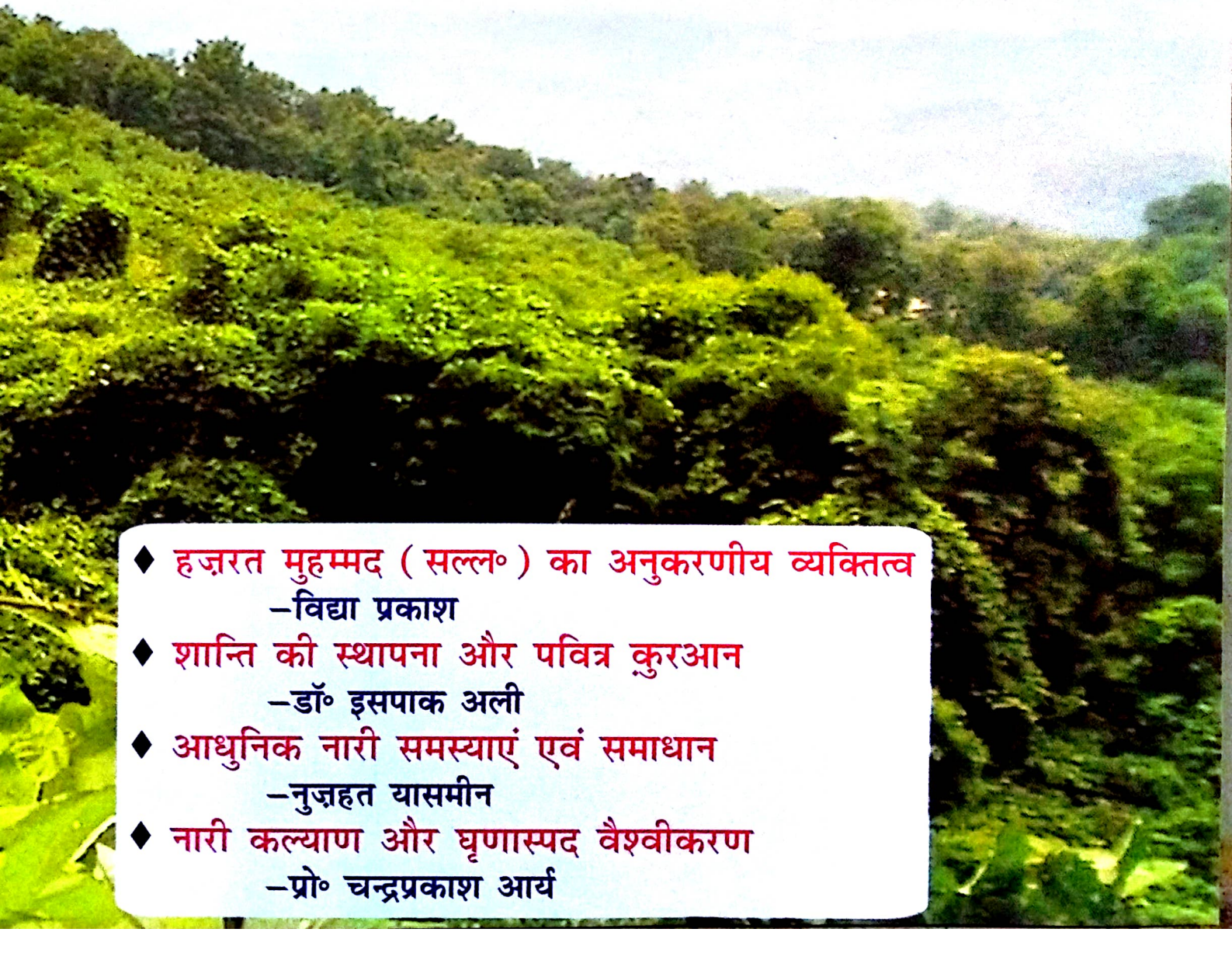

- हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) का अनुकरणीय व्यक्तित्व
  –विद्या प्रकाश
- शान्ति की स्थापना और पवित्र क़ुरआन
  –डॉ॰ इसपाक अली
- आधुनिक नारी समस्याएं एवं समाधान
  –नुज़हत यासमीन
- नारी कल्याण और घृणास्पद वैश्वीकरण
  –प्रो॰ चन्द्रप्रकाश आर्य

AL KABIR POLYTECHNIC

A Muslim Minority Unaided Institution
Recognised by SBTE, Govt. of Jharkhand
& Approved by AICTE Govt. of India


Polytechnic Building

The institute in its academic program imparts three year diploma courses in engineering in following branches.

- Civil Engg.
- Electrical Engg.
- Mechanical Engg.
- Automobile Engg.
- Computer Science & Engg.
- Electronics & Communication Engg.


Laboratories and workshop

★ ★ ★

Kabir Nagar, P.O. Kopali, Via-Mango,
Jamshedpur-831012, Jharkhand
Tel. : 06591-260092, Tele Fax : 06591-260414
E-mail : principal_akpjsr@rediffmail.com
Website : www.al-kabirjsr.com

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

वर्ष 20 अंक 1 जून 2010

पुरुषों का उस माल में एक हिस्सा है जो मां-बाप और नातेदारों ने छोड़ा हो; और स्त्रियों का भी उस माल में एक हिस्सा है जो मां-बाप और नातेदारों ने छोड़ा हो। (कुरआन, 4:7)

संपादक

डॉ० मुहम्मद अहमद

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

फोन–(011)–26949430

ई मेल kantimasik@gmail.com

सहयोग राशि

एक प्रति रु० 15/- विशेषांक रु० 25/-

वार्षिक रु० 160/-

दो वर्ष 300/- पांच वर्ष 700/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–60 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–25 US डॉलर

नोट–चेक / ड्राफ्ट **'मासिक कान्ति'** के नाम से बनवाएं

ग़ज़ल

कौन कहता है कि महरूमी[1] का शिकवा न करो
हां, मगर साक़ी-ए-मैख़ाना को रुसवा न करो

ज़िक्र छिड़ जाए अगर क़ौम की बदबख़्ती[2] का
रहनुमाओं की तरफ़ कोई इशारा न करो

ज़ेह्न संजीदा मसाइल[3] से हटाने के लिए
रोज़ ये शैख़ो-ब्रह्मन का तमाशा न करो

एक भी लफ़्ज़[4] हटाने की नहीं गुंजाइश
मेरे पैग़ामे-मुहब्बत[5] का ख़ुलासा[6] न करो

ये तअल्लुक़ की ख़राशें भी मज़ा देती हैं
रूठ जाए कोई तुमसे तो मनाया न करो

अब मैं ख़्वाबों से हक़ीक़त की तरफ़ जाता हूं
मेरे अरमानों की लाशो, मेरा पीछा न करो

आज भी मैं नहीं इन्सान से मायूस कि जब
लोग कहते हैं ख़ुदा पर भी भरोसा न करो।

● **हफ़ीज़ मेरठी**

---

1. वंचित रहने 2. बदक़िस्मती 3. गंभीर समस्याओं 4. शब्द 5. प्रेम-सन्देश 6. सारांश।



कहां क्या है ?

ग़ज़ल	–हफ़ीज़ मेरठी	3
कुरआन ज्योति		5
मध्य मार्ग अपनाना और थोड़े पर संतोष (हदीस प्रभा)		6
सार्थक जीवन के लिए कल्याण अपनाइए (संपादकीय)		7
इस्लामी बैंकिंग का समर्थन (आपके पत्र)		8
ग़ज़ल	–डॉ॰ त्रिलोकी सिंह	9
हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) महान अनुकरणीय व्यक्तित्व	–विद्या प्रकाश	11
हज़रत जमीला अंसारिया रज़ि॰ (नेकी के सिपाही)	–तालिब हाशमी	13
शान्ति की स्थापना और पवित्र कुरआन	–डॉ॰ इसपाक अली	15
वर्तमान परिस्थितियों में मुस्लिम नवजवानों की भूमिका	–यान्नी रिडले	17
साहित्य के असाहित्यिक तत्व (साहित्यिकी)	–मुद्राराक्षस	23
मैं बनना चाहता हूं (कविता)	–सुरेन्द्र कुमार 'अंशुल'	24
आधुनिक नारी : समस्याएं एवं समाधान	–नुज़हत यासमीन	26–27
नारी कल्याण और घृणास्पद वैश्वीकरण	–प्रो॰ चन्द्र प्रकाश आर्य	32
सत्याग्रह (कहानी)	–मुंशी प्रेमचन्द	37
असह्य होती नैतिकता, स्वागत योग्य, ज़हर पीने को अभिशप्त (विश्व घटना-चक्र)	–मुशर्रफ़ अली	42
हिंसक कौन ?, लक्ष्य से अनभिज्ञ, नींद, बदलती प्राथमिकता, आज भी वही स्थिति (अभिमत)		44
चंगेज़ ख़ां और मुसलमान (अतीत)	–एहसान शौक़	45
कन्फ्यूशियस ने कहा (बालवीथी)		50



कैसे नादान हैं ये लोग कि उनको अल्लाह का शरीक ठहराते हैं जो किसी चीज़ को भी पैदा नहीं करते, बल्कि स्वयं पैदा किये जाते हैं, जो न उनकी मदद कर सकते हैं और न आप अपनी मदद ही में समर्थ हैं । अगर तुम उन्हें सीधी राह पर आने की दावत दो तो वे तुम्हारे पीछे न आएं, तुम चाहे उन्हें पुकारो या ख़ामोश रहो, दोनों ही सूरतों में तुम्हारे लिए बराबर ही रहे ।[147] –क़ुरआन, 7 : 191-193

(गतांक का शेष)

इस ग़लतफ़हमी पर रिवायतों का एक ख़ोल चढ़ गया और एक पूरा क़िस्सा गढ़ दिया गया कि हज़रत हव्वा के बच्चे पैदा होकर मर जाते थे, अन्ततः एक बच्चे के जन्म के अवसर पर शैतान ने उनको बहका कर इस बात पर तैयार कर दिया कि उसका नाम अब्दुल हारिस (शैतान का बन्दा) रख दें । विडम्बना यह है कि इन रिवायतों में से कुछ की सनद नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक भी पहुंचा दी गयी है । लेकिन वास्तव में न ये रिवायतें ग़लत हैं और क़ुरआन से भी इनकी पुष्टि नहीं होती । क़ुरआन जो कुछ कह रहा है वह केवल यह है कि मानव जाति का पहला जोड़ा जिससे नस्ल की शुरुआत हुई, उसे पैदा करने वाला भी अल्लाह ही था । इस रचना-कर्म में कोई दूसरा शरीक न था और फिर हर मर्द और औरत के मिलाप से जो संतान पैदा होती है, उसका पैदा करने वाला भी अल्लाह ही है जिसे तुम सब लोगों के दिलों ने स्वीकार किया है । चुनांचे इसी स्वीकृति के कारण तुम आशा-निराशा की दशा में जब दुआ मांगते हो, तो अल्लाह ही से मांगते हो, लेकिन बाद में जब आशाएं पूरी हो जाती हैं तो तुम्हें शिर्क की सूझती है । इस तक़रीर में किसी ख़ास मर्द और ख़ास औरत का उल्लेख नहीं है, बल्कि मुशरिकों में से हर मर्द और हर औरत का हाल बयान किया गया है ।

इस स्थान पर एक और बात ध्यातव्य है । इन आयतों में अल्लाह तआला ने जिन लोगों की निन्दा की है वे अरब के मुशरिक थे और उनका क़ुसूर यह था कि वे भली-चंगी संतान पैदा होने के लिए तो अल्लाह ही से दुआ मांगते थे, मगर जब बच्चा पैदा हो जाता था तो अल्लाह की इस देन में दूसरों को शुक्रिये का हिस्सेदार ठहरा लेते थे । निस्सन्देह यह हालत भी निहायत बुरी थी, लेकिन अब जो शिर्क हम तौहीद (एकेश्वरवाद) के दावेदारों में पा रहे हैं, वह इससे भी बुरी है । ये ज़ालिम तो संतान भी ग़ैरों ही से मांगते हैं, गर्भ के दिनों में मन्नतें भी ग़ैरों के नाम ही की मानते हैं और बच्चा पैदा होने के बाद भेटें भी इन्हीं के आस्तानों पर चढ़ाते हैं । इस पर भी अज्ञान काल के अरब तो मुशरिक थे और ये तौहीद वाले हैं, उनके लिए जहन्नम की अनिवार्यता थी और इनके लिए निजात की गारंटी है । उनकी गुमराहियों पर निन्दा की ज़ुबानें तेज़ हैं, मगर इनकी गुमराहियों पर निन्दा कर बैठिए तो मज़हबी दरबारों में बेचैनी की लहर दौड़ जाती है । इसी हालत का मातम हाली मरहूम ने अपनी मुसद्दस में किया है–

करे ग़ैर गर बुत की पूजा तो काफ़िर
झुके आग पर बहर सजदा तो काफ़िर
कवाकिब में माने करिश्मा तो काफ़िर
मगर मोमिनों पर कुशादा हैं राहें
परस्तिश करें शौक़ से जिसकी चाहें
नबी को जो चाहें ख़ुदा कर दिखाएं
इमामों का रुतबा नबी से बढ़ाएं
मज़ारों पर जा-जा के नज़्रें चढ़ाएं
शहीदों से जा-जा के मांगें दुआएं
न तौहीद में कुछ ख़लल इससे आए
न इस्लाम बिगड़े न ईमान जाए ।

147. अर्थात् इन मुशरिकों के झूठे माबूदों (उपास्यों) का हाल यह है कि सीधी राह दिखाना और अपने उपासकों की रहनुमाई करना तो दूर, वे बेचारे तो किसी रहनुमा की पैरवी करने के योग्य भी नहीं, यहां तक कि किसी पुकारने वाले की पुकार का जवाब तक नहीं दे सकते ।

पवित्र क़ुरआन
को इंटरनेट पर पढ़िए
www.quranhindi.com

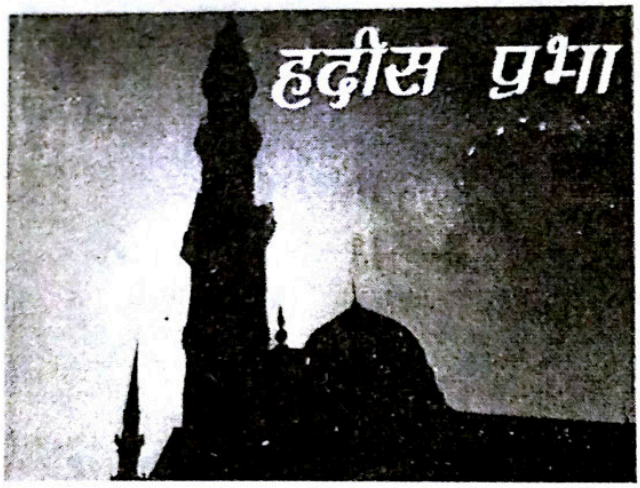

मध्य-मार्ग अपनाना और थोड़े पर संतोष

● हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि॰) कहते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) चटाई पर सोये । फिर जब उठे तो आपके पहलू पर निशान पड़ गये थे । हमने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल, अच्छा होता कि हम आपके लिए कोई बिस्तर बनवा देते । आपने कहा : "मुझे दुनिया से क्या मतलब ? मैं तो दुनिया में बस उस सवार की तरह हूं जो किसी वृक्ष के नीचे साया ले और फिर चल दे और उस वृक्ष को छोड़ जाए ।"

–तिरमिज़ी

● हज़रत आइशा (रज़ि॰) कहती हैं कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के घर वालों ने कभी निरन्तर दो रोज़ जौ की रोटी (भी) नहीं खायी यहां तक कि आपकी मृत्यु हो गयी ।"

–बुख़ारी, मुस्लिम

एक रिवायत में है : "मदीना आने से लेकर आपकी मृत्यु तक हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के घर वालों ने कभी निरन्तर तीन रोज़ तक गेहूं की रोटी पेट भरकर नहीं खायी ।"

● हज़रत उरुवह हज़रत आइशा (रज़ि॰) से रिवायत करते हैं कि वे कहा करती थीं : अल्लाह की क़सम, ऐ भांजे हम नया चांद देखते, फिर दूसरा चांद, फिर तीसरा चांद । दो महीने में तीन चांद, और अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) के घरों में आग नहीं जलती थी । हज़रत उरुवह कहते हैं कि मैंने कहा : ऐ ख़ाला, फिर आप जीवन-निर्वाह कैसे करती थीं ? उन्होंने कहा : हमारा निर्वाह दो चीज़ों पर होता था–खजूर और पानी । हां यह बात ज़रूर है कि कुछ अनसार अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) के पड़ोसी थे । उनके पास दूध वाली ऊंटनियां थी । वे अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) के पास उनका कुछ दूध भेजते, तो हम पी लेते ।

–बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत नोमान बिन बशीर (रज़ि॰) कहते हैं कि मैंने तुम्हारे नबी (सल्ल॰) को देखा है । आपको रद्दी खजूरें भी इतनी उपलब्ध नहीं होती थीं कि उनसे आप अपना पेट भर सकें ।

–मुस्लिम

● हज़रत अबू मूसा अल-अशअरी (रज़ि॰) कहते हैं कि हज़रत आइशा (रज़ि॰) ने हमें एक चादर और एक मोटा तहबन्द निकालकर दिखाया और कहा : जब अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) की मृत्यु हुई तो यही दो कपड़े आपके शरीर पर थे ।

–बुख़ारी, मुस्लिम

(रियाजुस्सालिहीन' से)

संपादकीय

सार्थक जीवन के लिए कल्याण अपनाइए

ईश्वर ने मनुष्य को सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ प्राणी बनाया है । इतना ही नहीं ईश्वर ने उसे अपना ख़लीफ़ा (प्रतिनिधित्व करने वाला) बनाकर उसकी महत्ता को और बढ़ा दिया । मनुष्य ऐसा प्राणी है, जो सभी प्राणियों पर क़ाबू पाने की शक्ति व क्षमता रखता है । उसका जीवन यहीं पर समाप्त होने वाला नहीं है, बल्कि उसका विस्तार पारलौकिक जीवन तक है जो शाश्वत है, सांसारिक जीवन तो नश्वर है । ईश्वर ने मनुष्य को इरादे व बुद्धि-विवेक की शक्ति एवं नाना प्रकार के संसाधन देकर उस पर छोड़ दिया है कि वह चाहे तो अपने जीवन को सद्‌गुणों की खान बनाकर उसे सफल बना सकता है या भौतिकता में लिप्त कर सकता है जो कुमार्गगमन है और असफलता लाता है । आज यह देखने को आसानी से मिलता है कि मनुष्यों की बहुत बड़ी संख्या अपने जीवन के उद्देश्य व लक्ष्य से भटक गयी है । वह भौतिकवाद की अंधी सुरंग में फंसी नज़र आती है । मनुष्य यह भूल गया है कि ईश्वर ने संसार में उसे क्यों भेजा, किस लिए पैदा किया है और जीवन का लक्ष्य क्या है ? आज उसका जीवन भय, वैमनस्य, घृणा, हिंसा, भ्रष्टाचार जैसे विकारों का शिकार हो रहा है । वह कल्याण छोड़कर अकल्याणकारी चीज़ों की ओर आकृष्ट हो गया है ।

मनुष्य के जीवन में यह विकार और बिगाड़ आने का एकमात्र कारण ईश्वर के मार्गदर्शन, उसके आदेशों-निर्देशों पर न चलना या चलने में ग़फ़लत बरतना है । जो व्यक्ति ईमान लाकर सुकर्म करता है उसके लिए किसी भय व पछतावे की कोई जगह नहीं, वह सफल होता है और उक्त परीक्षा में उसकी सफलता उसके लिए जन्नत का मार्ग खोल देती है । पवित्र क़ुरआन में है : "जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किये उनके लिए सुख-सौभाग्य है और लौटने का अच्छा ठिकाना है" (13:29)। इन्हें संसार में भी हार्दिक संतोष और चैन मिलता है । दिव्य क़ुरआन में है, "ऐसे ही लोग हैं जो ईमान लाए और जिनके दिलों को अल्लाह के स्मरण से आराम और चैन मिलता है । सुन लो, अल्लाह के स्मरण से ही दिलों को संतोष प्राप्त हुआ करता है" (13:28)। अतः मनुष्य को चाहिए कि अपने जीवन को अवगुणों से बचाने के लिए ईश्वर को माने, उसकी इच्छा पर चले और जीवन के उद्देश्य को जानकर उसे प्राप्त करने के लिए अग्रसर हो । इस दिशा में इस्लाम सही व पूर्ण रहनुमाई कर सकता है, जिससे लाभान्वित होना चाहिए ।

अनुकरणीय इस्लामी बैंकिंग

आप द्वारा समाज में एकता, भाईचारा, प्रेम तथा सत्य के प्रति जागरूकता के प्रयास वाक़ई प्रशंसनीय तथा अनुकरणीय हैं ।

मई तथा अप्रैल की 'कान्ति' पढ़ी । पत्रिका मिलते ही छोड़ने की इच्छा नहीं होती । शैली तथा सामग्री दोनों बहुत ही अच्छी तथा मनोरंजक हैं । मई व अप्रैल अंक में हज़रत उम्मे सुलैम के जीवन को पढ़कर सिहरन उठती है, उनकी लगन, क़ुरबानी तथा हिम्मत देखकर ।

नबी मुहम्मद (सल्ल०) के आदेश पहले दो पेज में पढ़कर जीवन बदलता है तथा और जानने की इच्छा होती है । आपसे गुज़ारिश है कि क़ुरआन की शिक्षा, शरीअत तथा हदीसों एवं नबी (सल्ल०) के उपदेशों की तादाद थोड़ी बढ़ा दें, ताकि हम जैसे लोगों को क़ुरआन, शरीअत, हदीस तथा नबी के बारे में अधिक से अधिक जानकारी हासिल हो सके जिससे हमारी ग़लतफ़हमी दूर हो सकें ।

इस्लाम में ब्याज वर्जित क्यों तथा बैंकिंग प्रणाली काफ़ी ज्ञानवर्धक है । अनुकरणीय है । इतिहास का ज्ञान जैसे चंगेज़ ख़ां आदि के बारे में बहुत अच्छा प्रयास है । मैं ख़ुद इतिहास का विद्यार्थी रहा हूं । आम लोग समझते हैं कि औरंगज़ेब कट्टरवादी था जोकि सरासर ग़लत है । उसने काफ़ी मंदिरों तथा समाज सुधार के लिए धन दिया है । जिज़्या भी केवल व्यापारियों पर था न कि आम हिन्दू पर । अगर वह मुस्लिम देश का बादशाह होता तो दुनिया उसे एक आदर्श, दयावान, ईमानदार शासक के रूप में जानती । आशा है आप मेरी प्रार्थना पर ध्यान देंगे ।

कर्नल सतीश वर्मा
लम्बा बाड़ी, जयपुर

कल्याणकारी इस्लामी बैंकिंग

देश में बिगड़ी आर्थिक व्यवस्था को सुधारने में इस्लामिक बैंकिंग प्रणाली को एक विकल्प के रूप में देखा जा रहा है । ब्याजरहित तथा ऋण सुविधाओं की नैतिक बंधनों वाली, वैध-अवैध के अंतर्गत यह व्यवस्था 14 सौ वर्ष पुरानी है । देश में इसकी स्थापना हेतु कांग्रेस, माकपा, सपा, राजद और डी०एम०के० ने अपने समर्थन की घोषणा भी कर चुके हैं । इसके लिए इस्लामिक आर्थिक आचार तथा संस्थाओं को बुनियादी महत्व दिये जाने से उसकी कार्यप्रणाली को सामने लाया जा सकता है । विश्व जगत में उत्तर अमेरिका, यूरोप, दक्षिण-पूर्व एशिया के लगभग 75 देशों में इस्लामी बैंकिंग तथा वित्त प्रणाली प्रचलित है । एक जानकारी के अनुसार ब्रिटेन में इस्लामी फाइनेंस के अन्तर्गत डिप्लोमा तथा डिग्री कोर्स की धूम मची है । लंदन-अन्तर्राष्ट्रीय इस्लामी वित्त व्यवस्था के लिए यूरोप का गेटवे बनने जा रहा है । वर्तमान समय में इस्लामी वित्त का विश्व बाज़ार 15-20 प्रतिशत की दर से बढ़ रहा है तथा आशा जतायी जा रही है कि वर्ष के अंत तक वह 1000 अरब डॉलर का हो जाएगा ।

शरीअत पर आधारित उत्पादों का लाभ उठाने से मात्र

Jamaat-e-Islami Social Service Society (Regd), Gaya

The Society is in service in the field of education, health and Islamic understanding for the last 34 years. Our resources are limited, our task is tremendous. We seek your co-operation in the following activities:-

1. **IQRA PUBLIC SCHOOL :** Besides 800 paying students, about 150 poor or orphan girls & boys are provided free education upto Matriculation with Islamic Carriculam.
2. **MILLAT HOSPITAL :** Every year about 15000 poor & needy patients are provided with free medical treatment & medicine besides other services.
3. **INTEREST-FREE SOCIETY :** Provides short-term loan without interest to needy people.
4. **ISLAMIC INFORMATION CENTRE :** Established at Bodh-Gaya, where lakhs of foreigners visit every year during Nov - March. The Centre provides reading materials on Islam, distributes Islamic literature and invites interested visitors for discussion besides inter-faith dialogue on regular basis.

Kindly send your cheque/draft in favour of the Society

(Q. Hoda) Chairman — *(Prof. M. B. Zaman)* Secretary

JISSS, Millat Campus, Leitch Road, Gaya-823001

ब्रिटेन में ही यह बाज़ार 500 मिलियन पौंड से भी आगे पहुंच चुका है । इस्लामी बैंकिंग में अग्रणी मलेशिया के सेन्ट्रल बैंक के निदेशक डॉ॰ जीती अज़ीज़ ने अप्रैल 2002 में जी-8 देशों की एक कांफ्रेंस में कहा था कि ''इस्लामी वित्त प्रणाली में संरक्षण और संतुलन की व्यवस्था है । इसलिए यह आतंकवादी संगठनों को फंड उपलब्ध कराने में सहायक नहीं हो सकता । अतएव इस्लामिक बैंकों के आरंभ के पूर्व उससे संबंधित पाठ्यक्रमों में इस्लामिक फाइनेंस में M.A., M.Sc., MBA को शासकीय महाविद्यालयों में खोला जाए तथा साथ ही इस्लामी जीवन व्यवस्था को भी बताया जाए ताकि नीयतों में खोट से बचते हुए ईशभय के साथ इस्लामिक बैंकिंग प्रणाली की सफलता को प्राप्त किया जा सके ।

मलिक
नागपुर

हिन्दी भाषा का ताज

'कान्ति' एक आकर्षक, विचारणीय, ज्ञानवर्धक अति उत्तम हिन्दी पत्रिका है । भारतीय...संस्कृति...परंपरा...रूढ़ियों का ज्ञान देती है । जनजाग्रति...चैतन्य...सामाजिक रूढ़ियां इसकी मज़बूत नींव हैं । हम सभी जन-जन को चाहिए कि 'हिन्दी भाषा' को सशक्त बनाने के लिए इसके प्रचार...प्रसार में सहयोग दें । सामाजिक बुराइयां दूर करने हेतु अपने लेख, कविता एवं साहित्य द्वारा अर्थात खाद से पालन-पोषण कर इसे सुदृढ़ बनाएं एवं फलने-फूलने में इसकी मदद करें ।

'कान्ति' हिन्दी भाषा का 'ताज' है...
'कान्ति' पत्रिका पर हमें 'नाज़' है...

संध्या वीरमानी सुभेदार
हैदराबाद

ढोंगियों से बचें

'कान्ति' मासिक का मई 2010 अंक मिला । पढ़ा, अच्छा लगा ।

हफ़ीज़ मेरठी की ग़ज़ल, डॉ॰ लतीफ़ अकबराबादी की कविता 'आज का इन्सान', असलम राशिद का लेख, 'इस्लाम में ब्याज वर्जित क्यों ?' और श्याम नारायण चौहान का लेख 'गीता में एकेश्वरवाद' आदि रचनाएं विशेष रूप से अच्छी लगीं ।

इस्लाम-परिचय
हिन्दी वेबसाइटें
www.islamdharma.org
www.islamicwebdunia.com

आजकल कुछ साधु-महात्मा गाय के वेश में भेड़िये बने हुए हैं, जो मौक़ा पाते ही नन्हे बालकों और महिलाओं को अपनी हवस का शिकार बना लेते हैं । आये दिन ऐसी घटनाओं की चर्चा समाचार पत्रों में होती रहती है । साधुओं के इन कारनामों की जितनी निंदा की जाए कम है ।

बच्चे व महिलाएं इन पाखंडी, ढोंगी, साधुओं के चंगुल में आने से बचें । बच्चे व महिलाएं कभी भी साधु महात्माओं के पास अकेले न जाएं ।

यशपाल जैन आदर्श
जयपुर

मन में समता का भाव

एक समय की बात है कि यूनान देश के राजा ने प्लेटों को सज़ा दी और सज़ा भी, फांसी की । किन्तु उसे समय पर फांसी नहीं दी जा सकी और उसे गुलाम बना दिया गया । गुलाम बनाना भी बहुत बड़ी सज़ा है । जब सच्चाई का पता चला तो प्लेटो को मुक्त कर दिया गया । राजा ने कहा आपको कष्ट दिया–फांसी की सज़ा सुनायी–आप मुझे क्षमा करें । तब प्लेटो ने कहा–आपने मुझे फांसी की सज़ा सुनायी या गुलाम बनाया है यह मुझे पता ही नहीं । फिर क्षमा कैसी । आज मानव मानव का बैरी हो रहा है–ऐसे में हमें गंभीरता से विचार करने की ज़रूरत है, जिससे हम अधीर न हों और हमारे में समता बनी रहे ।

घेवरचन्द गोदीका
जयपुर, राजस्थान

ग़ज़ल

दो-चार क़दम साथ में चलकर तो देखिए ।
सब कुछ मिलेगा घर से निकलकर तो देखिए ।
दुख से निजात आपको मिलकर ही रहेगी ।
मन की निकृष्ट सोच बदलकर तो देखिए ।।
जुरअत नहीं है शत्रु की वो सामने आए ।
फ़न एक बार उसका कुचलकर तो देखिए ।।
जो राह दिखायी है बुज़ुर्गों ने हमारे ।
उस नेक राह पर कभी चलकर तो देखिए ।।
अल्लाह की रहमत सदा बरसेगी आप पर ।
जो हैं गिरे बस उनको उठाकर तो देखिए ।।

डॉ॰ त्रिलोकी सिंह
ग्राम-हिन्दूपुर, पो॰-करछना, इलाहाबाद

निदाए यतीम (Voice of Orphan Boys)

यतीमख़ाना इस्लामिया, गया।

दीनी व असरी उलोम की अपनी तर्ज की मशहूर अकामती (Residential) तालीमगाह

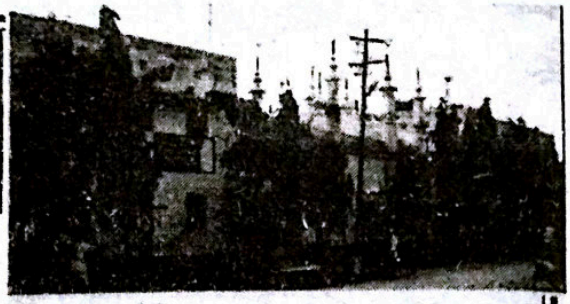

बिरादराने इस्लाम !

अस्सलामु अलैकुम बरहमतुल्लाह व बरकातहु

•आपका यह क़दीम इदारा 92 साल से इल्म की शमा रौशन किय हुए है। आज इसी के तुफ़ैल से इलाक़ा में मुसलमान और हिन्दुओं के स्कूल, पाठशाला, मदरसा और दूर–दूर तक गांव में मकांतिब नज़र आ रहे हैं। आज एक छोटी–सी जगह 'चेरकी' के आसपास बएक–वक्त कई बड़े–बड़े इदारे मिल्लत के फ़ायदे के लिए चल रहे हैं। ग़रज एक चिराग़ से बहुत से चिराग़ रौशन हो गये हैं। • यतीमख़ाना अपने तर्ज़ का वाहिद दीनी व असरी तालीम का संगम होने की बजह कर मशहूर व मुम्ताज है। •अक्टूबर 1917 ई० से ही सही इस्लामी खुतूत पर नयी नस्ल की तालीम व तर्बियत में मसरूफ़ है। • तारीख क़ियाम : अक्टूबर 1917 ई० • कैफ़ियत क़ियाम : जनाब इनायत खान (रह०) ने इदारा की बुनियाद एक उस्ताद और दो (2) यतीम बच्चे से आठ आने (50 पैसे) माहबार किराये की कोठरी में तीस रूपये (Rs. 30/-) की छोटी–सी रक़म से डाली थी। • कफ़ालत : इस वक़्त इदारा में 125 यतीम तोलबा हैं, जिनका सारा ख़र्च इदारा बरदाश्त करता है। • तालीमी साल अप्रैल या मार्च • तालीम : दर्जा अतफाल ता मैट्रिक (Matric) • शोबा–ए–हिफ़्ज : यहां असरी तालीम के साथ हिफ़्ज़ भी कराया जाता है। • तादाद ज़ेरे तालीम तोलबा व तालिबात तक़रीबन 450 • अल्लामा इकाल • अल्लामा शिबली • डा० अबुल खैर • सैयद मोहम्मद नाजिर हुसैन • सैयद मोहम्मद उमर दराज • ख्वाजा गेयासुद्दीन होस्टल • अपना सारा ख़र्च देकर ग़ैर यतीम तोलबा और इदारे के यतीम तोलबा रहते हैं। • तादाद असातज़ा व दीगर मुलाज़मीन 28 • सालना ख़र्च 13 लाख रूपये से ज़ायद • ज़रिया आमदनी : मुस्लिम अवाम के चन्दे।

• याद रखें ! हर साल मैट्रिक (Matric) बोर्ड के इम्तिहान में स्कूल का रिज़ल्ट सौ प्रतिशत (100 %) हुआ करता है। • यहां के तोलबा को मैट्रिक पास करने के बाद कॉलेज के अलावा अरबी यूनीवर्सिटी में आलमियत के साल अव्वल और दोम में आसानी से दाख़िला मिला जाता है। • खुशख़बरी : • फ़ासलाती निज़ामे तालीम (Centre for Distance Education) का अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ (Approved by Aligarh Muslim University, Aligarh) के तहत, यतीमख़ना इस्लामिया, गया (The Gaya Muslim Orphanage) में सी० डी० ई० स्टडी सेन्टर (C.D.E. Study Centre) खुल चुका है। 2009–10 के सेशन में इन्टरमेडिएट दर्जा, ग्यारहवीं (Class XI) और बारहवीं (XII) का फार्म भरा जा रहा है। • कंप्यूटर की भी तालीम शुरू हो चुकी है।

नोट : कुरआरन, अरबी और इस्लामियात की तालीम दर्जा अव्वल ता दर्जा दहुम तक दी जाती है अरबी और अंग्रेज़ी मैट्रिक बोर्ड के इम्तिहान में भी लाज़िमी है।

एक अहम अपील : कफ़ाला स्कीम (Kafala Scheme) के तहत एक यतीम तालिब इल्म पर सालाना ख़र्च (Rs.8,000/-) रूपये का है। आप भी एक यतीम बच्चे का ख़र्चे उठा कर कारे सवाब में शरीक हों। जिस शक्ल में मुम्किन हो तआवुन फ़रमा कर अल्लाह से अज्रे अजीम हासिल करें। मसलन, • ज़कात, • अतियात, • सदकात, • पैदावार की ज़कात, • चर्म कुर्बानी,, • एक यतीम बच्चे का सालाना ख़र्च देकर, • अपने या किसी बुज़ुर्ग के नाम कमरा या हॉल बनवाना वग़ैरह।

नोट : हॉस्टल और स्कूल में यतीम और ग़ैर–यतीम तोलबा का दाख़िला जारी

• नया तालीमी साल माह अप्रैल से शुरू।

इदारा आपसे फ़राख़दिलाना तआवुन की अपील करता है।

चेक व ड्राफ्ट पर केवल यह लिखे : **"THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE"**

M-9955655960 चेक, ड्राफ्ट और मनीऑर्डर भेजने का पता : फोन नं०–0631–2734428

Hon. Secretary. **THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE**

• Cherki Distt. Gaya, 824237 (Bihar) India

• Bank A/C No.: 10581, Union Bank of India (Main Branch, Gaya)

• **CORE BANKING A/C NO. 300402010010581**

(डॉ०) फ़रासत हुसैन Email : gmocde@yahoo.com Website : www.gmogaya.com (डॉ०) मुहम्मद एहतिशाम रसूल

(सदर) (एजाज़ी नाज़िम)

हज़रत मुहम्मद साहब (सल्ल०) : महान अनुकरणीय व्यक्तित्व

❐ विद्या प्रकाश

इतिहास के विभिन्न काल खंडों में दिग्भ्रांत मानव को सन्मार्ग दिखाने, धर्मानुशासित और मर्यादित जीवन-निर्माण के उद्देश्य से विभिन्न देश-समाज में विभिन्न महापुरुषों और धर्म-प्रवर्तकों का अवतरण होता रहा है, जिन्होंने तात्कालिक मानवीय पारिस्थितिक आवश्यकताओं और तक़ाज़ों के अनुरूप सामाजिक विकृतियों, दोषों और बुराइयों को दूर करने के लिए मानव समुदाय का मार्गदर्शन किया ।

इतिहास विकृति एवं अन्य कारणों से कुछ महापुरुषों और धर्म-प्रवर्तकों की सामाजिक और दार्शनिक विचारधाराओं तथा नैतिक स्थापनाओं में बुनियादी अन्तर दिखलायी पड़ता है तथा वे मानव व्यक्तित्व के किसी एक पहलू पर अपेक्षाकृत अधिक बल प्रदान करते हैं । उदाहरणस्वरूप वेदांत दर्शन शुद्ध रूप से अव्यावहारिक घोर आत्मवादी है, जो संसार को माया मृग मरीचिका तथा जागतिक अस्तित्व को स्वप्न सदृश मानकर चलता है । 'माया महा ठगिनी हम जानी' और 'रमैया की दुलहिन ने लूटा बाज़ार' जैसी उक्तियों को उद्धृत कर इस आत्मवादी पंथ के समर्थक इस दुनिया के वजूद को अस्वीकार करते हुए इसे मुसाफ़िरख़ाना, पानी का बुलबुला और सराय मानकर चलते हैं ।

इसके विपरीत चार्वाक दर्शन शुद्ध रूप से भौतिकवादी और स्वच्छंदतावादी है । इसी प्रकार मार्क्सवाद अर्थप्रधान और फ्रायड का मनोविश्लेषणवादी दर्शन काम प्रधान है तथा यह समस्त मानवीय क्रियाकलाप के मूल में काम वासना को मानकर चलता है । बौद्ध धर्म मूलतः पलायनवादी, दुखवादी और निराशासूचक भाव प्रधान है, जबकि मूर्ति पूजा और अवतारवाद अवैज्ञानिक तर्काधार पर अवलंबित है । ज़िन्दगी के एक-एक पहलू और एक-एक टुकड़े की पतवार के सहारे और भरोसे हम न संसार सागर के पार उतर सकते हैं और न जीवन के अस्ली मक़सद को ही हासिल कर सकने में कामयाब हो सकते हैं ।

हज़रत मुहम्मद साहब (सल्ल०) का मानव समुदाय को योगदान इस अर्थ में महत्तम, उल्लेखनीय और सर्वांग सम्पूर्ण है कि जीवन जगत का कोई ऐसा पहलू बाक़ी नहीं बचा है जो आपकी सूक्ष्म अवलस्पर्शिनी दृष्टि से ओझल-अछूता बचा हो । आपकी व्यापक दृष्टि पर आधारित शिक्षाओं की आज के संदर्भ में भी उतनी ही अहमियत और ज़रूरत है जितनी उनके ज़माने में थी । आपकी शिक्षाएं शाश्वत सार्वकालिक मूल्यों पर आधारित, स्वयं सम्पूर्ण तथा वैज्ञानिक हैं जो उन्हें दुनिया के अन्य धर्म प्रवर्तकों, दर्शनशास्त्रियों, तर्कशास्त्रियों, नीतिनियामकों और चिंतकों से उच्च और विशिष्ट स्थान प्रदान करती हैं ।

हज़रत मुहम्मद साहब (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की शिक्षाओं और जीवन-दर्शन में आत्मा, परमात्मा, जीवन, जगत, लोक-परलोक, अमल और उसूल व्यक्ति और समाज के बीच सुन्दर समन्वय और सामंजस्य दृष्टिगत होता है । आप (सल्ल०) ने हमें दुनिया में नियम संयमपूर्वक रहकर जीवन को ईश्वरोन्मुख बनाने का सन्देश दिया और दुनिया को माया नगरी कहकर व्यक्तिगत, पारिवारिक तथा सामाजिक ज़िम्मेदारियों और फ़र्ज़अदायगी से पलायन करने के बजाय किरदार, अख़्लाक़ व तरीक़ा-ए-ज़िन्दगी को ऊंचा उठाने पर ज़ोर दिया । दौरे जाहिलियत में कन्या-हत्या और बुतपरस्ती जैसी बुराइयों के ख़ात्मे के मक़सद से उन्होंने इस्लाम की शक्ल में एक ऐसी तर्ज़े ज़िन्दगी की संगे बुनियाद डाली, जो मुकम्मल, पुख़्ता और साइंसी सोच पर आधारित और जिसमें औरत-मर्द के किरदार को मज़बूत, ऊंचा और वसीह बनाने के लिए रोज़ा, नमाज़, ज़कात, तौहीद और हज की शक्ल में सीढ़ी दर सीढ़ी ख़ूबसूरत, मुस्तकिल और मज़बूत इन्तिज़ाम किया गया है । रोज़ा और नमाज़ से जहां जीवन में आत्म शुचिता और चरित्र बल बढ़ता है, वहीं तौहीद से धार्मिक भटकाव दूर होता है, ज़कात से सामाजिक बराबरी आती है और हज से सामूहिकता एवं व्यापकता-बोध उत्पन्न होता है।

इस प्रकार व्यक्तिगत जीवन से शुरू हमारे किरदार की तामीरो-तरक़्क़ी का सफ़र रफ़्ता-रफ़्ता वैश्विक बोध की दिशा में अग्रसर होता हुआ पाक परवरदिगारे आलम और रब्बुल आलमीन की ओर हमें ले जाता है । ऐसी सुन्दर सर्वांग सम्पूर्ण व्यवस्था विश्व में अंयत्र नहीं दिखलायी पड़ती ।

विश्व के मानव समुदाय को ऐसा सम्पूर्ण जीवन दर्शन प्रदान करने वाले हज़रत मुहम्मद साहब (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का व्यक्तित्व भी विशाल, बहुआयामी तथा विविध पक्षीय था । आप केवल नेता ही नहीं, बल्कि कामयाब व्यापारी, सैनिक, चिंतक, धर्मोपदेशक, तत्वचिंतक, दार्शनिक और तपस्वी के साथ ही सफल गृहस्थ भी थे । आपने दूर-दूर तक व्यापारिक प्रयोजन से यात्राएं भी की और अपनी ईमानदारी की छाप लोगों के दिलो-दिमाग़ पर छोड़ी । नेकी के फैलाव के मक़सद से उन्होंने अनेक लड़ाइयां भी लड़ीं, जिनमें मुस्लिमों की तादाद कम होने और मुख़्तलिफ़ मसायल व मुश्किलों के बावजूद विजयी हुए, क्योंकि उनके तथा उनके धर्मानुयायियों में जज़्बा-ए-दीनदारी, कुव्वते अख़्लाक़, बुलंद किरदार और हौसला-ए-इस्लाम मौजूद था । हज़रत मुहम्मद साहब जैसा कुशल संगठनकर्ता एवं समाज सुधारक विश्व में विरले दिखलायी पड़ते हैं । सबसे बढ़कर वे मोहसिन इन्सानियत (मानवता उपकारक) थे । मानवता को उनका योगदान अविस्मरणीय है ।

आपकी सीख में अर्थशास्त्र, धर्म-आध्यात्म, समाजशास्त्र, लोक-व्यवहार आदि ज्ञान-विज्ञान की विभिन्न शाखाओं-प्रशाखाओं का सुन्दर निचोड़ मौजूद है जो शताब्दियों से दुनिया के विभिन्न देशों के बुद्धिजीवियों को बराबर अपनी तरफ़ आकृष्ट करता रहा है और यही वजह है कि जिस इस्लाम की शुरुआत छोटे से भौगोलिक तथा सामाजिक दायरे से हुई, वह आज देखते ही देखते विशाल वट वृक्ष का रूप ले चुका है और बड़ी तादाद में समय-समय पर ग़ैर-मुस्लिम इस्लाम स्वीकार करते रहे हैं और जो इस्लाम में दीक्षित नहीं हैं, वे भी खुले दिलो-दिमाग़ से इस्लाम और हज़रत मुहम्मद साहब की शिक्षाओं की सराहना करते हैं । आपकी शिक्षा वक़्त की कसौटी पर सही उतरने वाली एक ऐसी साफ़-सुथरी शिक्षा है, जिसको दुनिया के हर क्षेत्र में, हर जुबान में ज़्यादा से ज़्यादा प्रचारित-प्रसारित करना चाहिए ।

AQUIL MUKHTAR
DEVELOPERS PVT. LTD.

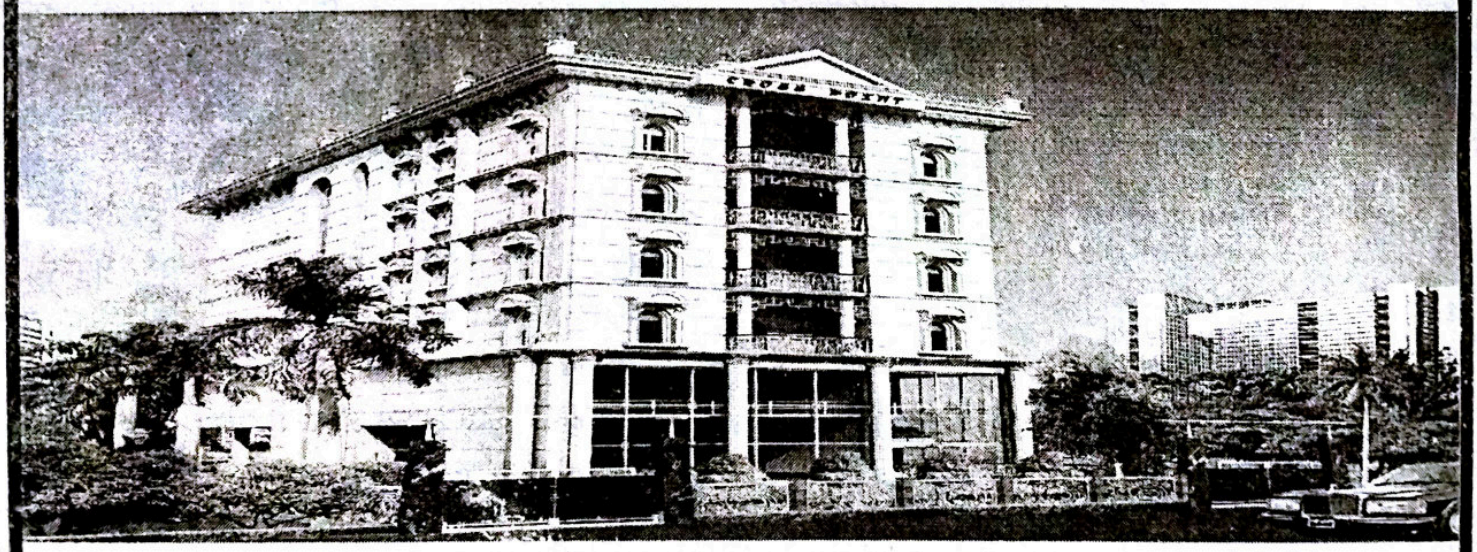

M.D. MR. MUKHTAR AHMED MOBILE NO. : 9820127170

385, Sane Guruji Marg, Next to I.T.I College (Ghass Gali),
Mumbai-400011
Tel. No. : 23482660/23482688/23482762
Fax : 23484245

हज़रत जमीला अंसारिया (रज़ि०)

❖ तालिब हाशमी

हज़रत जमीला अंसारिया (रज़ि०) का ताल्लुक़ ख़ज़रज क़बीला के हारिस ख़ानदान से था । वे उम्मे सअद के नाम से मशहूर थीं । आपके पिता का नाम सअद बिन रबीअ अंसारी (रज़ि०) था । उनका शुमार बहुत ही उच्च कोटि के सहाबियों में होता था । हज़रत सअद (रज़ि०) हिजरत से पहले बड़े ही ज़ौक़ो-शौक़ से बेअते उक़बा (ऊला) और बैअत उक़बा (सानी) में भाग लिया था । सन 2 हिजरी में जंगे बद्र में भी शरीक हुए । जंगे उहद में उन्हें शहादत नसीब हुई ।

अपने अंतिम घड़ी में उन्होंने अंसारियों को यह संदेश दिया था कि : ''यदि आज अल्लाह के रसूल (सल्ल०) शहीद हो गये और तुम में से कोई एक भी जीवित बचा तो अल्लाह को कदापि मुंह न दिखा सकोगे । उसके सामने तुम्हारा कोई बहाना स्वीकार्य न होगा । हमने लैलतुल उक़बा में अल्लाह के रसूल (सल्ल०) पर फ़िदा होने की क़सम खायी थी ।

अपने जलीलुल क़द्र पिता की शहादत के समय हज़रत जमीला (रज़ि०) की आयु बहुत कम थी । हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) ने उनकी देखभाल और प्रशिक्षण की ज़िम्मेदारी अपने ज़िम्मे ले ली । ज्ञात हो कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) की पत्नी हज़रत हबीबा बिन्त ख़ारिजा (रज़ि०) हज़रत सअद बिन रबीअ की चचेरी बहन थीं । इस दृष्टि से वे हज़रत जमीला (रज़ि०) के फूफा होते थे । हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) उन्हें पिता जैसा प्यार देते थे ।

एक दिन हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) लेटे हुए थे और हज़रत जमीला (रज़ि०) को अपने सीने पर बिठाकर बहुत ही मुहब्बत से बार-बार उनको चूम रहे थे । इतने में उनके पास एक सहाबी पहुंचे । उन्होंने यह दृश्य देखा तो हैरान होकर पूछा : ''ऐ अबू बक्र (रज़ि०)! यह बच्ची कौन है ?''

सिद्दीक़ अकबर (रज़ि०) ने कहा : ''यह उस शख़्स की बेटी है जिसको अल्लाह तआला ने बहुत ऊंचा मर्तबा दिया । उसने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) पर अपनी जान कुरबान कर दी और क़ियामत के दिन वह आप (सल्ल०) के नक़ीबों में शुमार किया जाएगा ।

हज़रत जमीला (रज़ि०) ने उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा (रज़ि०) से भी बहुत कुछ सीखा और इल्म व फ़ज़्ल की दृष्टि से बहुत ही ऊंचे मुक़ाम तक पहुंच गयीं । हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) उनकी बहुत इज़्ज़त करते थे । एक बार उनके ख़िलाफ़त के दौर में हज़रत जमीला (रज़ि०) उनके पास पहुंचीं तो उन्होंने अपनी चादर उनके लिए बिछा दी । उस अवसर पर हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि०) भी वहां मौजूद थे । उन्होंने पूछा : ऐ ख़लीफ़ा-ए-रसूल ! यह महिला कौन है ?

हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) ने जवाब दिया, ''यह उस शख़्स की बेटी है, जो हम दोनों से बेहतर था ।''

हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि०) ने हैरान होकर पूछा : ''वह कैसे ?''

सिद्दीक़ अकबर ने जवाब दिया : ''इसलिए कि उसके पिता सअद बिन रबीअ (रज़ि०) ने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के सामने ही जन्नतुल फ़िरदौस की राह ली और हम तुम अभी तक इसी दुनिया में बैठे हैं ।

व्याख्या करने वालों ने हज़रत उम्मे सअद (रज़ि०) के ज्ञान एवं विवेक की बड़ी तारीफ़ की है और लिखा है कि वे केवल हदीस की ही रावी नहीं थीं बल्कि क़ुरआन की व्याख्या करने में भी माहिर थीं ।

हज़रत जमीला अंसारिया (रज़ि०) का निकाह जलीलुल क़द्र सहाबी हज़रत ज़ैद बिन साबित अंसारी (रज़ि०) से हुआ । हज़रत ख़ारिजा बिन ज़ैद (रज़ि०), जो बहुत बड़े फ़क़ीह गुज़रे हैं, हज़रत उम्मे सअद (रज़ि०) के ही बेटे थे ।

तिरमिज़ी में है कि आप (सल्ल०) के एक सहाबी हज़रत दाऊद बिन हसीन (रज़ि०) हज़रत उम्मे सअद (रज़ि०) से ही क़ुरआन पाक का दर्स लिया करते थे । इब्न असीर का बयान है कि हज़रत उम्मे सअद (रज़ि०) क़ुरआन मजीद के कुछ हिस्सों की हाफ़िज़ थीं और बाक़ायदा क़ुरआन मजीद का दर्स दिया करती थीं ।

मदद के लिए अपील

जामिया मिस्बाहुल उलूम चौकोनियां, पूर्वी उत्तर प्रदेश का एक जाना-माना तालीमी इदारा है। यह इदारा सिद्धार्थ नगर ज़िला के ग्रामीण क्षेत्र में है। यहां लगभग सभी राज्यों और पड़ोसी देश नेपाल के छात्र तालीम हासिल कर रहे हैं। यह इदारा आधी सदी से तालीम व तर्बियत के मोर्चे पर मुस्लिम समाज की सेवा कर रहा है। यहां प्राइमरी से लेकर आलिमीयत तक की तालीम का पूरा इंन्तिज़ाम है। यहां दीनी और अस्री उलूम को एक ख़ास इम्तिज़ाज के साथ सिमोया गया है, जिसके कारण जामिया को तालीमी मैदान में एक अलग और प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त है। यहां क़याम और तआम की सारी सहूलतें उपलब्ध हैं। जामिया मिस्बाहुल उलूम की विशेषता तालीम के साथ इस्लामी बुनियादों पर छात्रों की मिसाली तर्बियत करना है।

जामिया के मंसूबे

● मर्कज़ी लाइब्रेरी की तामीर ● जामिया की मस्जिद के अधूरे कामों को पूरा करना ● लड़कियों के लिए अलग दर्सगाह की तामीर ● टेक्निकल सेन्टर का क़याम ● होस्टल की तामीर ● अनाथालय की तामीर ● फैमिली क्वार्टर्स की तामीर

अह्ले ख़ैर हज़रात से दरख़्वास्त है कि जामिया की दिल खोलकर मदद करें और अल्लाह के यहां उसका बदला पाएं।

—: भेजने का पता :—

जामिया मिस्बाहुल उलूम

चौकोनियां भारत भारी, सिद्धार्थनगर-272191

फ़ोन : 09450587737, 09793424547

जामिया का बैंक खाता नं०

A/c No. 30290663653 S.B.I. डुमरियागंज, कोड-1250

शान्ति की स्थापना और पवित्र क़ुरआन

❑ डॉ॰ इसपाक अली

(प्राचार्य, ल॰ब॰श॰ शिक्षा महाविद्यालय, बंगलुरू, कर्नाटक)

शान्ति शिक्षा के उद्‌भव एवं विकास की चेष्टा करने पर ज्ञात होता है कि सभी संस्कृतियों में सभी काल खंडों में यह शिक्षा का अभिन्न अंग रही है । शान्ति प्राप्ति प्रत्येक संस्कृति का महान आदर्श रहा है यद्यपि 20वीं सदी के प्रारंभ में पश्चिमी धर्मनिरपेक्षतावाद के आगमन पर शिक्षा को वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रदान किये जाने पर बल दिया जाने लगा । फलत: विद्यालयी पाठ्यक्रम में शांति सहित नैतिक एवं मानवीय मूल्यों को उपेक्षित किया जाने लगा । तार्किक अनुभवजन्य वैज्ञानिक ज्ञान के लक्ष्य के सम्मुख शिक्षा का स्वरूप संकीर्ण होकर विभिन्न विषयों के शिक्षण तथ्यों को प्रदान करना मात्र रह गया ।

इस भौतिकतावादी दृष्टिकोणों के होते हुए भी रूसो, हेनरी थोरेऊ, टालस्टाय तथा मारिया मान्टेसरी ने शिक्षा की मूल भावना को जीवित रखा । प्रथम एवं द्वितीय विश्व युद्ध की विभीषिकाओं व भयावहता की अनुभूति करते हुए कुछ शिक्षाविदों ने शिक्षा के मानववादी दृष्टिकोण को पुनर्जागृत करने की आवश्यकता को अवश्य ही अनुभव किया । शांति हेतु शिक्षा की आवश्यकता के विषय में मारिया मान्टेसरी के मुखर स्वर व अथक प्रयास प्रशंसनीय हैं । वे कहती हैं, 'वे जो युद्ध चाहते हैं, नयी पीढ़ी को युद्ध के लिए तैयार करते हैं, पर जो शांति चाहते हैं, उन्होंने बालकों व किशोरों की उपेक्षा की है । अत: बे उन्हें शांति के लिए संगठित करने में भी असमर्थ हैं । शिक्षा के प्रति मान्टेसरी की दृष्टि शांति शिक्षा के लिए एक सोद्देश्य ठोस आधार प्रदान करती है ।'

शांति शिक्षा के इतिहास में एक अनुपम उदाहरण बोस्निया हर्ज़ेगोवीना का है । युद्ध की विभिषिका झेल चुके देश के हज़ारों छात्र, शिक्षक व अभिभावक अपने समुदायों व जाति समूहों के मध्य शांति व सद्‌भावना की संस्कृति का निर्माण करने में सक्रिय रूप से जुटे हैं । बोस्निया हर्जेगोवीना के औपचारिक शिक्षा-पाठ्यक्रम में सरकार द्वारा शांति आधारित पाठ्यक्रम शामिल किया गया है । इससे प्रेरित होकर अफ़्रीक़ा व भारतीय उपमहाद्वीप तथा मध्य-पूर्व के देशों में शासकीय व ग़ैरशासकीय एजेंसियों द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय शांति शिक्षा संस्थान स्विटज़रलैंड को सहयोग प्राप्त किया जा रहा है ।

शांति स्थापना करने, शांति की शिक्षा प्रदान करने में धर्म, धार्मिक ग्रंथों का महत्वपूर्ण योगदान है । विमला मेहता कहते हैं कि-''धर्म, सम्प्रदायों में कट्टरता, अंधविश्वास, वैमनस्य और विरोधों को देखकर एक बार यह विचार करना आवश्यक हो जाता है कि धर्मों में विरोध है कितना ? क्या हम कहीं भी समानता के सूत्रों को पकड़कर, तनिक ठहरकर, अपना विवेक जगाकर सोच से काम ले सकते हैं अथवा नहीं । स्थान-स्थान पर अवतारी पुरुषों ने जो ज्ञान दिया या भविष्यवाणियां की, उन सबका स्रोत एक ही है क्या ? उन वचनों के सार को सबके लिए उपयुक्त बनाया जा सकता है या नहीं ?

मौलाना पारीख का कथन है-''इन्सानी फ़ासलों को कम करने के लिए धर्म का उपयोग हम साइंस और टेक्नोलॉजी के इस दौर में अगर सही तरीक़े से करेंगे तो सुख शान्ति और वैभव के साथ हम सब अपनी ज़िन्दगी गुज़ार सकेंगे । धर्म के नाम पर हत्याएं करना, मारकाट करना, यह धर्म का सवाल नहीं है । मज़हब के नाम पर हम लड़ सकते हैं, मर सकते हैं, किसी की हत्या कर सकते हैं, किसी के

पेट में छुरा घोंप सकते हैं लेकिन मज़हब पर हम सच्चाई से अमल नहीं कर सकते । यही हमारी कमज़ोरी है, इस कमज़ोरी को दूर करने में हमारी भलाई है ।

सर्वसुलभ दयालुता और रहमते आलम के परिप्रेक्ष्य में इस्लाम में शांति और बंधुत्व की कल्पना का अध्ययन अत्यंत उपयोगी एवं लाभकर है । कुरआन इस्लाम धर्म का मूल स्रोत है । कुरआन में वर्णित समस्त सिद्धांत, विधि तथा आदेश इस्लाम धर्म के मुलाधार हैं । उनकी व्याख्या एवं संज्ञान में ही इस्लाम धर्म का आध्यात्मिक रहस्य छुपा हुआ है । इससे धार्मिक चिंतन को श्रेष्ठता प्राप्त होती है, क्योंकि कुरआन का आदेश है कि बौद्धिक तर्क-वितर्क द्वारा ईश्वरीय ज्ञान की वास्तविकता की अनुभूति करो और प्रत्यक्ष तर्कों से अपने विश्वास को चमकाओं और सत्यमार्ग पर स्थापित हो जाओ ।

इस्लामी विश्वास है कि कुरआन की प्रामाणिकता के पश्चात किसी अन्य तर्क-वितर्क की आवश्यकता नहीं रह जाती क्योंकि कुरआन अन्तिम तर्क-वितर्क है ।

मुसलमानों का विश्वास है कि कुरआन में स्वयं ईश्वर ने समस्त एवं विदित तर्क-वितर्क संरक्षित कर दिये हैं ।

ईश्वर अन्तर्यामी है, उसके संज्ञान से धरती-आकाश का कोई कण दूर नहीं है, न उससे छोटा-बड़ा ही, वरन सब कुछ उसकी प्रकाशमय पुस्तक में संरक्षित है । (कुरआन)

एक अन्य स्थान पर कुरआन में है–"आकाश-धरती में कोई गुप्त वस्तु ऐसी नहीं है, जिसकी चर्चा प्रकाशमय पुस्तक में न हो ।"

शांति-शिक्षा के सन्दर्भ में कुरआन का यदि अध्ययन करें तो पाएंगे कि इस्लाम जो अरबी भाषा का शब्द है जिसकी धातु 'सिल्म' है । और 'सिल्म' का शाब्दिक अर्थ सुख, शांति और समृद्धि है । इस्लाम धारण करने के बाद स्वयं भी सुख शांति तथा संधि समन्वय से रहो तथा अन्य व्यक्तियों को भी सुख, शांति एवं संधि समन्वय से रहने दो । किसी भी व्यक्ति के सुख-शान्ति तथा संधि व सलामती के जीवन में बाधा न उत्पन्न करो । कुरआन के कुछ उद्धरण देखिये–

"अगर वे संधि और सलामती की ओर आकृष्ट हों तो तुम भी इसके लिए झुक जाओ । (कुरआन, 8:61)

"तुम्हें जब सलामती की कोई दुआ दी जाए, तो तुम सलामती की उससे अच्छी दुआ दो या उसी को लौटा दो ।" (कुरआन, 4:86)

अल्लाह तुम्हें सलामती के घर की ओर आमंत्रित करता है । (कुरआन, 10:25)

"अगर मुशरिकों में कोई तुमसे शरण मांगे, तो उसे तुम शरण दे दो ताकि वह अल्लाह की वाणी सुन ले । उसके बाद उसे उसके सुरक्षित स्थान पर पहुंचा दो ।" (कुरआन, 9:6)

"उन्हें आदेश होगा कि तुम इन बाग़ों में शांति एवं सुरक्षा के साथ प्रवेश कर जाओ ।" (कुरआन, 15:46)

"वे लोग जो खुशहाली और तंगी की प्रत्येक अवस्था में ख़र्च करते हैं और क्रोध को रोकते हैं और लोगों को क्षमा करते हैं और अल्लाह को भी ऐसे लोग प्रिय हैं जो अच्छे से अच्छा कार्य करते हैं ।" (कुरआन, 3:134)

"और जब अज्ञानी उनसे संबोधन करते हैं तो शांति का सन्देश देते हैं ।"' (कुरआन, 25:63)

"और किसी प्राणी का जिसको ईश्वर ने आदरणीय बनाया है, बिना हक़ व न्याय के तक़ाज़े के वध न करो । (कुरआन, 17:33)

शांति-शिक्षा हिंसा के मूल कारणों की व्याख्या करती है, हिंसा के विकल्पों की शिक्षा देती है और हिंसा के विभिन्न प्रकारों की व्याख्या कर उनका निदान करती है । कुरआन के अंतर्गत इन सभी पहलुओं की विस्तृत चर्चा की गयी है । कुरआन विश्व में एक सर्वव्यापी सुधार का सिद्धांत प्रस्तुत करके मानवता के सकारात्मक आधारों और उसके रचनात्मक उद्देश्यों पर बल देता है ।

कुरआन में है–

"धरती में बिगाड़ पैदा न करो, जबकि उसका सुधार हो चुका है, और अल्लाह ही को पुकारो भय और आशा के साथ । निश्चय ही अल्लाह की दयालुता अच्छे चरित्र वाले लोगों के समीप है ।" (कुरआन, 7:56)

इन आयतों में एक विश्वव्यापी संतुलन की ओर संकेत है, जिसकी स्थापना पर ही जीवन की समस्त क्रियाकलापों का अस्तित्व निर्भर है । अत: जो लोग सरकशी और अत्याचार करके इस संतुलन को भंग करते हैं वे भ्रष्ट एवं अपराधी है । इन व्याख्या से यह सत्य बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है कि कुरआन का मौलिक और स्थायी उद्देश्य शांति है ।

वर्तमान परिस्थितियों में मुस्लिम नवजवानों की भूमिका

यान्नी रिडले किसी परिचय की मुहताज नहीं । वे एक जानी-मानी पत्रकार हैं । जब वून रिडले अफ़ग़ानिस्तान युद्ध के कवरेज़ के लिए वहां गयीं तो तालिबान ने उन्हें बन्दी बना लिया । तालिबान की क़ैद में उन्हें मुस्लिम नवजवानों के व्यवहार और चरित्र को प्रत्यक्ष रूप से देखने का अवसर मिला और उससे वे इस हद तक प्रभावित हुईं कि इस्लाम स्वीकार कर लिया और इस्लाम के प्रचार-प्रसार को ही अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया । क़ाहिरा में वामी (WAMY) के तत्वावधान में एक अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित समारोह में यान्नी रिडले ने अपने जीवन पर आधारित जो भाषण किया, उसके कुछ अंशों को यहां प्रस्तुत किया जा रहा है । –संपादक

❖ यान्नी रिडले

मैंने सन् 2003 ई॰ में इस्लाम क़ुबूल किया । इसलिए मैं इस्लाम के बारे में कोई अधिक प्रमाणिक जानकारी नहीं रखती, फिर भी मेरा यह प्रयास रहता है कि आज के बेचैन नवयुवकों के साथ विचारों का आदान-प्रदान करके वह सब कुछ जाना जा सके जो वे इस्लाम के बारे में कहना चाहते हैं ।

9/11 के कारण दुनिया पर बहुत गहरे और व्यापक प्रभाव पड़े हैं, लेकिन यह किसी नये दौर की शुरुआत नहीं है । बल्कि यह अमेरिकी साम्राज्यवाद की एक लंबी अवधि से चली आ रही साज़िशों और इस्लाम के प्रति उसके भय का प्रदर्शन है । आज से एक दशक पहले बोस्निया में सर्बो द्वारा मुसलमानों का नरसंहार हो रहा था और पूरी दुनिया तमाशा देख रही थी । उस समय अस्तित्व के लिए लड़ने वाले अपने भाइयों और बहनों की सहायता के लिए मुस्लिम नवयुवकों की एक बड़ी संख्या दुनिया के कोने-कोने से उमड़ आयी थी ।

दुनिया भर के मुसलमानों को नस्ल, जाति और संस्कृति से ऊपर उठकर एक जगह इकट्ठा होने और एकजुट होने का अवसर मिल गया । उन्होंने आर्थिक सहायता के साथ-साथ लोगों की अन्तरात्मा को जाग्रत करने के उद्देश्य से रैलियां और जुलूस निकाले ताकि उस नरसंहार को रोका जा सके । पश्चिमी देशों ने केवल उस समय हस्तक्षेप किया जब उनको यह विश्वास हो गया कि सर्बों की तुलना में मुसलमानों का पल्ला भारी है और वे एक निश्चित विजय की ओर बढ़ रहे हैं । पश्चिम के लिए अपने बीचों-बीच एक इस्लामी स्टेट की स्थापना बिल्कुल असह्य था । इसलिए उनको अंततः हस्तक्षेप करना पड़ा । यह बात मैं नहीं कह रही हूं बल्कि इसे तो स्वयं अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति बिल क्लिंटन ने अपनी ऑटोबायोग्राफ़ी में स्वीकार किया है ।

इस्लाम के वर्चस्व का यह भय इतना बढ़ चुका है कि आज चेचन्या, फ़िलिस्तीन, अफ़ग़ानिस्तान और इराक़ में हमारे भाइयों और बहनों के ख़ून का दरिया बह रहा है ।

लेबनान में जो कुछ हुआ है यह उसके ताज़ा उदाहरण हैं । मुझे इन स्थानों पर कई बार जाने का अवसर मिला है । मैंने देखा कि हमारी बहनों, बेटियों, बच्चों और नवजवानों की लाशों के लोथड़े भी बिल्कुल उन लाशों की तरह दिखायी दे रहे थे, जो वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर के मलबे से निकाले गये थे । फिर भी आज दुनिया देख रही है कि मुसलमानों के ख़ून का कोई मूल्य नहीं है, कोई महत्व नहीं है । ग्वांतानामो बे, बग्राम, अबू ग़रैब और डिएगोगार्शिया सहित दुनिया भर के दूर-दराज़ स्थलों पर स्थित गुप्त क़ैदख़ानों में हज़ारों बेगुनाह मुसलमानों को न समाप्त होने वाली प्रताड़ना से गुज़ारा जा रहा है । इसके साथ-साथ सीरिया, उर्दुन, मराकश, म्यूनिश, अलजीरिया और स्वयं अपने देश मिस्र में अमेरिका के इशारे पर बहुत सारे मुसलमानों को बहुत बुरी तरह प्रताड़ित किया जा रहा है ।

प्रश्न यह है कि इस में हमारे नवयुवकों के लिए क्या संदेश छिपा हुआ है ?

ये नवयुवक सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी, ख़ालिद बिन वलीद, तारिक़ बिन ज़ियाद की हिम्मत और साहस की दास्तान पढ़ने के साथ-साथ हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की बहादुरी, साहस और हौसलामंदी के बारे में भी सुनते रहते हैं । आज से पांच वर्ष पहले तक मैंने नबी (सल्ल०) की जीवनी के बारे में कुछ नहीं सुना था, लेकिन आज मैं आप (सल्ल०) के नाम, उनकी इज़्ज़तो-नामूस की रक्षा और सुन्नत की पैरवी के लिए अपने ख़ून की अंतिम बूंद तक बहाने को तैयार हूं । यद्यपि आप (सल्ल०) हमारे बीच मौजूद नहीं हैं, लेकिन डेनमार्क के समाचार-पत्र में प्रकाशित होने वाले तौहीन-आमेज़ कार्टूनों के प्रकाशन पर उम्मत की एकता और प्रतिक्रिया ने यह सिद्ध कर दिया है कि आप (सल्ल०) कितने शक्तिशाली हैं ।

60 के दशक में शहादत का मर्तबा पाने वाली दो महान शख़्सियत मेलकम एक्स (19 मई 1925 ई०-21 फ़रवरी 1965 ई०) और सैयद क़ुतुब शहीद (रह०) इस आधुनिक दौर के हीरो हैं । मेलकम एक्स नबरास्का (अमेरिका) के एक ईसाई धार्मिक नेता के घर में पैदा हुए । जवानी में ही इस्लाम स्वीकार कर लिया और मलिक शहबाज़ के नाम से मशहूर हुए । अमेरिका में मुसलमानों की मशहूर संस्था नेशन ऑफ़ इस्लाम के चोटी के नेताओं में शुमार होते थे । एक साज़िश के ज़रिया उन्हें शहीद कर दिया गया ।

इन दोनों की रचनाओं ने मुझे मुसलमान होने का मतलब बताया । ऐसी परिस्थितियों में जबकि नवजवानों को एक स्पष्ट सन्देश और सही दिशा के चयन में कठिनाई आ रही है दोनों का जीवन उनके लिए एक नमूना है ।

आज यदि नवजवानों को एक ओर यह बताया जाता है कि अल्लाह के अलावा किसी से भयभीत होने की आवश्यकता नहीं तो दूसरी ओर उनको यह सबक़ सिखाया जाता है कि इस्लाम को पीठ पर और सिर को नीचे रखो । 9/11 के बाद तो इस्लाम को एक ऐसे ढांचे में ढालने की बहुत कोशिश हो रही है जो पश्चिमी समाज की मांगों पर पूरा उतर सके । उसके पीछे मूल रूप से यह सोच काम करती है कि इस्लाम को एक ऐसे अधर्मी सामाजिक व्यवस्था के रूप में परिचित करवाया जाए जो अल्लाह के स्थान पर अपने मुक़ाबले में आ रही शक्तियों के सामने सिर झुकाने में गर्व करे और वर्तमान सांसारिक व्यवस्था को ख़तरे में डाले बिना अमन और शान्ति के साथ अपने अस्तित्व को बचाये रखने की कोशिश करता रहे ।

एक ऐसा इस्लाम जिसका जिहाद, शरीअत और ख़िलाफ़त से जिसे अल्लाह तआला ने ज़मीन पर क़ायम करने का आदेश दिया है, कोई वास्ता न हो । आज इस सोच और विचार के चमत्कार जगह-जगह देखने को मिल रहे हैं । आज यदि एक ओर तुर्की, फ्रांस और अलजीरिया में मेरी बहनों के सिरों से हिजाब नोचा जा रहा है तो हॉलैंड और जर्मनी में उसकी शुरुआत होने वाली है ।

आज ब्रिटेन में पूर्व विदेश सचिव जैक स्ट्रा परदे के बारे में सन्देह पैदा करने की कोशिश कर रहे हैं । मैं एक औरत होने के नाते, किसी गोरे और अधेड़ आयु के पुरुष (जैक स्ट्रॉ) को यह अधिकार नहीं दे सकती कि वह मुझे बताता फिरे की मैं क्या पहनूं और क्या न पहनूं । मैं उन्हें बताना चाहती हूं कि वह मेरे कपड़ों की अलमारी से तो क्या, धरती पर जन्म लेने वाली हर बेटी के कपड़ों की अलमारी से दूर रहें ।

आज प्रात: मैंने क़ाहिरा के एक समाचार पत्र में पढ़ा कि संस्कृति मंत्री फ़ारूक़ हसनी ने निक़ाब को पिछड़ेपन की निशानी क़रार दिया है । उन्होंने ऐसा कहने का दुस्साहस कैसे किया ? मिस्र के नवजवान चुपचाप तमाशा देखने के बजाय उनकी जुबान को लगाम क्यों नहीं देते ? यह तो हर उस महिला की तौहीन है जिसने अपने शरीर को ढांक कर

रखने को पसन्द किया है । फ़ारूक़ हसनी इस्लाम के लिए निदामत का कारण बने हुए हैं । वे दुनिया भर में फैले हुए हमारे नवजवानों को क्या संदेश देना चाहते हैं ? निक़ाब, बुर्क़ा और हिजाब तो वह अलामतें हैं जो आज नशा, भांग और खुली जिंसपरस्ती जैसी नकारात्मक मान्यताओं पर आधारित पश्चिमी जीवनशैली को रद्द करने का संदेश दे रहे हैं । इसमें पश्चिम के लिए यह संदेश है कि हमें आपकी भांति जीवन व्यतीत करने का कोई शौक़ नहीं ।

मुझे उन अरब नवजवानों पर हंसी आती है जो पश्चिम से भी अधिक पश्चिमपरस्त बनने की कोशिश करते हैं । क्या उन्हें पता है कि वे इन हरकतों से दुनिया की नज़रों से किस क़द्र गिर रहे हैं ।

ऐसे मंत्री को तुरंत बर्ख़ास्त किया जाए जिसने हर उस बहन की तौहीन की है जो अपने शरीर को ढांकने का फ़ैसला कर चुकी हैं । वह उदारता जैसे निरर्थक शब्दों की आड़ में अपना चेहरा छुपाना चाहते हैं । लेकिन मैं यह नहीं समझ पा रही हूं कि वे इस दुनिया को क्या संदेश देना चाहते हैं । वे मुस्लिम नवजवानों को उदार बनने का सुझाव दे रहे हैं क्या इसका अर्थ यह नहीं निकलता कि इस्लाम में कोई ख़राबी है, जिसको छुपाने या समाधान ढूंढ़ने की ज़रूरत है ?

मैं पिछली बार जब क़ाहिरा आयी तो मुझे जामिया अज़हर के शेख़ तनतावी ने केवल इसलिए उग्रवादी कहा कि मैंने उनसे हाथ नहीं मिलाया । उग्रवादी और उदारवादी कौन है ? मुझे इस संबंध में कुछ अधिक जानकारी नहीं । मैं तो बस एक सीधी-साधी मुस्लिम महिला हूं । मैं किसी फ़क़ीह या किसी समुदाय विशेष की पैरवी नहीं करती । मैं तो अपने नबी हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) की पैरवी करती हूं । क्या ऐसा करके मैं उग्रवादी बन गयी हूं ।

मैं कहती हूं कि मुसलमान होने की मिसाल ऐसी है जैसे कि कोई महिला गर्भ धारण कर ले । अब यदि किसी को गर्भ है तो वह है और यदि नहीं है तो बिल्कुल भी नहीं है । किसी ने आज तक यह भी सुना है कि किसी को उदारवादी और किसी को उग्रवादी गर्भ है ?

इस्लाम गत 1400 वर्षों से हमलों की चपेट में है और अब हमें यह बात समझ लेनी चाहिए कि अल्लाह के सिवा किसी और से आशा नहीं करनी चाहिए । लेकिन अब भी ऐसे लोग मौजूद हैं जो जिस हाथ से थप्पड़ खाते हैं उसी को

SCHOOL WITH A VISION

Admission is going on

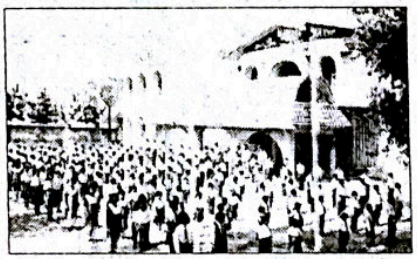

Hostel Facility Available

Setting New Standards in Education (Nursery to VIII)

HIGHLIGHTS

- An enterprise of a group whose impact on education nationally felt
- Support of academician of national level
- Application of joyful learning
- Committed and competent teachers

FACILITIES

- CBSE curriculum
- Own spacious building suitably furnished
- Computer lab with multimedia and internet access
- Library
- Learning toys, games and sports facilities
- Regular Health Checkup
- Counselling tailor made for each students

For more details contact
MAULANA AZAD PUBLIC SCHOOL
Hehal, Chaingada, Ramgarh Cantt. Ph.: 06553-254140, E-mail: maps_he@rediffmail.com
Camp Office : Baragain More, Booty Road, Ranchi, Ph.: 9334142804

चूमते भी हैं । अब वह ज़माना बीत गया जब केवल किसी की लंबी दाढ़ी और इस्लामी पोशाक को देखकर लोग उनसे आशाएं बांधने लगें । ऐसे मुसलमान नेता भी हैं जो मुसलमानों का नेतृत्व करने और उनके हितों की रक्षा का दावा करते हैं लेकिन उनके दिल में वैसी कोई चिंता नहीं होती ।

9/11, बाली, मेड्रिड और लंदन में होने वाले बम धमाकों के बाद हमारे नवजवान परिस्थिति को पूरी तरह समझने की कोशिश ज़रूर करेंगे । ऐसे लोग भी हैं जिन्होंने वर्षों तक लोगों को न्याय के लिए उठ खड़े होने और दुनिया भर में फैले हुए मुजाहिदीन के विभिन्न गिरोहों को सहायता करने के लिए प्रेरित किया । अब उनमें से कुछ तो इस हद तक चुप्पी साधे हुए हैं कि वह हर दृष्टि से शर्मनाक है और कुछ लोग तो खुल्लम-खुल्ला जिहाद की निंदा करने के साथ-साथ मुजाहिदीन को आतंकवाद और उग्रवादी क़रार देते हुए दावा करते हैं कि ये लोग इस्लाम को ग़लत दिशा में ले जा रहे हैं ।

हम सब पर किसी न किसी हद तक यह ज़िम्मेदारी आती है । आज संभवत: अन्तरात्मा की मलामत का बोझ इस हद तक बढ़ गया है कि हमारी ज़बानों पर ताला लग गया है । अब फ़िलिस्तीन और मुसलमानों के अन्य अधिकृत क्षेत्रों में होने वाले आत्मघाती हमलों की निंदा भी उसी तरह हो रही है जैसे 9/11, बाली और लंदन में होने वाली आतंकवादी घटनाओं कि की जाती है । हमें अपने नवजवानों को यह बताना चाहिए कि फ़िलिस्तीन, कश्मीर, चेचन्या, इराक़ और अफ़ग़ानिस्तान में जो कुछ हो रहा है वह तो ज़ुल्म पर आधारित विदेशी क़ब्ज़े के विरोध में हो रहा है जो कि जायज़ है, जबकि 9/11 या लंदन में घटित होने वाली घटनाएं खुला हुआ आतंकवादी हमला है । इन दोनों को एक दृष्टि से देखने की यह सोच अस्ल में उन बहनों और भाइयों से ग़द्दारी के समान है जिनके पास लड़कर विरोध जतलाने और मौत को गले लगा लेने के अलावा कोई तीसरा रास्ता नहीं है ।

आज पश्चिम के ये ज़रख़रीद ग़ुलाम इस्लामी जमाअतों और मुस्लिम हुकूमतों की शरीअत के हवाले से आलोचना करते हैं । स्वयं नवजवानों और छात्रों की संस्थाएं जिन्होंने लगातार इराक़ और फ़िलिस्तीन के लिए मुहिम चलाती रही हैं, उनकी ज़बानें केवल इसलिए ख़ामोश हैं कि उन्हें उदार समझा जाए । ब्रिटेन में तो आजकल उन लोगों की भरमार है जिनको मैं ''ताली बजाने वाला'' कहती हूं । ब्रिटिश सरकार उन लोगों को ''मन पसन्द इस्लाम'' के प्रचार-प्रसार के लिए कनाडा, अमेरिका, यमन और मोरितानिया से बुलाती है । ये लोग हमारे नवजवानों के ज़ेहन को गंदा कर रहे हैं । इससे पहले कि वे सारी दुनिया में फैल जाएं हमें उनके लिए कोई उपाय करना चाहिए ।

उन लोगों को वहाबी विचारधारा से सबसे ज़्यादा चिढ़ है और बहुत ही अनुचित ढंग से उनकी आलोचना करते हैं । कुछ तो हम्द च-नअत को ग़लत रूप में पेश करते हैं और उसमें पश्चिमी संगीत की लय मिलाते नज़र आते हैं । मुझे इन सबसे बहुत परेशानी महसूस होती है ।

इन सारी कोशिशों का सार यह है कि अल्लाह के ख़ालिस दीन में मिलावट करके एक ऐसा दीन सामने लाया जाए जो बुनियादी तौर पर कमज़ोर हो और मुसलमानों के साथ होने वाली ज़ुल्म व ज़्यादती पर समझौता करने वाला हो । एक ऐसा इस्लाम जिसके मानने वाले रात भर पश्चिमी संगीत की धुन में गाये जाने वाली नअतों पर झूमते रहें । स्वयं पश्चिम में रहकर पूरा ध्यान अपनी व्यक्तिगत ज़िन्दगी पर केन्द्रित रखें और ज़ुल्म व अत्याचार का विरोध करने वाले अपने भाइयों और बहनों पर आलोचना के तीर बरसाते रहें । अब तो उनके लिए दुआ करना भी एक अपराध बन चुका है । हमें कुछ दिनों से यह बताया जा रहा है कि मुजाहिदीन के लिए दुआ न की जाए ।

सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी से किसी ने एक दिन पूछा कि आप मुस्कराते क्यों नहीं ? उन्होंने उत्तर दिया कि, ''मैं कैसे मुस्करा सकता हूं, जबकि बैतुल मक़्दिस सलीबियों के क़ब्ज़े में है ।''

मैं सोचती हूं कि यदि आज वे जीवित होते तो हमें देखकर क्या कहते ? वे हमारे नवजवानों को क्या सुझाव देते ? आज अरब शासकों की बेशर्मी का तो यह हाल है कि वे अमेरिका के सामने बैले डांस नाच रहे हैं और इराक़ को एक तर निवाले की तरह प्लेट में रखकर उनकी सेवा में पेश कर रहे हैं । एक लंबी अवधि से फ़िलिस्तीन की इज़्ज़त लूटी जा रही है और अरब शासक नज़रें चुरा रहे हैं । अब तो अरब जगत की एक और बेटी लेबनान–

ये अरब शासक कहां थे जब उसकी इज़्ज़त तार-तार की जा रही थी । सारी दुनिया तो क्या, स्वयं हमारे बच्चे और हमारे नवजवान, जिनसे हम सब का भविष्य जुड़ा हुआ है,

यह देख रहे हैं कि अब दोबारा जंग के नक़्क़ारे बजाए जा रहे हैं ।

हमें नबी करीम (सल्ल॰) और सहाबा किराम (रज़ि॰) की पाक जीवनियों की रोशनी में अपने बच्चों का प्रशिक्षण करना चाहिए । वे उनके नमूने पर चलें और उनसे सीख लें । जब तक इस उम्मत में ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि॰), सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी (रह॰), सैयद कुतुब और मेलकम एक्स जैसे लोग पैदा होते रहेंगे उम्मीद का दामन हाथ से नहीं छूटेगा ।

यह इस्लाम का स्वभाव है कि उन पर जितना अत्याचार होगा, उतनी ही अधिक जाग्रति आएगी । हमारे नवजवानों को चाहिए कि उसी इस्लाम पर चलने का यत्न करें ।

फ़ारूक़ हसनी सरीखे लोग तो अस्ल में नपुंसक हैं । उन्होंने केवल पश्चिमवासियों से अधिक पश्चिमियत दिखाने के उद्देश्य से बड़े ही बेढ़ंगे अंदाज़ में नपुंसकों वाली बात की है । फ़ारूक़ हसनी जैसे लोगों को इतिहास के पन्नों में एक वाक्य से अधिक महत्व नहीं दिया जाएगा । मगर हमारी बहनों और भाइयों का संघर्ष, संयम और ऐतिहासिक साहस की दास्तान के कई अध्याय लिखे जाएंगे ।

आज उन मुस्लिम नवजवानों की संख्या में तेज़ी से बढ़ोतरी हो रही है जिनको यह एहसास हो चुका है कि वे अपने आपको पश्चिमी समाज में विलय करने के लिए अपने दीन से चाहे जितना भी समझौता कर लें, जब भी परिस्थितियां प्रतिकूल होंगी तो सबसे पहले सन्देह की दृष्टि उन्हीं पर पड़ेगी । ये लोग हम मुसलमानों को शरीअत, ख़िलाफ़त और जिहाद को भूल जाने के लिए जिस हद तक कहेंगे, उन मूल्यों को बचाने के लिए ख़ून देने की भावना उसी हद तक बढ़ेगी ।

आज फ़िलिस्तीन, इराक़, अफ़ग़ानिस्तान, कश्मीर और चेचन्या जो जिहाद हम कर रहे हैं, वह अन्याय और अत्याचार के ख़िलाफ़ एक जायज़ युद्ध है ।

याद रखिये ! जिहादियों की जीवनशैली से पश्चिम या पश्चिम की जीवनशैली को कोई ख़तरा नहीं है । उनका संघर्ष जायज़ और अन्तर्राष्ट्रीय क़ानूनों के तहत है । आज हमारे नवजवानों को यदि धार्मिक कट्टरपंथियों से कोई ख़तरा लाहक़ है तो वह अस्ल में वाइट हाउस और डाउनिंग स्ट्रीट के धार्मिक ईसाई कट्टरपंथियों से है जो हमारे नवजवानों को कट्टरवाद की ओर ले जा रहे हैं । क्योंकि बुश और ब्लेयर दोनों ही अल-क़ायदा जैसे आन्दोलनों के लिए भर्ती का कर्तव्य बहुत अच्छे ढंग से निभा रहे हैं ।

आज बहुत से नवजवान केवल उस सच्चाई को पाने की वजह से बेदार हो रहे हैं । आतंकवाद के ख़िलाफ़ जारी इस युद्ध में अस्ल लक्ष्य आतंकवाद नहीं, इस्लाम है । आज उम्मत का यह पहला कर्तव्य है कि वे अपने नवजवानों की जाग्रति और उन्हें लक्ष्य तक पहुंचाने के लिए उस भाव और अख़्लास से काम करे जिस तरह आप (सल्ल॰) ने करोड़ों लोगों को प्रभावित किया और उनका मार्गदर्शन किया । आज भी आपकी पाक ज़ात की पवित्र शिक्षाओं से बहुत सारे लोग अपनी मंज़िल को पा रहे हैं ।

आज के नवजवानों को सबसे महत्वपूर्ण बात यह समझानी चाहिए कि अल्लाह के अलावा किसी से भी भयभीत होने की ज़रूरत नहीं ।

एहतिशाम ख़ान मोबाइल : 09425842976

पब्लिक ट्रैवेल्स

सिवनी से मंडला	प्रातः 7:20
सिवनी से छिंदवाड़ा	प्रातः 7:55
छिंदवाड़ा से बालाघाट	प्रात:10:30
मंडला से सिवनी	दिन 12:50
बालाघाट से सिवनी	सायं 6:00
सिवनी से नैनपुर	सायं 5:40
नैनपुर से सिवनी	दिन 12:20

प्रतिदिन

नोट : शादी व पार्टियों के लिए 33, 40 एवं 50 सीटर बस उपलब्ध है संपर्क करें-

एहतिशाम ख़ान, बस स्टैंड, सिवनी (मध्य प्रदेश)

'पाक व बरतर है
वह ख़ुदा, जिसने उसको हमारे
बस में कर दिया, हम उसको क़ाबू में करने
वाले न थे। यक़ीनन हम अपने परवरदिगार की ओर
लौट जाने वाले हैं। ऐ अल्लाह! हम तुझसे अपने सफ़र
में नेकी और तक़्वा की तौफ़ीक़ चाहते हैं और ऐसे
कामों की तौफ़ीक़, जो तेरी ख़ुशनूदी के हों। ऐ ख़ुदा!
हम पर यह सफ़र आसान फ़रमा दे और उसकी दूरी हमारे लिए
कम कर दे। ऐ ख़ुदा! तू ही इस सफ़र में साथी है और तू ही
घर वालों पर ख़लीफ़ा और निगरां है। ऐ ख़ुदा! मैं तेरी पनाह
चाहता हूं सफ़र की मशक़्क़तों से, नागवार दृश्यों से और
अपने माल से, अपने से मुताल्लिक़ लोगों और अपनी
औलाद में बुरी वापसी से और अच्छाई के बाद
बुराई से और मज़लूम की
बद-दुआ से।'
(हदीस)

A WELL WISHER JAMSHEDPUR

साहित्य के असाहित्यिक तत्व

■ मुद्राराक्षस

एक अकादमी दिल्ली सरकार की भी है । दिलचस्प है कि इस तरह की अकादमियां चर्चा में तब आती हैं जब वे इनाम बांटती हैं । इन्हीं अकादमियों को चलाने वाले महापुरुष यह तय करते हैं कि साहित्य में शलाका पुरुष कौन है और कौन नहीं । यह और भी ज़्यादा दिलचस्प है कि ज़्यादा शलाका पुरुष वे होते हैं जो अपने शुरुआती दौर में कुछ अच्छा लिख चुके होते हैं । पर शलाका पुरुष तब घोषित किये जाते हैं जब वे अपने जीवन का सबसे ख़राब या अप्रासंगिक लिख रहे होते हैं ।

केन्द्रीय साहित्य अकादमी के पुरस्कारों में तो ऐसे पुरस्कारों की संख्या बहुत बड़ी है । निराला तो इस लायक़ हुए ही नहीं कि अकादमी उन्हें पुरस्कृत करती पर यशपाल को पुरस्कार तब मिला जब वे मृत्युशैया पर थे और अंतिम बरसों में उन्होंने अपने जीवन का सबसे ख़राब लेखन किया था । जैनेन्द्र कुमार की सबसे अपठनीय किताब साहित्य अकादमी की विद्वत्परिषद को सर्वोत्तम कृति लगी थी । अज्ञेय को जब दिल का दौरा पड़ा तब अकादमी परिसर और उसके बाहरी नियामकों के बीच उनकी चर्चा हुई यानी उनकी पुरस्कार संबंधी पात्रता दिल के दौरे के कारण संभव हो गयी थी ।

लेखन से ज़्यादा महत्वपूर्ण जहां किसी लेखक का दिल का दौरा हो जाता है वहीं कभी इस बात का अध्ययन होना चाहिए कि अकादमी के लिए कौन-कौन से साहित्येत्तर तत्व पुरस्कार के लायक़ होते हैं । यदि कुछ ख़ास पद हैं तो कौन से पद ? पुरस्कारों की दुनिया में कुछ विचित्र और अशोभनीय घटनाएं भी हो जाती रही हैं जैसे एक वरिष्ठ कथाकार को दिल्ली सरकार की साहित्य संबंधी संस्था ने अपना संभवतः सबसे बड़ा पुरस्कार दिया और बेहद अशोभनीय तरीक़े से रोक भी लिया । इसकी आलोचना करते हुए एक वरिष्ठ कवि ने उसी संस्था का पुरस्कार वापस कर दिया । मालूम हो कि पुरस्कार वरिष्ठ कथाकार से वापस इसलिए लिया गया कि किसी सरकारी अफ़सर या नेता को उनके लेखन पर एतिराज़ था । साहित्य के लिए निश्चय ही यह एक बेहूदा घटना है । किसी अफ़सर या नेता को साहित्य पर टिप्पणी करने का अधिकार नहीं होता लेकिन इसको आप क्या कहेंगे कि एक बड़े कहे जाने वाले आलोचक एक राजा साहब के घर जाकर उनकी किताब का लोकार्पण बड़े ठसके से कर आये थे । अधिकारी कवि या अधिकारी कथाकार की किताब का यही आलोचक लोकार्पण ही नहीं करते, उसे देखते ही देखते आज का प्रेमचन्द भी बना देते हैं । ऐसे में सरकारी नेता को वरिष्ठ कथाकार पर टिप्पणी करने से कैसे रोका जा सकता है ?

कुछ अरसा पहले एक अच्छी अनियतकालीन पत्रिका ने

मारूफ़
शू पैलेस
जी०ई० रोड, बस स्टैंड, बी०एम०वाई०
चरौदा, दुर्ग (छत्तीसगढ़)
फ़ोन : 0788-6534786

मक़सूद भाई मोबाइल : 9406090786
एस०के० इंटरप्राइजेज
होल सेल शू मर्चेन्ट
अलंकार कम्पलेक्स के निकट
कैम्प-2, भिलाई, (छत्तीसगढ़)
फ़ोन : 0788 6535786

अपने सपादकीय में अकादमी के साहित्य पुरस्कारों को लेकर विस्तृत विवेचना की थी लेकिन ऐसी विवेचनाओं की सार्थकता क्या हो सकती थी जबकि साहित्य की ज़रूरत में ऐसे लोग अब ज़्यादा प्रभावी हैं जो यह फ़ैसला तो कम करते हैं कि पुरस्कार किसे दिये जाएं, ज़्यादा सतर्कता और उद्यम इस बात को साबित करने में लगाते हैं कि पुरस्कार किसे न दिये जाएं । उनका काफ़ी वक़्त इस बात में भी बर्बाद होता है कि किसकी किताब सरकारी ख़रीद में शामिल न हो या फिर उनके प्रभाव वाला प्रकाशक किस-किस की किताब न छापे । विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में पुस्तक शामिल कराना एक तरह का काला धंधा बन चुका है । इस धंधे ने लगभग अवैध कमायी के एक रैकेट का ही रूप ले लिया है । कुछ अरसा पहले राममोहन राय लायब्रेरी के लिए पुस्तकों की ख़रीद के धंधे की कड़ी आलोचना हुई थी ।

वैसे साहित्य की दुनिया बड़ी विचित्र होती जा रही है । अक्सर इस तरह की धंधेबाज़ी का ही यह परिणाम देखा जा सकता है कि साहित्य की दुनिया में रहकर कोई लेखक लाखों रुपये का इनाम सहज रूप से वापस लौटा सकता है । ज़ाहिर है ऐसे लेखक अपने धंधों के दौर में लाखों नहीं, उससे बहुत ज़्यादा बड़ी रक़म के मालिक बन चुके होंगे । इस साहित्यिक धंधेबाज़ी का एक और बेहद दुर्भाग्यपूर्ण पक्ष भी देखा जाना चाहिए । जो लेखक कहीं अफ़सर या प्राध्यापक नहीं और सिफ़ारिश करने या लाभों के लेन-देन से बाहर रहकर स्वतंत्र लेखन करता है वह धंधेबाज़ों की दुनिया में पसन्द नहीं किया जाता । दूसरे यह कि धंधेबाज़ी की बेशर्म मांग होती है–तू मुझे साधु बोल, मैं तुझे साधु कहूंगा । इस वक़्त की समूची आलोचना-चर्चा घटिया व्यावहारिक समीक्षा में सीमित हो चुकी है । कई कारणों से चुन ली गयी रचना की ख़ूबियों का बयान आलोचना का मुख्य काम कर गया है जो कृति के प्रायोजित स्थान का निर्धारण कर उसे धंधे का साधन बना लेता है । ज़ाहिर है, विवेचित लेखक इससे खुश होता है और सहज ही रैकेटियरों के गिरोह का प्रार्थी बन जाता है । इस स्थिति में कोई सार्थक तब्दीली हो यह मुमकिन नहीं लगता लेकिन क्या इस कुचक्र से बाहर की दुनिया पर नज़र नहीं जानी चाहिए ? इस कुचक्र का हिस्सा बहुत दिन मैं भी रहा हूं, इसका खेद है । पर क्या वे भी खेद व्यक्त करेंगे ?

कविता

मैं बनना चाहता हूं

मैं बनना चाहता हूं
सड़क के एक तरफ़ बने
उस मील पत्थर की तरह
जो राह बतलाता है
हर आने-जाने वालों को
उनको मंज़िल तक पहुंचाता है
भटकने से बचाता है ।

मैं बनना चाहता हूं
नदी में चलती
उस किश्ती की तरह
जो इस पार से
उस पार पहुंचाती है
नदी के दो किनारों को
जोड़ने का काम करती है
आदमी को आदमी से
टूटने से बचाती है ।

मैं बनना चाहता हूं
तेल बाती से जलते
उस दीये की तरह
देता है जो रोशनी
और राह दिखाता है
मन से डर भगाता है ।

मैं बनना चाहता हूं
धर्मग्रंथ में लिखे पन्ने की तरह
जो इन्सानियत का पाठ पढ़ाता है
आदमी को आदमियत दिखाता है
देता है नया अंदाज़
सभी को प्यार करना सिखाता है ।

सुरेन्द्र कुमार 'अंशुल'
अम्बाला शहर, हरियाणा

निदाए यतीम (Voice of Orphan Girls')

मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना, गया।

लड़कियों के लिए जदीद और मुकम्मल इस्लामी तर्ज़ तालीम से मुज़ैयन क़ौमी सतह का मेयारी रिहायशी (Residential) इदारा

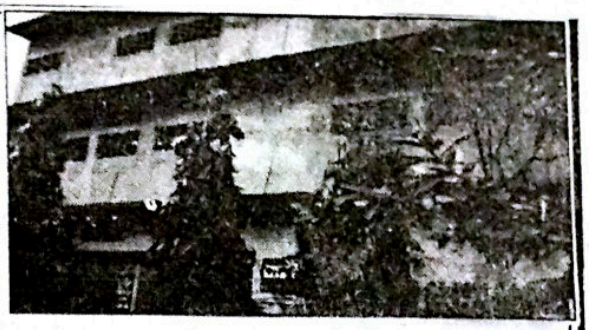

इस्लामी भाइयों और बहनों ! अस्सलामु अलैकुम वरहमतुल्लाह व बरकातहु

यह आपका जाना–पहचाना इदारा जो तक़रीबन 23 वर्षों से क़ौमी ख़िदमत अंजाम दे रहा है अलहम्दुलिल्लाह इदारा बहुत ही बुलन्द मक़ासिद के तहत बजूद में आया है और झोपड़े से महल बनने की भरपूर कोशिश कर रहा है। आप हज़रात की खुसूसी तवज्जुहात से ही इदारा तमाम मुश्किलात के बावजूद दिन–बदिन तेज़ी से तरक्की की मंजिलें तय करता जा रहा है।

• इदारा 21 दिसम्बर 1986 ई० से ही सही इस्लामी खुतूत पर यतीम के साथ–साथ गरीब और गैर–यतीम तालिबात की तालीमी ख़िदमात अंजाम दे रहा है। • यहा की तालिबात को मैट्रिक (Matric) पास करने के बाद कॉलेज के अलावा अरबी यूनीवर्सिटी में आलमियत के साल अव्वल व दोम में आसानी से दाख़िला मिल जाता है। • शोबा–ए–हिफ़्ज की तालिबात को हिफ़्ज़ के साथ–साथ मैट्रिक (Matric) तक की तालीम दी जाती है। • तालीमी साल (Educational Session) : अप्रैल ता मार्च • तालीमी मराहिल • नर्सरी • इब्तिदाई • सानवी • आला • शोबा हिफ्ज व तजवीद • Distance Education तादाद यतीम तालिबात–110 बैरूनी तालिबात् अपने खर्च पर दारूल अकामा (Boarding) में रह कर तालिम हासिल करें। करने वाली और बाहर से आकर जाने वाली इसके अलावा है। • तादाद असातज़ा, मुअल्लिमात और दूसरे मुलाज़मीन : 30 • सालाना ख़र्च (Annual Expenditure) : बारह लाख रूपये (Rs. 12,00,000) से ज़ायद (तामीरी ख़र्च को छोड़कर) • ज़रिया आमदनी : मुस्लिम अवाम के चन्दे।

नोट : यतीम तालिबात का सारा ख़र्च : पैर के नाखुन से लेकर सर के बाल तक या कहिए एड़ी से लेकर चोटी तक इदारा पूरा करता है।

यतीमखाना की ख़बरें : • **शोबा–ए–तालीम बालग़ान (Adult Education)** : की बुनियाद 20 जून 2002 ई० को एक नवजवान शदीशुदा औरत से पड़ी थी। • **शोबा–ए–हिफ़्ज (Qura'n Memorization)** : 6 तालिबात ने दीनी वे असरी तालीम क साथ दरजा दहुम में पहुंचते –पहुंचते हिफ़्ज मुकम्मल कर लिया। वह हाफिज़े कुरआन करार दी गयीं और मैट्रिक पास करके घर चली गयीं और बाकी बच्चियां हिफ़्ज के साथ–साथ असरी तालीम भी हासिल कर रही हैं। • **बिहार स्कूल इग्ज़ामिनेशन बोर्ड** : गुज़िश्ता कई सालों से लगातार मैट्रिक (Matric) बोर्ड के इम्तिहान में यतीम व गैर–यतीम तालिबात का तक़रीबन सद फीसद रिजल्ट रहता है। नोट – 1992 से मैट्रिक की तालिम शुरू ओर 1993 से 2009 तक 58 यतीम बच्चियों और 32 गैर–यतीम बच्चियों ने मैट्रिक का इम्तिहान पास किया और एक यतीम बच्ची ने बेगम तारा रशीद शेरवानी एवार्ड भी हासिल किया था। • हजरत खोद जतुल कोबरा वोकेशनल सेन्टर (Vocational Centre) • अगरत 2003 से बाज़ाबता तरीका पर इदारा में कटाई व सिलाई का सेन्टर चल रहा है। अब पेंटिंग मेंहदी और फूल–पती मशीन से सिखाने का कोर्स भी शुरू होने वाला है। • कटाई व सिलाई 6 बैच 70 तालिबात और तीन बैच ज़री वर्क्स में 42 तालिबात का, सबको सरकारी सनद तक़्सीम की जा चुकी है। • जल्द ही कंप्यूटर की तालीम शुरू •साल 2008 से इदारा में यतीम व गैर–यतीम तालिबात की इन्टरमेडिएट (ग्यारहवीं Class XI) की तालीम शुरू। • तालीमी फंड बैतुल माल बराए–तालीम (Bait-ul-Mal for Education) : नादार व ग़रीब बच्चियों को फ़िलहाल छोटे पैमाने पर मुफ़्त तालीम देने का भी नज़्म है। कफाला स्कीम (Kafla Scheme) के तहत एक यतीम बच्ची की तालीम व तर्बियत व खुर्दो नोश पर सलाना आठ हज़ार रूपये (Rs. 8,000) ख़र्च आता है। आप भी एक यतीम बच्ची की कफ़ालत का बार उठाकर कारेखैर मं शरीक हों। याद रखें, इदारा का कोई मुस्तक़िल आमदनी का जरिया नहीं है। आपकी तरफ से जो ज़कात व अतियात की रक़में मिला करती हैं वह सिर्फ "यतीम बच्चियों" पर ही ख़र्च की जाती है। अतियात या दूसरे मद की रक़मों से हम स्कूल वग़ैरह चला रहे हैं।

• रमज़ानुल मुबारक का महीना पहुंचते–पहुंचते इदारा माली मुश्किलों में घिर जाता है। हर साल सालाना अख़राजात की तकमील अहले ख़ैर और हमदर्द हजरात के कर्जों ही के जरिया पूरी की जाती है। इदारा के अज़ीम मंसूबों को पये तकमील तक पहुंचाने के लिए आपके तआवुन की सख़्त जरूरत है। तआवुन की मुख़्तालिफ़ शक्लें हैं मसलन • ज़कात • अतियात • सदक़ात • पैदावार की ज़कात • दीनी कुतुब • एक यतीम बच्ची का सलाना ख़र्च, • वालदैन या अपने और रिश्तेदारों के नाम कमरा और हॉल बनवाना, • कर्ज की अदायगी और ज़मीन की ख़रीदारी • स्टाफ की माहाना तनख्वाह के लिए (Rs. 65,000) रूपयें • तामीरी कामों के लिए, ईंट, सीमेन्ट, छड़ और दीगर सामान या उस की कीमत वगैरह।

याद रखें ! ज़कात अपके माल को पाक करती है। इदारा आपके फ़राख़दिलाना और मुख़लिसाना तआवुन का मुन्तजिर है।

• नोट : स्कूल और हॉस्टल में दाख़िला जारी • नया तालीमी साल : माह अप्रैल से शुरू

चेक व ड्राफ़्ट पर केवल यह लिखें : "THE GAYA MUSLIM GIRLS ORPHANAGE"

बराए राबिता (ख़त, चेक व ड्राफ्ट और मनी आर्डर भेजने का पता)

General Secratary, THE GAYA MUSLIM GIRL'S ORPHANAGE

At : Kolowna, Po. - Cherki Distt. Gaya 824237 (Bihar) India

फोन : (0631) 2734437, मोबाइल : 9934480190

☎ CORE BANKING A/C No. 30402010007752

Bank A/c No. 7752, Union Bank of India (Main Branch, GAYA)

इक़बाल अहमद ख़ान : *बानी–ए–इदारा व एज़ाज़ी जेनरल सेक्रेट्री*

email : thegayamuslimgirlsorphanage@gmail.com, website : www.gmgo.org

आधुनिक नारी : समस्याएं एवं समाधान

❖ नुज़हत यासमीन

आधुनिक युग में मानव समाज ने कला, विज्ञान एवं टेक्नॉलोजी के क्षेत्र में काफ़ी उन्नति की है। लोगों का जीवन स्तर बुलंद हुआ है, सुख-समृद्धि के साधन जुटे हैं और रहन-सहन में बदलाव आया है। उन्नति और प्रगति की इस दौड़ में महिला वर्ग ने भी अपने क़दम बढ़ाएं हैं। गांव और शहरों में जो परिवर्तन आए हैं वह काफ़ी संतोषजनक हैं। महिलाओं में शिक्षा आम हुई है। प्रोफेशनल कोर्स में इनके क़दम बढ़े हैं। आज आधुनिक युग की नारी टीचर, डॉक्टर, इंजीनियर ऑफ़िसर सब कुछ है। इसके प्रगति और उन्नति की ओर बढ़ते क़दमों को देखकर यह आभास होता है कि सदियों से शोषण की पीड़ा सहने वाली नारी ने आज अपनी शक्ति पहचान ली है और अपना सही मुक़ाम पा लिया है। नारी की उन्नति और सम्मान का यह रूप कितना मनमोहक व आकर्षक है। किन्तु यह सिक्के का एक पहलू है। सिक्के का दूसरा पहलू कुछ अलग ही तस्वीरें दिखा रहा है।

तहज़ीब का यह रास्ता जिस पर महिला वर्ग ने बड़ी लालसा एवं उत्सुकता से अपने क़दम बढ़ाएं, उसके लिए सुनहरा जाल ही साबित हुआ। आज के समाज ने नारी की जो दुर्गति की है उसका हाल किसी से छिपा नहीं है। उसकी प्रकृति और स्वभाव के विपरीत उस पर ज़िम्मेदारियों का दोहरा बोझ डाला गया है। आधुनिक नारी मजबूर है कि वह घर की व्यवस्था और बच्चों के पालन-पोषण का प्रबंध भी करे और ऑफ़िस या कारोबार संभाल कर घर की आर्थिक

भारतीय समाज में नारी-संबंधित विशेष समस्याओं में एक महत्वपूर्ण समस्या कन्या भ्रूण-हत्या है। भारतीय परम्परा में यूं तो नारी को देवी का स्थान दिया गया है, किन्तु, दूसरी ओर उसे जीने का अधिकार भी नहीं दिया जाता। आज हमारे देश में कन्या भ्रूण-हया एक जटिल समस्या का रूप धारण कर चुकी है। शिक्षित और सभ्य दम्पत्ति भी इस मानसिकता का शिकार है कि उनके घर लड़की जन्म न ले। नतीजा यह है कि प्राय: एक बच्ची के जन्म से पहले ही उसे मृत्यु के शिकंजे जकड़ लेते हैं। कानूनी तौर पर अपराध होने के बावजूद माता-पिता, डॉक्टर सब इस अपराध में शामिल होते हैं। लड़कों की तुलना में लड़कियों का घटता अनुपात इसका साक्षी है।

स्थिति और जीवन स्तर को बेहतर बनाने की कोशिश भी करे। इस दोहरे बोझ को ढोती कामकाजी महिलाएं प्राय: निजी सुख-चैन से वंचित हो जाती हैं। वे अपने बच्चों को समय नहीं दे पातीं जिसके नतीजे में मानसिक तनाव और आत्मग्लानि का शिकार हो जाती हैं। इस दोहरे बोझ ने महिलाओं की मानसिकता को प्रभावित किया है। परिवार टूटने-बिखरने की घटनाएं आज आम होती जा रही हैं।

समाज ने नारी को खुशहाली और सम्पन्नता का नारा देकर पुरुषों के कन्धे से कन्धा मिलाकर चलने का अवसर तो दे दिया किन्तु दूसरी ओर शान्ति व सम्मान तो क्या, उसे सुरक्षा तक प्रदान नहीं की, न तो वह अपने कार्यस्थल पर सुरक्षित है, न सैर-सपाटे के स्थान पर। उसे तो सड़कों पर भी सुरक्षा हासिल नहीं है। यौन-शोषण, मॉडलिंग, रैम्प-शो आदि व्यवसाय ने नारी के स्वाभाविक संकोच, लज्जा और शालीनता को छीनकर उसे एक ऐसी वस्तु (Commodity) बना दिया है जो व्यापार की उन्नति में उपयोग की जाती है। साबुन का इश्तिहार हो या कार का नारी का अर्धनग्न चित्र ही साथ होगा। पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव ने भारतीय समाज के वातावरण को दूषित कर दिया है। यौन-अपराध अपने चरम सीमा पर पहुंच रहे हैं। छोटी बच्चियों, स्कूली लड़कियां, युवतियां सभी इस निशाने पर हैं। अपहरण और बलात्कार की कितनी घटनाएं ऐसी हैं जहां अपराधी निकट-संबंधी या पड़ोसी होते हैं।

ऑफ़िस में या कार्य स्थल पर महिलाओं की सुरक्षा का कोई प्रबंध नहीं होता। पर-पुरुषों के कटाक्ष तो मामूली बात है, बॉस व पदाधिकारियों द्वारा दुर्व्यवहार व उत्पीड़न की घटनाएं भी अब अनहोनी नहीं रही। इसके साथ ही सिनेमा, टी०वी० कल्चर ने नग्नता और अश्लीलता फैला कर युवकों को गुमराह करने का बेड़ा उठाया है। समाचार-पत्र और पत्रिकाएं भी इस दौड़ में पीछे नहीं है। अब इंटरनेट और मोबाइल फ़ोन-कैमरे ने रही-सही कसर भी पूरी कर दी है तथा यौन-अपराध के ग्राफ़ को तेज़ी से ऊंचा उठाया है।

नारी-शोषण का एक अत्यंत घृणित रूप देह-व्यापार है। किन्तु, आज भारतीय समाज में निर्लज्जता ने अपने पैर इतने मज़बूत जमाए हैं कि यौन-शोषण अपराध भी नहीं माने जाते, बल्कि इन्हें व्यवसाय की 'उपाधि' दे दी गई है।

भारतीय समाज में वेश्यावृत्ति पहले भी रही है किन्तु अब पश्चिमी सभ्यता के अनुसरण में स्वतंत्र यौन-संबंधों ने मानवता की बुनियाद हिला दी है।

कारोबार की उन्नति के लिए शहर के छोटे-बड़े होटलों में कॉलगर्ल्स उपलब्ध होती हैं। मसाज घरों एवं नाइट क्लबों में भी नारी के यौन शोषण की प्रथा प्रचलित है। हाई सुसायटी की धनी, शिक्षित व सभ्य कही जाने वाली युवतियों ने भी इस व्यवसाय में स्वेच्छा से क़दम बढ़ाए हैं। पांच सितारा होटलों का आकर्षण इनकी उपलब्धि से बढ़ा है।

देश-विदेश में होने वाली ब्यूटी-कम्पटीशन ने ग्लैमर का ऐसा जाल बिछाया है, जिसमें भले घरानों की युवतियां (घर वालों के प्रोत्साहन सहित) आगे बढ़ रही हैं। यह तूफ़ान कहां जाकर थमेगा ? क्या यह सच

इस्लाम धर्म महिला वर्ग का भी उद्धारक है। वह उनके अधिकार और सम्मान की रक्षा करता है। इस्लाम की दृष्टि में विधवा स्त्री न कलंकिता है न अशुभ है। किसी स्त्री का विधवा होना अभिशाप भी नहीं है। किसी व्यक्ति की मृत्यु ईश्वरीय नीति पर निर्भर है। स्त्री के भाग्य को उसके पति की मृत्यु का दोष नहीं दिया जा सकता। इस्लाम धर्म के अनुसार विधवा नारी अपने पति के धन सम्पत्ति में हिस्सा पाती है। उसे दूसरे विवाह का अधिकार भी हासिल है। पति की मृत्यु के बाद यह स्त्री के पिता भाई, बेटे या निकटतम संबंधी की ज़िम्मेदारी है कि ऐसी स्त्री के रहन-सहन, जीविका और सुरक्षा का प्रबंध करे। मुस्लिम समाज में विधवा नारी न अशुभ है, न अछूत और न उसे किसी विधवाश्रम पर आश्रित रहने की ज़रूरत है।

नहीं है कि इन्हीं स्वतंत्र यौन-संबंधों ने समाज को एड्स जैसी घातक बीमारी का उपहार दिया है।

नारी-शोषण के इस घृणित रूप को मानव की स्वच्छंदता और स्वतंत्रता की उपाधि देने वाले तथा देह व्यापार को सबसे 'पुराना पेशा' का नाम देने वाले लोग मानवता के कितने बड़े अपराधी हैं, इसका अनुमान लगाना किसी भी दर्दमंद इन्सान और संवेदनशील व्यक्ति के लिए कठिन नहीं।

सदियों से चले आ रहे रीति-रिवाज और परम्पराओं से भी आज की नारी मुक्ति नहीं पा सकीं हैं। यह सच है कि रीति-रिवाजों को तोड़ना और परम्पराओं को छोड़ना सरल नहीं। इनके बंधन व्यक्ति के मनोबल और साहस को तोड़ देते हैं। आज की आधुनिक भारतीय नारी रीति-रिवाजों के बंधन में जकड़ी समस्याओं से जूझती है तथा इन समस्याओं का कोई समाधान समाज के बनाए क़ानून के पास नहीं है।

भारतीय समाज में नारी-संबंधित विशेष समस्याओं में एक महत्वपूर्ण समस्या कन्या भ्रूण-हत्या है। भारतीय परम्परा में यूं तो नारी को देवी का स्थान दिया गया है, किन्तु, दूसरी ओर उसे जीने का अधिकार भी नहीं दिया जाता। आज हमारे देश में कन्या भ्रूण-हया एक जटिल समस्या का रूप धारण कर चुकी है। शिक्षित और सभ्य दम्पत्ति भी इस मानसिकता का शिकार है कि उनके घर लड़की जन्म न ले। नतीजा यह है कि प्राय: एक बच्ची के जन्म से पहले ही उसे मृत्यु के शिकंजे जकड़ लेते

हैं । क़ानूनी तौर पर अपराध होने के बावजूद माता-पिता, डॉक्टर सब इस अपराध में शामिल होते हैं । लड़कों की तुलना में लड़कियों का घटता अनुपात इसका साक्षी है ।

दूसरी महत्वपूर्ण समस्या दहेज-प्रथा है । विवाह कारोबार बन चुका है । शिक्षित, सभ्य, नौकरी-पेशा तथा अच्छी आय प्राप्त करने वाली युवतियों के विवाह में भी लाखों के लेन-देन होते हैं । सुन्दर, सभ्य और भले घर की कितनी लड़कियां ऐसी हैं जिनकी उम्र निकल जाती है और अच्छे रिश्ते नहीं मिलते । जहां दहेज की आशा न हो, वहां रिश्ते आएं भी कैसे ? कितनी लड़कियां इस अपमान और माता-पिता की परेशानियों का बोझ सहन नहीं कर पातीं और आत्महत्या कर लेती हैं । विवाह हो जाने के बाद भी लालची ससुराल वालों की ओर से वधुओं को जला कर मार डालने की घृणित और क्रूर घटनाएं सामने आती रहती हैं । इस समस्या ने समाज में विवाह के प्रति घृणा तथा बिना विवाह दम्पत्ति बनकर रहने की मानसिकता को बढ़ावा दिया है । विवाह का पवित्र बंधन बोझ बन कर टूटने-बिखरने लगा है ।

भारतीय समाज में विधवा महिलाओं की समस्या भी अत्यंत जटिल है । समाज में विधवा नारी अशुभ समझी जाती है । पति की मृत्यु का दोष उसके भाग्य को दिया जाता है । वह न पिता के घर लौट सकती है, न ससुराल वाले ही उसे आश्रय देते हैं, पति या पिता के धन-सम्पत्ति में उसका कोई अधिकार नहीं होता । ऐसी अभागिन का दूसरा विवाह भी धर्म और रीति के विरुद्ध है । ये बेसहारा विधवाएं प्राय: विधवा आश्रम पहुंचा दी जाती हैं ।

प्राय: ऐसी भी घटनाएं घटती रहती हैं जहां बूढ़ी, कमज़ोर अवस्था की विधवा को स्वयं उनके बेटे-पोते किसी घांट या तीर्थ स्थान पर छोड़ कर चले जाते हैं । इनकी दयनीय दशा दिलों को तड़पा देने वाली होती है । बुढ़ापे की अवस्था में जब इन्सान दूसरों के सहारे का मुहताज होता है, ये बूढ़ी विधवाएं भीख मांग कर घाट और सड़कों पर जीवन व्यतीत करती हैं ।

विधवा-आश्रम युवा बेसहारा स्त्रियों की भी दु:खद गाथाएं सुनाते हैं । संगठित माफ़िया के द्वारा आश्रम की युवा विधवाओं को देह-व्यापार में धकेलने तथा उन्हें शोषित व उत्पीड़ित करने की घटनाएं घटती रहती हैं । इन बेसहारा विधवा नारियों को इस अपमानजनक स्थिति से निकालने का कोई रास्ता आज तक समाज नहीं ढूंढ़ सका है ।

आधुनिक युग की इस तहज़ीब का रास्ता औरतों के शोषण, अपमान और उन पर अत्याचार के कांटों से भरा है । आज की महिलाएं शिक्षित, जागरूक एवं विवेकशील हैं, उन्हें एक बार रुक कर, संकोच एवं शंका त्याग कर उस रास्ते के बारे में सोचना चाहिए जहां सामाजिक समस्याओं का उचित समाधान मौजूद हो, जहां अपराधी को दंड एवं निर्दोष को न्याय मिले तथा प्रत्येक व्यक्ति, विशेषत: महिला को शान्ति एवं सम्मान का जीवन गुज़ारने का अवसर व अधिकार मिले । आज की नारी को उस रास्ते के बारे में अवश्य सोचना चाहिए जो उसके लिए, सारे जगत के लिए और समस्त मानवजाति के लिए कल्याणकारी हो ।

इस्लाम धर्म का प्रावधान

इस्लाम का संदेश संसार के सारे इन्सानों के लिए है । इसके नियम व क़ानून उस सर्वशक्तिमान ईश्वर के बनाए हुए हैं जो सारी सृष्टि का रचयिता है । जिसने इस सुन्दर संसार को बनाया है । वह ईश्वर जो एक ही है, उस जैसा कोई और नहीं, उसका कोई साझी नहीं, वही स्वामी है, वही पूज्य है ।

उसी ईश्वर ने मानव की सृष्टि की है । उसी ने पुरुष और स्त्री को बनाया है । जीवन-यापन की सारी सुविधाएं उपलब्ध कराईं । सुख-संतुष्टि के साधन जुटाए । संसार में मानव के जीवन व्यतीत करने के नियम बनाए और उसकी शिक्षा दी । यह शिक्षा पुरुष व नारी दोनों के लिए हितकारी है यह सारे संसार को भलाई का रास्ता दिखाती है । इस रास्ते का नाम इस्लाम है । यह शान्ति, सम्मान एवं न्याय का रास्ता है । इस रास्ते पर चलने में लोक-परलोक की सफलता निहित है ।

इस्लाम का संदेश मानव तक पहुंचाने के लिए ईश्वर ने अपने दूत नियुक्त किए । इस संसार में आने वाले अन्तिम ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) हैं । ईश्वर ने आप (सल्ल०) पर वह ग्रंथ अवतरित किया, जिसका नाम क़ुरआन है ।

इस्लाम के शिक्षानुसार इस जीवन के बाद पुन: एक जीवन है, जहां हर व्यक्ति, वह पुरुष हो या स्त्री, अपने-अपने कर्मों का फल पाएगा । परलोक में सफलता प्राप्त करने वाले के लिए सदा का सुख व आराम है । असफल होने वाले हमेशा आग में जलेंगे ।

इस्लाम धर्म लिंग के आधार पर पुरुष व नारी में

भेदभाव नहीं करता । हां, स्त्री के व्यक्तित्व, मानसिकता एवं व्यवहार के अनुरूप ही उस पर ज़िम्मेदारियों का बोझ डालता है । समस्याओं को सुलझाता है । जीवन के हर मोड़ पर उसे उचित और न्यायसंगत दिशा दिखाता है । उसके सम्मान और अधिकार की रक्षा करता है ।

नारी भी इन्सान है । अपना वजूद रखती है । इन्सान होने के नाते उसे भी दुनिया में जीवित रहने का अधिकार है । कन्या भ्रूण-हत्या घोर अपराध है । आधुनिक युग में लड़कियों को मां की कोख में मार डालने का प्रचलन बढ़ता जा रहा है । यह ऐसा निर्मम अपराध है जो इन्सान को जानवरों से भी नीच बना देता है ।

इस्लाम के आगमन से पहले अरब में भी बच्चियों को मार डालने की अमानवीय प्रथा प्रचलित थी । इस्लाम धर्म ने मुस्लिम समाज को पाबन्द किया कि वह कन्या-वध न करे । ऐसा करने वालों को ईश्वरीय ग्रंथ कुरआन परलोक में कठोर ईश्वरीय दंड की चेतावनी देता है । इस्लाम की दृष्टि में इन्सान का जीवन आदरणीय है । उसके वध का अधिकार किसी को नहीं । इस्लाम के शिक्षानुसार, एक निर्दोष व्यक्ति की हत्या सारी मानवजाति की हत्या है ।

ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने बेटियों के साथ स्नेह और अच्छे व्यवहार के निर्देश दिए । आप (सल्ल०) ने कहा कि अपनी बेटियों से सद्व्यवहार करने वाले, उनका भली-भांति पालन-पोषण करने वाले स्वर्ग में मेरे साथ होंगे । इस्लाम धर्म की शिक्षा ने इस कुप्रथा को जड़ से खत्म कर दिया । मुस्लिम समाज में बेटियों का जन्म नगण्य अपवादों को छोड़कर आज भी शुभ समझा जाता है, या कम से कम अशुभ नहीं समझा जाता ।

इस्लाम धर्म के शिक्षानुसार माता-पिता का कर्तव्य है कि बेटियों के पालन-पोषण और उचित शिक्षा-दीक्षा का प्रबंध करें । उन्हें स्नेह और प्यार दें । बेटे और बेटी में भेदभाव न करें । लड़कियां जब विवाह योग्य हो जाएं तो भले व्यक्ति से उनका विवाह करें । विवाह से पहले लड़कियों से सहमति लेना अनिवार्य है । दहेज प्रथा का यहां कोई स्थान नहीं, बल्कि यह वर का कर्तव्य है कि विवाह के समय अपनी पत्नी को महर (उपहारस्वरूप धन) अवश्य अदा करे । लड़की पक्ष पर विवाह के ख़र्च आदि का कोई बोझ नहीं डाला गया है ।

इस्लाम सादगी व सच्चाई का प्रतीक है । वह अपने अनुयायियों को फ़ज़ूलख़र्ची और दिखावे से रोकता है तथा सादगी अपनाने की शिक्षा देता है । ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के कथनानुसार सबसे अच्छा निकाह वह है जिसमें सबसे कम ख़र्च आए ।

इस्लाम धर्म महिला वर्ग का भी उद्धारक है । वह उनके अधिकार और सम्मान की रक्षा करता है । इस्लाम की दृष्टि में विधवा स्त्री न कलंकिता है न अशुभ है । किसी स्त्री का विधवा होना अभिशाप भी नहीं है । किसी व्यक्ति की मृत्यु ईश्वरीय नीति पर निर्भर है । स्त्री के भाग्य को उसके पति की मृत्यु का दोष नहीं दिया जा सकता । इस्लाम धर्म के अनुसार विधवा नारी अपने पति के धन सम्पत्ति में हिस्सा पाती है । उसे दूसरे विवाह का अधिकार भी हासिल है । पति की मृत्यु के बाद यह स्त्री के पिता, भाई, बेटे या निकटतम संबंधी की ज़िम्मेदारी है कि ऐसी स्त्री के रहन-सहन, जीविका और सुरक्षा का प्रबंध करे । मुस्लिम समाज में विधवा नारी न अशुभ है, न अछूत और न उसे किसी विधवाश्रम पर आश्रित रहने की ज़रूरत है ।

इस्लाम धर्म नारी को वह आदर व सम्मान देता है जिसकी वह अधिकारिणी है । एक नारी का कर्तव्य है कि वह मर्यादापूर्ण, शालीन जीवन व्यतीत करे । अपना बनाव-शृंगार पराए मर्दों पर न प्रकट करे, न एकांत में उनसे मिले, न उनसे लगावट से बातें करे । एक मुस्लिम नारी के वस्त्र ढीले-ढाले और सारे शरीर को ढंकने वाले होने चाहिए । घर से बाहर निकलते समय परदा (प्रचलित बुर्क़ा या चादर, जो स्त्री की साज-सज्जा को ढक ले) का व्यवहार अनिवार्य है, ताकि यह पहचान बनी रहे कि यह मुस्लिम महिला है, अपने स्त्रीत्व व मार्यादा की रक्षा इसे अपने प्राणों से भी प्रिय है । इसके साथ ही मुस्लिम पुरुषों को यह निर्देश दिए गए कि वह पराई औरतों को न घूरे, अपनी नज़रें नीची रखें व शालीन जीवन व्यतीत करें ।

किसी घर में बेधड़क जाने से रोका गया । निर्देश दिए गए कि पहले अनुमति मांगो और जब अनुमति मिल जाए तभी घर में प्रवेश करो । लाज व शर्म की अनुभूति मानव की प्रकृति में रची-बसी है । जब मानव इस अनुभूति को खो बैठता है तो उसका जीवन पशु के समान हो जाता है और वह पतन के गड्ढे में गिरने लगता है ।

आंखों को चकाचौंध करते फैशन, अर्धनग्न शरीर, अश्लील चित्र और गानों ने मानव समाज से स्वाभाविक लाज

व शर्म की अनुभूति को छीन कर व्यभिचार फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है तथा नारी-शोषण और अपमान का कारण बने हैं । इस्लाम धर्म ऐसी तमाम बुराइयों को को अवैध घोषित करता है जो समाज में बिगाड़ फैलाती है । ईश्वरीय आदेश का उल्लंघन कर समाज में बुराइयां फैलाने वालों को ईश्वरीय क़ानून के अंतर्गत इस संसार में भी सज़ा देने के नियम मौजूद हैं तथा परलोक में भी कठोर दंड की चेतावनी दी गई है । इस्लाम धर्म की एक बड़ी विशेषता यह है कि यह उन सभी दरारों को बन्द कर देता है जहां से बुराई और निर्लज्जता के अंकुर पनपते हों ।

यह व्यभिचार और शोषण के कांटों को एक-एक करके नहीं तोड़ता बल्कि उस जड़ को उखाड़ फेंकता है जो उनके उगने का कारण हों । इस्लाम धर्म में परिवार संस्था महत्वपूर्ण है । एक ऐसा घर जहां परिवार के हर सदस्य को आदर, सम्मान, सुख व शान्ति मिले । जहां स्नेह और प्रेम का वातावरण हो । बड़ों का आदर-सत्कार हो, बच्चों को प्यार और अच्छी देख-रेख मिले । ईश्वर ने पुरुष व नारी दोनों की प्रकृति, स्वभाव, व्यवहार और कार्यक्षमता अलग-अलग बनाई है और दोनों की कार्य सीमा व कार्यक्षेत्र उनके मानसिक व शारीरिक संरचना के अनुकूल अलग-अलग निश्चित किये हैं । इस्लाम धर्म नारी व पुरुष में लिंग के आधार पर भेदभाव नहीं करता किन्तु, उस समानता का विरोध करता है जो इन्सान की प्रकृति और ईश्वरीय क़ानून के विपरीत हो ।

एक मुस्लिम परिवार में पति घर का मुखिया होता है । उस पर धन अर्जित करने तथा आश्रित परिवारजन के रहन-सहन एवं जीविका का प्रबंध करने का उत्तरदायित्व डाला गया है । स्त्री का कर्तव्य है कि वह घर की व्यवस्था और परिवारजन की देखभाल करे । बच्चों के पालन-पोषण का प्रबंध करे । उन्हें एक अच्छा व्यक्ति, अच्छा नागरिक बनाने में अपना भरपूर योगदान दें ।

नारी आने वाली पीढ़ी के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है । अच्छी मां की गोद में ही अच्छे इन्सान पलते हैं । मां का त्याग, प्रेम और शिक्षा बच्चे को सही दिशा दिखाती है । मां बच्चे के लिए आकर्षण का केन्द्र और ममता का श्रोत है । वह उसका आदर्श है । बच्चा मां के गुण, अवगुण गोद से ही सीखना आरंभ कर देता है । इसीलिए कहा गया है कि मां की गोद बच्चे की पहली पाठशाला है । एक अच्छी मां अच्छे इन्सान तैयार करती है, जिससे अच्छे समाज का निर्माण होता है । अच्छे व्यक्ति एवं समाज के निर्माण में एक मां के रूप में नारी का योगदान इस्लाम की दृष्टि में कितना प्रशंसनीय है इसका अनुमान अन्तिम ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के इस कथन से होता है कि स्वर्ग मां के क़दमों के नीचे हैं ।

इस्लाम नारी को व्यवसाय या नौकरी से नहीं रोकता । यदि वह अपने उत्तरदायित्व को निभाते हुए मर्यादापूर्ण व अच्छे माहौल में व्यवसाय या नौकरी कर सकती है तो उसे इसकी अनुमति है । यूं भी इस्लाम धर्म नारी की आर्थिक स्थिति को कमज़ोर नहीं करता । वह विवाह के समय पति से महर (उपहारस्वरूप धन) पाती है । पिता की सम्पत्ति में उसका हिस्सा है । धन, गहने या उपहार जो वह माता-पिता, पति या निकट संबंधियों से पाती हैं वह उसकी स्वामिनी है । अगर वह धन अर्जित करती है तो यह भी उसका है । यदि वह इस धन को सुरक्षित रखना चाहे तो वह रख सकती है, या फिर अपनी मर्ज़ी से ख़र्च कर सकती है । जबकि पुरुष अपने सारे धन को सुरक्षित नहीं रख सकता । घर वालों की ज़रूरतों का बोझ उठाना उसकी ज़िम्मेदारी है ।

यह एक कटु सत्य है कि आज का मुस्लिम समाज इस्लाम धर्म के पूर्णतः अनुकूल नहीं है । इसके अन्दर बहुत-सी कमज़ोरियां पाई जाती हैं । दूसरी तहज़ीबों से प्रभावित होकर मुसलमान ईश्वरीय शिक्षाओं व क़ानून का उल्लंघन करने लगे हैं, जिससे मुस्लिम समाज में बहुत-सी ख़राबियां उत्पन्न हो गई हैं । आज के मुस्लिम समाज में फ़ज़ूलख़र्ची, दिखावा, दहेज प्रथा, फ़ैशन, बेपरदगी आदि बुराइयां फैल रही हैं । पश्चिमी सभ्यता की चकाचौंध से प्रभावित होकर मुसलमान अपना कर्तव्य और उत्तरदायित्व भूलते जा रहे हैं । किन्तु यह भी महत्वपूर्ण सच्चाई है कि मुस्लिम समाज की इन बुराइयों का कारण इस्लाम धर्म के नियम व क़ानून नहीं बल्कि इस्लाम की शिक्षा से मुसलमानों की दूरी है ।

यदि मुस्लिम समाज इस्लाम की शिक्षा व नियमों का पूर्णतः पालन करने लगे तो यह एक आदर्श समाज बन जाएगा ।

फिर भी, यदि दूसरी तहज़ीबों से इस्लामी तहज़ीब की तुलना की जाए तो नारी जाति से संबंधित इसकी ख़ूबियां

साफ़-साफ़ महसूस की जा सकती हैं । नारी की प्रकृति और स्वभाव से तालमेल खाते नियम, आत्म-सम्मान, सुरक्षा और स्वतंत्रता का एहसास उसे लोक-परलोक में अच्छा जीवनशैली अपनाने की दावत देते हैं ।

आज, जबकि पश्चिम में परिवार टूट-फूटकर बिखर रहे हैं, आत्म-सम्मान, मर्यादा और शान्ति का नाम व निशान मिट रहा है, वहां की नारी के सामने इस्लाम एक सुनहरा अवसर प्रदान कर रहा है । पश्चिमी समाज में इस्लाम धर्म की शरण में आने वाली महिलाओं का अनुपात पुरुषों की तुलना में तीन-गुना बढ़ा हुआ है । यह अनुपात इस तथ्य का साक्षी है कि इस्लाम धर्म नारी को वह शान्ति, आत्म-सम्मान और पारिवारिक सुख देता है जो उसकी प्रकृति की पुकार भी है और सामाजिक संरक्षा की ज़मानत भी ।

आज भारतीय समाज में महिला वर्ग असमंजस की स्थिति में है । उसके अथक परीश्रम और त्याग के बावजूद उसे समाज में प्रतिष्ठा और सही मुक़ाम हासिल नहीं हो सका है । समाज में नारी संबंधित अपराध की घटनाएं बढ़ती ही जा रही हैं । संस्थाएं और कमीटियां बनती है, मानवाधिकार की दुहाइयां देते हुए नारे लगते हैं, गोष्ठियां होती हैं, रैलियां निकलती हैं, लेकिन आज तक इन समस्याओं का कोई निश्चित समाधान सामने नहीं आ सका है। नारी संबंधित अपराधों को लेकर आज क़ानून भी बेबस नज़र आ रहा है ।

दूसरी ओर, घरों का सुख-चैन लुट रहा है, मानसिक तनाव बढ़ रहे हैं, घरेलू झगड़ों और परिवार टूटने की घटनाएं बढ़ रही हैं जिसका सीधा प्रभाव नारी जीवन पर पड़ा है ।

इन उलझनों और समस्याओं का महत्वपूर्ण कारण यह है कि आज भारतीय समाज की महिला तहज़ीब के जिस रास्ते पर बढ़ रही है उस पर आज़ादी का आकर्षक नारा भी है और पुरुष से बराबरी व सम्पन्नता के मधुर सपने भी ।

किन्तु, पश्चिमी सभ्यता की बुनियाद के आधार पर क़ायम इस रास्ते ने औरत को वहां पहुंचा दिया है जहां दूर-दूर तक मंज़िल के निशान नज़र नहीं आते । आज की औरत असमंजस में खड़ी, तथाकथित आज़ादी की तेज़ धूप में झुलसती, हैरान व परेशान अपनी मंज़िल को ढूंढ़ती है ।

आज की महिला यदि अपने विवेक से काम ले और मन की आंखें खोल कर देखे तो वह एक दोराहे पर खड़ी है । उसके सामने एक-दूसरा रास्ता भी है जिसकी शीतल किरणों में उसे अपनी मंज़िल साफ़ नज़र आएगी ।

यह दूसरा रास्ता इस्लाम का रास्ता है, जिस पर चलकर नारी सम्मान, सुरक्षा व पारिवारिक सुख पाती है । जहां उस पर ज़िम्मेदारियों का दोहरा बोझ नहीं डाला जाता बल्कि उसके व्यक्तित्व, स्वभाव और मानसिकता का ख़्याल रखा जाता है । उसे सम्मान पाने के लिए पुरुष बनने की ज़रूरत नहीं पड़ती । इस्लाम एक नारी को नारी के रूप में आदरणीय क़रार देता है । आज की तेज़ गति से भागती दुनिया में कुछ पल निकाल कर, महिला वर्ग को इस्लाम के इस रास्ते के बारे में अवश्य सोचना चाहिए, जो उसे अपनी पूरी निष्ठा, सहानुभूति और सम्मान के साथ अपनी ओर आमंत्रित कर रहा है ।



नारी कल्याण और घृणास्पद वैश्वीकरण

■ प्रो॰ चन्द्र प्रकाश आर्य

एक ओर हम अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाते हैं और नारी को प्राप्त अधिकारों व सम्मानों से फूले नहीं समाते किन्तु दूसरी ओर हम नारी को निरंतर देह व्यापार एवं वेश्यावृत्ति के गर्त में धकेलने जा रहे हैं। अवैध हथियारों एवं मादक पदार्थों की तस्करी के बाद देहव्यापार दुनिया को तीसरा सबसे बड़ा व्यावसाय बन चुका है। संयुक्त राष्ट्र के एक[1] अनुमान के अनुसार लगभग 120 बिलियन डॉलर का देहव्यापार प्रतिवर्ष होता है। प्रतिवर्ष 9 लाख लड़कियां विश्व के समस्त देशों में देह व्यापार के लिए अमेरिका में धकेल दी जाती है जिनमें अमेरिका के भीतरी आंकड़े अलग हैं। कुल मिलाकर यह संख्या बीस लाख पार कर जाती है।

रिपोर्ट के अनुसार वेश्यावृत्ति के लिए इसराईल एक बड़ा केन्द्र है। यूरोप और विखंडित रूस से लड़कियां यहां लायी जाती हैं और फिर उनको बेचकर उनसे वेश्यावृत्ति करायी जाती है। आज इस व्यापार में 25 प्रतिशत लड़कियां रूस की हैं। विखंडित रूस के गांवों, क़स्बों तक से इन बालाओं का विस्थापन अन्य देशों में हो रहा है। ग़रीबी और अभाव इसका प्रमुख कारण है। रिपोर्ट आगे कहती है कि देह व्यापार के दलालों द्वारा पिछले दशक में 1,75,000 महिलाएं प्रतिवर्ष वेश्यावृत्ति के लिए सोवियत यूनियन से बाहर के देशों में भेजी गयी हैं। लगभग सभी देशों में देहव्यापार के दलाल सक्रिय हैं। एक अन्य रिपोर्ट के अनुसार यह मानव देहव्यापार पूरे विश्व में फैला हुआ है। प्रतिवर्ष पूरे[2] विश्व में 6 से 8 लाख महिलाओं को इस व्यापार में धकेला जाता है।

आज वेश्यावृत्ति और देहव्यापार पूरे विश्व में खुले रूप में चल रहा है। वैश्वीकरण और उदारीकरण के इस युग में वेश्यावृत्ति/देह व्यापार का भी उदारीकरण और वैश्वीकरण हो चुका है। जर्मनी में[3] कोई भी लड़की/कालगर्ल स्वेच्छा से वेश्यावृत्ति को अपना सकती है। उन्हें औपचारिक लाइसेंस दिये जाते हैं। थाईलैंड में[4] देह व्यापार का व्यवसाय वहां सकल घरेलू उत्पादन का 2 से 14 प्रतिशत है। एक रिपोर्ट के अनुसार पाकिस्तान के लाहौर शहर[5] (हीरामंडी) में 17 क़ीमती बाज़ार वेश्याओं के हैं। नीदरलैंड में[6] वेश्यांएं आयकर देती हैं। यूनान (ग्रीस) में प्रति सप्ताह उनके स्वास्थ्य की जांच की जाती है। उदारीकरण के इस दौर में आज पूरे विश्व में देह व्यापार में लिप्त इन नारियों को सेक्स सेविकाएं/सेक्स वर्कर्ज कहकर इनके प्रति उदारता दिखायी जा रही है। अमेरिका के[7] कई राज्यों में सरकार बाक़ायदा लाइसेंस जारी करती है। ब्रिटेन में भी यही स्थिति है। स्वीडन, बेल्जियम और फिलीपींस में भी इसे क़ानूनी मान्यता मिली हुई है। रूस की स्थिति का वर्णन ऊपर हो चुका है। नृत्य और फिल्मों में काम करने आयी पूर्वी यूरोप की[8] बहुत-सी लड़कियां मुंबई में देह व्यापार का काम करती है। मुंबई में लोखंडवाला इलाक़े में बहुत-सी विदेशी महिलाएं वेश्यावृत्ति में लिप्त है।

स्वयं भारत की बात करते हैं। यूनाइटेड नेशनल डेवलपमेंट फंड फॉर वीमैन की रिपोर्ट के अनुसार[9] देश में लगभग 25 लाख वेश्याएं हैं। इनमें ¼ भाग 18 साल से कम आयु की हैं। प्रतिवर्ष 75 लाख महिलाएं अतिरिक्त रूप में इस देहव्यापार में झोंक दी जाती हैं। देश भर में 1100 रेडलाइट वाले चिन्हित इलाक़े हैं जिनमें पौने तीन लाख कोठों में ये वेश्याएं/तथाकथित सेक्स सेविकाएं पीढ़ी-दर-पीढ़ी नारकीय जीवन जीने को विवश हैं। भारत में दिल्ली[10], मुंबई, चेन्नई, कोलकाता जैसे महानगर इसके केन्द्र हैं। बिहार, उड़ीसा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, बंगाल तथा महाराष्ट्र में स्थिति चिंताजनक है। देह के दलालों को देश की राजधानी इस काम के लिए अच्छी लगती है। देह के दलाल ग़रीबी और आर्थिक तंगी से पीड़ित भोली-भाली लड़कियों को नेपाल से लाकर दिल्ली में देह व्यापार की दलदल में धकेल देते हैं। दिल्ली के जी॰बी॰ रोड/लालबत्ती[11] इलाक़े में एक से बढ़कर एक दलाल हैं जो वेश्यावृत्ति के व्यवसाय में अकूत सम्पत्ति इकट्ठी करते हैं। नेपाल देह व्यापार करने वाले दलालों के लिए ख़ास स्थान बन गया है क्योंकि यहां फैली घनघोर ग़रीबी का लाभ ये दलाल उठाते हैं। इस व्यापार से जुड़ी लड़कियां असहाय, निर्धन होने की

स्थिति में अपने घरों में वापस जाने पर उनके घर वाले उन्हें वापस स्वीकार नहीं करते । परिणामत: ये सारी उम्र ग़रीबी, बीमारी और बेबसी का जीवन जीती हैं । आंध्र प्रदेश के हैदराबाद और वारंगल जैसे शहरों में भी लड़कियों को ख़रीद कर नौकरी या विवाह की आड़ में बेचा जाता है । फिर इन्हें वेश्यालयों में पहुंचा दिया जाता है । उक्त रिपोर्ट के अनुसार इस समय दिल्ली में जी॰बी॰ रोड/लालबत्ती इलाक़े में 108 कोठे हैं जिनमें लगभग 3500 वेश्याएं देहव्यापार करती हैं । यहां छोटे-बड़े मकानों में बने तहख़ानों में यह व्यापार चलता है । सालों से चला आ रहा यह धंधा जारी रहता है ।

हर साल एक लाख लड़कियां नेपाल व बंगलादेश से यहां लायी जाती हैं । अकेले मुंबई में[12] 10 हज़ार नेपाली लड़कियां हैं । आंध्र के तटीय ज़िलों व रॉयल सीमा में इन दलालों का संगठित एवं व्यवस्थित जाल फैला हुआ है । मुंबई के सांगली और दक्षिण मुंबई में कमाठीपुरा[13] में लालबत्ती वाले इलाक़े इसके लिए मशहूर हैं । मुंबई की वे 75 हज़ार बार बालाएं जो रात-रात भर नाचकर अपनी रोज़ी-रोटी कमाती थी, आज कहां गयी ? वे भी आज विभिन्न तरीक़ों से अपना जिस्म बेचने को विवश हैं । पश्चिम बंगाल में तो वेश्याओं को सेक्स वर्कर्ज का नाम दिया गया है । कोलकाता में सोनागाछी व कालीघाट रेड लाइट इलाक़े प्रसिद्ध हैं या कुख्यात हैं ? कोलकाता में ही 30 अप्रैल 1996 को कोलकाता विश्वविद्यालय के इंस्टीच्यूट हॉल में[14] देश भर की देह बेचने वाली महिलाओं व उनके प्रतिनिधियों का पहला सम्मेलन हुआ था. जिसमें उन्होंने अपने अधिकारों की मांग की थी । उसी साल 22 अप्रैल 1996 को जादवपुर विश्व-विद्यालय में हुई एक बैठक में भी यह बात उठी थी कि यदि हम वेश्याएं यह पेशा छोड़ दें तो क्या समाज व अधिकारी वर्ग उनकी तथा उनके बच्चों की रोज़ी-रोटी की गारंटी लेंगे ।

चंडीगढ़ में भी देहव्यापार बढ़ रहा है । यहां दिल्ली, मुंबई और देश के विभिन्न भागों से लड़कियां लायी जाती हैं । इनमें से कुछ स्वेच्छा से धन कमाने/अपनी इच्छापूर्ति करने हेतु इस व्यवसाय में आती हैं । इसके पीछे सामाजिक एवं आर्थिक प्रतिष्ठा की लालसा भी काम करती हैं । किन्तु अधिकांशतया देह व्यापार में आने वाली लड़कियां मजबूरी या हालात का शिकार हैं । एक रिपोर्ट के अनुसार अब चंडीगढ़ में भी[15] देहव्यापार मुंबई, दिल्ली, कोलकाता तथा चेन्नई से कहीं अधिक दिखायी देता है । इस व्यापार को बढ़ावा देने में पुलिस अधिकारी, नौकरशाह, व्यापारी तथा राजनेता भी शामिल बताए जाते हैं ।

अब यह व्यवसाय विशेष वर्ग/आरक्षित वर्ग की सीमाओं को लांघकर[16] पांच सितारा होटलों, पॉश कालोनियों, ब्यूटी व मसाज पार्लरों तथा गली-कूचों तक पहुंच गया है । प्रशासन, ठेकेदार, व्यावयासी, नेता और अभिजात्य वर्ग का जाल/नेटवर्क बिछा हुआ है । अधिकांश लड़कियां आर्थिक मजबूरी के कारणों से देहव्यापार में आती है । बड़े-बड़े

प्रो॰ मुहम्मद क़मरुज़्ज़मा

9826809922
9826689853

पापुलर ट्रेवल्स

लग्जरी बस सेवा 2/2 (स्लीपर) के लिए सम्पर्क करें ।

अम्बिकापुर से बिलासपुर	रात्रि	23:20
अम्बिकापुर से रायपुर	प्रात:	03:00
अम्बिकापुर से डाल्टेनगंज	रात्रि	21:30
अम्बिकापुर से डाल्टेनगंज	रात्रि	22:25
अम्बिकापुर से डाल्टेनगंज	रात्रि	22:30
मननगढ़ से डाल्टेनगंज	रात्रि	19:10
अम्बिकापुर से मननगढ़	संध्या	05:00
अम्बिकापुर से चीरमीरी	प्रात:	06:30
अम्बिकापुर से मननगढ़	संध्या	16:10
रायगढ़ से डाल्टेनगंज	रात्रि	21:40

राम मंदिर के पास, अम्बिकापुर, सरगुजा (छत्तीसगढ़)

महानगरों के लालबत्ती वाले इलाक़ों में[17] वेश्यावृत्ति का धंधा करने वाली लड़कियों की अपेक्षा भारत के मध्यम स्तरीय शहरों में देहव्यापार का काम करने वाली लड़कियों की संख्या अधिक है । एक रिपोर्ट के अनुसार[18] बड़े-बड़े शहरों के बाद देहव्यापार से जुड़े माफ़िया ने छोटे शहरों की ओर भी रुख़ कर लिया है । मध्यम वर्ग की आर्थिक मज़बूती के कारण इस धंधे के लिए छोटे शहर ख़ास स्थान सिद्ध हो रहे हैं । दलालों की मध्यस्थता से ही यह धंधा तेज़ी से छोटे शहरों में बढ़ रहा है । अधिकतर लड़कियां ग़रीबी एवं आर्थिक अभावों से इस धंधे में धकेल दी जाती हैं ।

अब सवाल यह है कि देहव्यापार में लिप्त इन लड़कियों/महिलाओं या तथाकथित सेक्स सेविकाओं को क़ानूनी मान्यता दी जाए या न दी जाए ? एक सर्वे के अनुसार देश में लगभग 25 लाख वेश्याएं हैं परन्तु उनके पेशे को क़ानूनी मान्यता नहीं है । जब से योजना आयोग ने[19] भारत सरकार/प्रधानमंत्री को इन्हें क़ानूनी मान्यता देने का सुझाव दिया है, पूरे देश में बहस छिड़ गयी है । एक समाज सेवक का कहना है कि क़ानूनी मान्यता से इनकी ज़िन्दगी बदल जाएगी ।

दिल्ली की एक सेक्स वर्कर कहती हैं कि मां-बहन और पूरे परिवार को पालने के लिए उनके पास शरीर बेचने के अलावा और कोई रास्ता नहीं है । समाज में इज़्ज़त की बात तो दूर उन्हें आम नागरिक के हक़ भी नहीं मिलते । दूसरी ओर राष्ट्रीय महिला आयोग की पूर्वाध्यक्ष (पूर्णिमा आडवाणी) का कथन है कि देहव्यापार/वेश्यावृत्ति को वैध बना देने से व्यावसायिक स्तर पर देह शोषण की शिकार महिलाएं और अधिक शोषण का शिकार हो जाएंगी तथा इससे कोठा वालों/वालियों, दलालों एवं अन्य एजेंटों को ही फ़ायदा होगा । एक वेश्या की दशा पहले ही ख़राब है । हमें उसे और अधिक शोषित/पीड़ित करने की बजाए उसको बचाने की ओर ध्यान देना चाहिए । वेश्याओं के जीवन से पता चलता है कि कुल मिलाकर ये महिलाएं ग़रीबी/आर्थिक अभावों के कारण इस धंधे में आती हैं अथवा मजबूरी से या समाज द्वारा बदनाम किये जाने के कारण अथवा आपराधिक समूहों द्वारा ज़बरदस्ती इस धंधे में धकेल दी जाती हैं । एक बार आने पर वे इस धंधे से बाहर नहीं निकल सकतीं । देहव्यापार तथा इससे जुड़े एड्स के ख़िलाफ़ की समस्या का समाधान यह है कि क़ानूनी, सामाजिक एवं आर्थिक रूप

Abdul Malik
नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया: 9845311911
"हर क़र्ज़ सदक़ा है ।" (हदीस)
UNIQUE CREATIONS
Spl. in Unipole & Structure Hoarding
#4, Bldg NO. 29/35, 1st Main Road,
Opp. Masjid-e-Husna, SRK Garden,
Jayanagar East, Bangalore-560041
E-mail : uniquecreations2008@gmail.com

से महिलाओं का सशक्तिकरण किया जाए । आर्थिक रूप से सशक्त बनाकर ही उन्हें बचाया जा सकता है । संविधान की धारा 51(ए) के अनुसार हम ऐसे कार्य छोड़ दें जो महिलाओं के सम्मान को हानि पहुंचाते हैं !

एक पक्ष का यह भी कहना है कि वेश्यावृत्ति विश्व का प्राचीन व्यवसाय है । दुनिया की सभ्यताएं[20] वेश्यावृत्ति के सामने सिर झुकाए खड़ी हैं परन्तु वेश्या के रूप में स्त्री ही अकेली नहीं है । ग्राहक के रूप में पुरुष भी कर्ता या कारक है । जब तक बाज़ार में ख़रीदार हैं तब तक वेश्यावृत्ति का उन्मूलन/ख़ात्मा कैसे संभव है ? इस विशाल ग्राहक वर्ग/पुरुष को नज़रअंदांज़ क्यों किया जाता है ? क्या वह इसके लिए ज़िम्मेदार नहीं हैं ? राष्ट्रीय यौन रोग नियंत्रण कार्यक्रम के सर्वे के अनुसार[21] पुरुष ही अपने स्वार्थ–धन तथा काम/सेक्स के लिए युवतियों को इस धंधे में धकेलता रहा है । अत: इन पुरुषों/दलालों की ओर भी समाज को ध्यान देना होगा । वेश्यावृत्ति को समाप्त करने के लिए सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक व राजनीतिक रूप से उनको सुरक्षित व सुदृढ़ स्थान दिलाना होगा ताकि वे आत्मनिर्भर हो सकें ।

देह व्यापार के संबंध में कोलकाता में किये गये एक महत्वपूर्ण अध्ययन के अनुसार[22] इस पेशे में आयी 90 प्रतिशत महिलाएं ग्रामीण क्षेत्रों तथा सामाजिक रूप से दलित जातियों से संबंधित हैं । अभावग्रस्तता ही उन्हें इस अंधे कुएं में धकेलती हैं । उपभोग की वस्तु बना दी गयी महिला को उसके आर्थिक अधिकार देने होंगे । क़ानूनी बहस निरर्थक हैं । उन्हें आर्थिक रूप से सुदृढ़ करना होगा तथा सामाजिक रूप से सम्मान देना होगा । उसे समाज की मुख्यधारा से जोड़ना होगा । भोपाल में सम्पन्न वेश्यावृत्ति की समस्या पर एक अन्य गोष्ठी में यह विचार भी सामने आया कि इस घृणित सामाजिक अपराध में संलग्न अपराधियों के ख़िलाफ़ पूरे समाज को एकजुट होकर कार्यवाही करनी चाहिए । समाजशास्त्रियों का[23] कथन है कि कोई महिला अपनी खुशी से वेश्या नहीं बनती अपितु आर्थिक-सामाजिक परिस्थितियां उसे इस धंधे में आने को विवश करती हैं । इसलिए उसे अपराधी नहीं पीड़ित मानना चाहिए । अपराधी तो वे पुरुष हैं, ग्राहक हैं, दलाल हैं जो इसे इस धंधे में धकेलते हैं । अत: सरकार तथा प्रशासन को उन्हें इस दलदल से निकालना होगा तथा उनके पुनर्वास के लिए उचित प्रबंध करने की आवश्यकता है । पेट पालने के लिए, अपनी आजीविका कमाने के लिए किसी महिला को अपना शरीर बेचने पड़े, एक कल्याणकारी प्रभुता सम्पन्न राज्य/देश में इससे अधिक घृणास्पद/शर्मनाक और क्या हो सकता है ? पूरे देश के लिए, समाज के लिए, हिन्दू/मुस्लिम/सिक्ख/ईसाई आदि समुदायों को इस ओर सोचने की ज़रूरत है । राष्ट्रीय महिला आयोग, राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग, बाल एवं महिला/परिवार कल्याण मंत्रालय, अन्य सामाजिक व स्वैच्छिक संगठन/संस्थाएं आदि आगे आएं तथा इन पीड़ित महिलाओं की सहायता करें । क्या हम इतने बड़े राष्ट्र में 100-102 करोड़ की आबादी वाले देश में वेश्यावृत्ति एवं देहव्यापार में धकेली गयी इन लड़कियों/महिलाओं को बचा नहीं सकते ? इनको इस दलदल से बाहर नहीं निकाल सकते ?

0942516460 8, 09752189505

UNIQUE COLLECTION

Exclusive Branded Shop

For : Mens, Girls & Kids

Central Bank Road, Durga Chowk, Seoni (M.P.) 480661

आज राष्ट्र के विकास में आर्थिक सुरक्षा की चर्चा होती है । सकल[24] घरेलू उत्पाद/जी॰डी॰पी॰, वार्षिक विकास दर, प्रति व्यक्ति आय की दर, स्टॉक मार्किट तथा सेंसेक्स तथा अन्य व्यापारिक आंकड़ों की चर्चा होती है और जब सैन्य सुरक्षा की बात होती है तो रक्षा ख़र्च, सैन्य क्षमता, टैंक नाभिकीय अस्त्रों आदि की चर्चा होती है किन्तु हम भूल जाते हैं कि मानव सुरक्षा भी महत्वपूर्ण विषय है और इनमें स्त्रियां और बच्चे सर्वोपरि हैं । किसी देश के राष्ट्रीय और सामाजिक सुरक्षा के ढांचे में उस देश में निवास करने वाली महिलाओं और लड़कियों की सुरक्षा के स्तर को विकास का मूल संकेतक माना जाए । नारी नर की जननी है । मनुष्य को जन्म देने वाली है । आज देश की महिलाएं और लड़कियां भ्रूण हत्या, गर्भपात, बलात्कार, देह व्यापार, वेश्यावृत्ति आदि समाज की विकृतियों का शिकार हैं ।

संदर्भ

1. महामेधा (नयी दिल्ली 22 मई 2005) पृ॰ 13, फ़लक-कारवां देहव्यापार ।
2. The Tribune (Chandigarh 6/11/2005) Human Tratticking need for a global response by D.J. Singh.
3. The Tribune (Chandigarh 4/9/04) Saturday intre don't moralise, make it legal.
4. Do call of flesh.
5. पंजाब केसरी (अम्बाला 5/10/05)संपादकीय पृष्ठ, लाहौर में 17 क़ीमती बाज़ार वेश्याओं की सम्पत्ति ।
6. महामेधा (नयी दिल्ली 30/4/2005) पृष्ठ-8 सताव देह धर्म की क़ानूनी मान्यताकार (सोनन्द्र रावत)
7. अमर उजाला (नयी दिल्ली 7/02/2006) पृष्ठ 4, देहव्यापार को क़ानूनी दर्जा देने से क्या होगा ?
8. The Hindustan Times (New Delhi 25/12/2005) Gony matter p.1 Dirty danting flesh trade.
9. अमर उजाला (नयी दिल्ली 7/02/06) पृ॰ 4, देहव्यापार-क़ानूनी मान्यता ।
10. The H.T. (N. Delhi 24/3/2005) p.9 meet to discuss steps to check human trade.
11. दैनिक ट्रिब्यून (चंडीगढ़ 21/8/2005) रविवारी पत्रिका देह के दलालों को राजधानी क्यों भाती है? (एन॰के॰ अरोड़ा)।
12. 'महामेधा (नयी दिल्ली 30/4/2005) पृ॰ 8, सवाल देहधर्म की क़ानूनी मान्यता का (ज्ञानेन्द्र रावत)।
13. The Hindustan Times (N. Delhi) p. 13, A pound of flesh.
14. अमर उजाला (नयी दिल्ली 29/10/2005) पृ॰ 4, वेश्यावृत्ति को ख़त्म करना चाहते हैं या वेश्याओं को?
15. The Tribune (Chandigarh 4/9/2004) saturday entre call of cash.
16. महामेधा (नयी दिल्ली 30/4/2005) पृ॰ 8, सवाल देहधर्म...।
17. The Tribune (Chandigarh 20/5/2005) p. 11, The law and sexual exploitation.
18. 'दैनिक भास्कर' (पानीपत 2/09/2005) पृ॰ 8, (तेज़ी से फल-फूल रहा है देहव्यापार)।
19. दैनिक जागरण (पानीपत 23/10/05) पृ॰ 7, कुछ अलग से 'वेश्यावृत्ति व समलैंगिकता को क़ानूनी जामा' ।
20. अमर उजाला (नयी दिल्ली 29/10/2005) पृ॰ 4, (वेश्यावृत्ति को ख़त्म करना चाहते हैं या वेश्याओं को?)।
21. महामेधा (नयी दिल्ली 20/4/2005) पृ॰ 8, सवाल देहधर्म का?
22. दैनिक भास्कर (पानीपत 29 सितम्बर 2005) पृ॰ 6, गंगा की सफ़ाई गंगोत्री से क्यों न शुरू हो ? (जसविन्द्र)
23. अमर उजाला (नयी दिल्ली 7/02/2006) पृ॰ 4, देहव्यापार को क़ानूनी दर्जा देने से क्या होगा ?
24. दैनिक जागरण (पानीपत 9/4/2006) पृ॰ 6, मिसाल बनी मुख़्तारन माई (समाज में महिलाओं के कल्याण को राष्ट्रीय सुरक्षा का मूल संकेतक...सी॰ उदय भास्कर)।

HINDUSTAN TRAVELS

Prop.
ABDUL RASHID
Mob : 9425254335



Ambikapur to Bilaspur 4:30 (Morning)
Vishrampur to Bilaspur 4:25 (Morning)
Raipur to Ambikapur 9:20 (Night)

Address : Implipara, Ambikapur, Surguja-497001 (C.G)

सत्याग्रह

■ मुंशी प्रेमचन्द

हिज़ एक्सेलेंसी वायसराय बनारस आ रहे थे । सरकारी कर्मचारी, क्या छोटे, क्या बड़े सभी उनके स्वागत की तैयारी कर रहे थे । इधर कांग्रेस ने शहर में हड़ताल करने की घोषणा कर दी थी, जिससे सरकारी कर्मचारियों में बड़ी हलचल थी । एक ओर सड़कों पर झंडियां लगायी जा रही थीं, सफ़ाई हो रही थी, पंडाल बन रहा था और दूसरी ओर फ़ौज व पुलिस के सिपाही संगीनें चढ़ाये शहर की गलियों और सड़कों पर क़वायद करते फिर रहे थे । अधिकारियों की सरतोड़ कोशिश थी कि हड़ताल नहीं होने पाये, मगर कांग्रेस वालों को धुन थी कि हड़ताल हो और ज़रूर हो । अगर अधिकारियों को पाश्विक शक्ति पर नाज़ है तो हमें आध्यात्मिक शक्ति पर भरोसा है । इस बार दोनों की परीक्षा हो जाए कि मैदान किसके हाथ रहता है ।

लाट साहब चाहें तो आज रेल बन्द कर दें, डाक बन्द कर दें, माल का आना-जाना बन्द कर दें, तब बताओ क्या करोगे ? तुम उनसे भाग कर कहां जा सकते हो ? है कहीं ठिकाना ? इसलिए जब इस देश में और इन्हीं के अधीन रहना है तो इतना झगड़ा क्यों मचाते हो ? याद रखो तुम्हारी जान उनकी मुट्ठी में है । तुम झाड़ू से आंधी को रोकने चले हो । बाज़ार बन्द नहीं होना चाहिए नहीं तो मैं अन्न जल त्याग कर प्राण दे दूंगा ।

मजिस्ट्रेट घोड़े पर सवार होकर सुबह से शाम तक दुकानदारों को धमकियां देता-फिरता कि एक-एक को जेल भिजवा दूंगा । यह करूंगा और वह करूंगा । दुकानदार हाथ जोड़कर कहते कि हुजूर राजा हैं, जो चाहे कर सकते हैं, मगर हम क्या करें ? कांग्रेस वाले हमें जीता न छोड़ेंगे । हमारी दुकानों पर धरना मारेंगे । कुएं में गिरेंगे, भूख हड़ताल करेंगे, कौन जाने दो चार जान ही दे दें तो हमारे मुंह पर सदा के लिए कालिक लग जाएगी । हुजूर ! उन्हें कांग्रेस वालों को समझा दें तो हमारे ऊपर बड़ी कृपा होगी । हड़ताल न करने से हमारा कुछ नुक़सान थोड़े ही है । देश के बड़े-बड़े आदमी आएंगे, हमारी दुकानें खुली रहेंगी तो एक के दो मिलेंगे, महंगे सौदे बेचेंगे, मगर क्या करें उन पाखंडियों पर कोई बस नहीं चलता ।

राय हरिनंदन सहाय, राजा लालचन्द और ख़ान बहादुर मौलवी महमूद अली तो सरकारी अधिकारियों से भी अधिक बेचैन थे । मजिस्ट्रेट के साथ भी और अकेले भी कोशिश करते थे । अपने मकानों पर बुलाकर दुकानदारों को समझाते, मिन्नत-समाजत करते, आंखें दिखाते, इक्के-बग्घी वालों को धमकाते, मज़दूरों की ख़ुशामद करते, मगर कांग्रेस के मुट्ठी भर आदमियों का कुछ ऐसा दबदबा छाया हुआ था कि कुंजड़िनों ने भी निडर होकर कह दिया कि हुजूर चाहे मार डालो, मगर दुकान तो नहीं खुलेगी, नाक न कटवाऊंगी । सबसे बड़ी आशंका यह थी कि पंडाल बनाने वाले मज़दूर, लोहार और बढ़ई काम न छोड़ दें ।

राय साहब ने कहा–"हुजूर दूसरे शहरों से दुकानदार बुलवा लें और एक बाज़ार अलग खोलें ।"

ख़ान साहब ने फ़रमाया–"समय इतना कम है कि दूसरा बाज़ार तैयार नहीं हो सकता । हुजूर कांग्रेस वालों को गिरफ़्तार कर लें या उनकी जायदादों को ज़ब्त कर लें, फिर देखिये कैसे क़ाबू में आते हैं ।"

राजा साहब बोले–"इस ज़बरदस्ती से तो लोग और झिल्लाएंगे । कांग्रेस वालों से हुजूर कहें कि हड़ताल न करो तो सबको सरकारी नौकरी दे दी जाएगी । उसमें अधिकतर बेकार लोग भरे हैं । लालच दिखाने से ख़ुश हो जाएंगे । मगर मजिस्ट्रेट को कोई राय पसन्द नहीं आयी, यहां तक कि वायसराय के आने में केवल तीन दिन शेष रह गये ।

(2)

आख़िर राजा साहब को एक उपाय सूझा, क्यों न हम भी आध्यात्मिक शक्ति से काम लें। आख़िर कांग्रेस वाले धर्म और आध्यात्मिक बल के नाम पर ही तो यह सब कर रहे हैं। हम लोग भी उन्हीं का अनुसरण करें, शेर को उसके मान्द में पछाड़ दें। कोई आदमी ऐसा होना चाहिए जो भूख हड़ताल करे कि दुकानें नहीं खुलीं तो जान दे दूंगा। यह आवश्यक है कि वह ब्राह्मण हो और ऐसा हो जिसको शहर के लोग मानते हों और उसका आदर करते हों। यह बात अन्य बंधुओं के दिल में भी समा गयी। वे उछल पड़े। राय साहब ने कहा कि बस अब मैदान मार लिया। अच्छा ऐसा पंडित कौन है ?

पंडित गदाधर शर्मा ?

राजा–''नहीं, उसे कौन मानता है, केवल अख़बारों में लिखा करता है। शहर के लोग उसे क्या जानें।''

राय साहब–''दमड़ी ओझा तो है इसी ढंग का ?''

राजा–''नहीं कॉलेज के छात्रों के अलावा उसे कौन जानता है।''

राय साहब–''पंडित मोटे राम शास्त्री ?''

राजा–बस-बस, आपने ख़ूब सोचा, बेशक वह है इसी ढंग का। उसी को बुलाना चाहिए। विद्वान है, धर्म कर्म से रहता है, होशियार भी है। वह अगर हाथ आ जाए तो बाज़ी हमारी है।

राय साहब ने तुरंत ही पंडित मोटे राम के घर पर संदेश भेजा। उस समय शास्त्री जी पूजा कर रहे थे। संदेश पाते ही शास्त्री जी ने पूजा समाप्त की और चल पड़े।

''राजा साहब ने बुलाया है–धन्य भाग्य'' पत्नी से बोले आज चन्द्रमा कुछ बलवान प्रतीत होता है। कपड़े लाओ देखूं क्यों बुलाया है।''

पत्नी ने कहा, ''खाना तैयार है, खाते जाओ, न जाने कब लौटने का अवसर मिले।''

मगर शास्त्री जी ने आदमी को इतनी देर खड़ा रखना उचित नहीं समझा। जाड़े के दिन थे। हरी बानात की अचकन पहनी, जिस पर लाल संजाफ़ थी। गले में एक ज़री का दुपट्टा डाला। सिर पर बनारसी साफ़ा बांधा। लाल चौड़े किनारे वाली रेशमी धोती पहनी और खड़ाऊं पर चले। उनके चेहरे पर तेज़ बरसता था। दूर से ही प्रतीत होता था कि कोई महात्मा आ रहे हैं। रास्ते में जो कोई

OMNI

India's First & Only
ISO Certified Patch Company

RVA

Authorised Distributor
UNIPATCH
RUBBER LIMITED

"मैंने तो जिन्नों और मनुष्यों को केवल इसलिए पैदा किया कि वे मेरी बन्दगी करें।"

ZUBAIR A. MAZHARI

SANGAM TYRE
Near Union Bank,
Main Road Azad Nagar,
Jamshedpur-832110
Mob. : 9431757549
9835162794

मिलता सिर झुकाता । कितने ही दुकानदारों ने खड़े होकर पा लागन किया । आज काशी का नाम इन्हीं के दम से चल रहा है, नहीं तो और कौन है । इस ठाठ से पंडित जी राजा के घर पर पहुंचे । तीनों दोस्तों ने खड़े होकर उनका स्वागत किया । ख़ान साहब बोले, ''कहिये पंडित जी हाल तो अच्छा है । आप तो नुमाइश में रखने के लायक़ हैं । आपका वज़न तो दस मन से कम नहीं होगा ।''

राय साहब : ''एक मन ज्ञान के लिए दस मन बुद्धि चाहिए इस हिसाब से एक मन बुद्धि के लिए दस मन का शरीर तो ज़रूरी है ।''

राजा साहब : ''आप लोग नहीं समझते, बुद्धि एक तरह का नज़ला है, जब मस्तिष्क में नहीं समाता तो शरीर में आ जाता है ।''

हंसी-मज़ाक़ के बाद पंडित के सामने वर्तमान समस्या प्रस्तुत की गयी और उसके समाधान का जो उपाय सोचा गया था वह भी बताया गया । राजा जी बोले बस यह समझ लीजिए कि आपके भविष्य का निर्णय अब आपके हाथ में है । हड़ताल अगर नहीं हुई तो उम्र भर किसी के दरवाज़े पर जाने की आपको ज़रूरत नहीं पड़ेगी । कोई ऐसा व्रत ठानिये कि शहर वाले थर्रा उठें ।

मोटे राम ने गंभीरता से उत्तर दिया, यह तो कोई कठिन कार्य नहीं, मैं तो ऐसे-ऐसे उपाय कर सकता हूं कि आकाश से वर्षा करा दूं, मरी (हैज़ा) को भी दूर कर दूं । अनाज का भाव घटा-बढ़ा दूं । फिर कांग्रेस वालों को हरा देना तो कोई बड़ी बात नहीं । अंग्रेज़ी पढ़े-लिखे लोग समझते हैं कि जो काम वे कर सकते हैं वह कोई नहीं कर सकता, किन्तु गुप्त विद्याओं का उन्हें ज्ञान नहीं ।

''तब तो यह कहना चाहिए कि आप साक्षात ईश्वर हैं, हमें क्या पता था नहीं तो इतने दिनों क्यों परेशान होते ।''

मोटे राम : ''मैं छुपे धन का पता लगा सकता हूं । पुरखों को बुला सकता हूं । केवल गुण के ग्राहक चाहिए, संसार में गुणवानों की कमी नहीं है, गुण के पारखियों की कमी है ।''

राजा : ''भला इस अनुष्ठान के लिए आपको क्या भेंट करना होगा ?''

मोटे राम : ''जो आपकी इच्छा ।''

राजा : ''कुछ बता सकते हैं, यह कौन-सा अनुष्ठान होगा ?''

मोटे राम : ''बिना भोजन व्रत के सात मंत्रों का जाप होगा, सारे शहर में हलचल न मचा दूं तो मोटे राम नाम नहीं ।''

राजा : ''तो फिर कब से ?''

मोटे राम : आज ही हो सकता है, हां पहले देवताओं के आह्वाण के लिए कुछ रुपये दिला दीजिए ।''

पंडित जी को रुपये मिल गये वह खुश-खुश घर आये । पत्नी से सारा हाल कहा, उसने चिंतित स्वर में कहा : तुमने बेकार यह रोग अपने सिर ले लिया । भूख न सह सके तो ? सारे शहर में बदनामी हो जाएगी, लोग हंसी उड़ाएंगे । रुपये लौटा दो ।''

मोटे राम बोले, ''भूख कैसे सहन न होगी । मैं ऐसा

SHATABDI FOUNDATION, GAYA

- Started Shatabdi Public School in 200 I with primary classes, has now developed into a 10+2 CBSE affiliated educational institution with quality education in modern subjects with moral orientation.
- Presently there are around 1000 students who are provided modern teaching facilities. The Foundation also adopts poor/ orphan students
- Under Upwardbound .scheme, another project has been launched for preparation of +2 students to compete in Entrance Test for Engineering, Medical and other professional & technical courses.
- Our immediate needs are Purchase one more school bus, Construction of Prayer Hall & Purchase of 30 Computers.

Ahle Khair Hazrat are Requested to Donate.

Kindly send your cheque/draft in favour of "Shatabdi Foundation, Gaya".

(ProfZ.H.Khan) Chairman — *(Prof M. B. Zaman)* Secretary

Shatabdi Public School, Katari Hill Road, Gaya-823001 (Bihar) INDIA

मूर्ख थोड़े ही हूं कि ऐसे ही जा बैठूंगा । पहले मेरे खाने की व्यवस्था करो । इमरतियां, लड्डू, रसगुल्ले मंगाओ, पेट भर खा लूं फिर आधा सेर मलाई खाऊंगा । उसके ऊपर आधा सेर बादाम की तह जमाऊंगा । बची-खुची कसर मलाई वाले दही से पूरी करूंगा । फिर देखूंगा कि भूख कैसे पास आती है । तीन दिन तो सांस ही न जावेगी । भूख को कौन चला दे । इतने में तो सारे शहर में खलबली मच जावेगी । भाग्य का सूर्योदय हुआ है । बाज़ार बन्द न हुआ तो समझो मालामाल हो जाऊंगा, नहीं तो गांठ से क्या जाता है, सौ रुपये तो हाथ लग ही चुके हैं ।''

इधर खाने की व्यवस्था हुई उधर पंडित जी ने शहर में घोषणा करा दी कि शाम के समय टाउन हाल के मैदान में मोटे राम शास्त्री देश की राजनीतिक समस्या पर व्याख्यान देंगे ।

पंडित जी हमेशा राजनीति से दूर रहते हैं, आज वे इन्हीं मुद्दों पर भाषण देने जा रहे हैं, सुनना चाहिए, लोगों में जिज्ञासा उत्पन्न हुई । शाम के समय पंडित जी किसी तरह वहां पहुंचे । पेट इतना भरा हुआ था कि चलना कठिन हो रहा था, जैसे ही वे मंच पर पहुंचे लोगों ने उन्हें सादर दंडवत प्रणाम किया ।

मोटे राम बोले, ''नगर वालों, व्यापारी बंधुओं, सेठों और महाजनों ! मैंने सुना है कि तुम लोगों ने कांग्रेस वालों के कहने में आकर बड़े लाट साहब के यहां आने के अवसर पर हड़ताल करने का मन बना लिया है । यह कितनी नमकहरामी है, वे चाहें तो आज लोगों को तोप के मुंह पर उड़ा दें, सारे नगर को खुदवा डालें । राजा हैं हंसी-ठट्ठा नहीं । वे छूट दिये जाते हैं, तुम्हारी ग़रीबी पर दया करते हैं तो तुम गउवों की भांति हत्या के बल पर खेत चरने को तैयार हो ।

लाट साहब चाहें तो आज रेल बन्द कर दें, डाक बन्द कर दें, माल का आना-जाना बन्द कर दें, तब बताओ क्या करोगे ? तुम उनसे भाग कर कहां जा सकते हो ? है कहीं ठिकाना ? इसलिए जब इस देश में और इन्हीं के अधीन रहना है तो इतना झगड़ा क्यों मचाते हो ? याद रखो तुम्हारी जान उनकी मुट्ठी में है । तुम झाड़ू से आंधी को रोकने चले हो । बाज़ार बन्द नहीं होना चाहिए नहीं तो मैं अन्न जल त्याग कर प्राण दे दूंगा ।''

एक आदमी ने कहा, ''महाराज आपके प्राण निकलते-निकलते महीना भर से कम न लगेगा । तीन दिन में क्या होगा ?''

मोटे राम ने गरज कर कहा, ''प्राण शरीर में नहीं रहता, ब्रह्मांड में होता है । मैं चाहूं तो योग करके अभी प्राण त्याग दूं । मैंने तुम्हें चेतावनी दे दी अब तुम जानो तुम्हारा काम । मेरा कहना मानोगे तो तुम्हारा कल्याण होगा न मानोगे तो हत्या लगेगी । दुनिया में कहीं मुंह न दिखा सकोगे, यह लो मैं आसन जमाता हूं ।

(3)

शहर में यह ख़बर फैली तो लोगों के होश उड़ गये । अधिकारियों की इस नयी चाल ने उनको स्तब्ध-सा कर दिया । कांग्रेस कार्यकर्ता तो कहते थे कि यह सब ढकोसला है । सरकारी शुभचिंतकों ने कुछ दे दिलाकर यह स्वांग खड़ा किया है । जब और कोई बस न चला । सेना, पुलिस, क़ानून सभी उपायों से हार गये तो यह नयी रणनीति अपनायी है । यह और कुछ नहीं राजनीति है । पंडित जी ऐसे कहां के देश के सेवक थे कि देश की स्थिति से चिंतित होकर व्रत ठानते । उन्हें भूखों मरने दो, दो दिन में बदल जाएंगे । इस नयी चाल की जड़ अभी से ही काट देनी चाहिए । कहीं यह चाल चल गयी तो समझ लो कि अधिकारियों को एक नया हथियार मिल जाएगा और वे हमेशा इसका प्रयोग करेंगे ।

लेकिन शहर के बनिये महाजन, जो धार्मिक मामलों में सामान्यतया डरपोक होते हैं, ऐसे घबरा गये कि उन पर इन बातों का प्रभाव भी नहीं पड़ता था । वे कहते थे, आप लोगों के कहने से सरकार से बुरे बने नुक़सान उठाने को तैयार हुए, कारोबार छोड़ दिया । कितनों के दीवाले निकल गये । अधिकारियों को मुंह दिखाने योग्य नहीं रह गये । पहले जहां जाते थे अधिकारीगण आइये सेठ जी कहकर सम्मान देते थे । अब रेल गाड़ियों में धक्के खा लेते हैं, मगर कोई नहीं सुनता । यह सब सहा और सहेंगे, मगर धर्म के मामले में आप लोगों का कहना नहीं मान सकते । जब एक विद्वान कुलीन और धर्म-कर्म वाला ब्राह्मण हमारे ऊपर अन्न जल त्याग रहा है, तब हम कैसे भोजन करें और पैर फैलाकर सोएं ? कहीं मर गया तो भगवान के सामने क्या जवाब देंगे ?

तात्पर्य यह है कि कांग्रेस वालों की एक न चली व्यापारियों का एक प्रतिनिधिमंडल रात को नौ बजे पंडित जी

की सेवा में उपस्थित हुआ । पंडित जी ने आज खाना तो ख़ूब डटकर खाया था, लेकिन इस प्रकार खाना उनके लिए कोई असाधारण बात न थी । महीने में सामान्यत: बीस दिनों वे अवश्य ही आमंत्रित होते थे और वहां पेट भरकर खाना स्वाभाविक बात है । अपने साथियों की देखा-देखी, यजमान के आग्रह और भोजन के स्वादिष्ट होने के कारण खाना हद से ज़्यादा हो ही जाता था । पंडित जी की पाचन शक्ति ऐसी परीक्षाओं में पास होती रहती थी । इस समय भी खाने का समय हो जाने के कारण उनका मन डोलने लगा था, जी चाहता था किसी फेरीवाले से कुछ ले लें, मगर अधिकारियों ने उनकी रक्षा के लिए वहां आदमी खड़ा कर दिया था । वे हटने का नाम नहीं लेते थे । पंडित जी की बुद्धि अभी इसी समस्या का समाधान कर रही थी कि इन शैतानों को कैसे टालूं ।

वे अभी इसी चिंता में थे कि व्यापारियों का प्रतिनिधिमंडल आ पहुंचा । पंडित जी कोहनी के बल लेटे हुए थे संभल कर बैठ गये । प्रतिनिधिमंडल के अगुआ ने उनके पांव छूकर कहा : महाराज हमारे ऊपर आपने क्यों कोप किया है, आपकी जो आज्ञा हो हमारे सिर आंखों पर । आप उठिये खाना-पीना शुरू कीजिए । हमें नहीं मालूम था कि आप सचमुच यह व्रत ठानने वाले हैं, नहीं तो हम पहले ही आपसे विनती करते । अब कृपा कीजिए, दस बजे का समय है, हम आपकी बात कभी नहीं टालेंगे ।

''ये कांग्रेस वाले तुम्हें मलियामेट करके छोड़ेंगे । आप तो डूबते ही हैं तुम्हें भी अपने साथ ले डूबेंगे । बाज़ार बन्द रहेगा तो इससे तुम्हारा घाटा होगा, सरकार को क्या । तुम नौकरी छोड़ दोगे तो ख़ुद भूखे मरोगे, सरकार को क्या । न जाने उन सभी को क्या सनक सवार हो गयी है । तुम उनके बहकावे में न आओ । क्यों दुकानें खुली रखोगे ?''

सेठ : ''शहर भर के आदमियों की पंचायत न हो जाए तब तक हम कैसे इसका ज़िम्मा ले सकते हैं ? कांग्रेस वालों ने कहीं लूट मचा दी तो कौन हमारी सहायता करेगा ? आप उठिये भोजन कीजिए, हम कल पंचायत करके जैसा कुछ होगा आपकी सेवा में प्रस्तुत करेंगे ।''

मोटे राम बोले, ''तो फिर पंचायत करके आना ।''

प्रतिनिधिमंडल जब निराश होकर लौटने लगा तो पंडित जी ने कहा, किसी के पास संधी है क्या ?

एक व्यक्ति ने डिब्या निकाल कर दी । (जारी)

Khalid Nesar

بسم اللہ الرحمن الرحیم

9334141280
9334620090

خورشید بک ڈپو

دینی ودرسی کتابوں، رسالوں اور اخبارات کے ریٹیل اور ہول سیل کا واحد مرکز

KBD

KHURSHID BOOK DEPOT

Spl. in :

NCERT Urdu Books

Supply in all over Jharkhand

Road No. 2, Azad Nagar, Jamshedpur-832110

असह्य होती नैतिकता

"इटली के उत्तरी शहर नोवार में बुर्क़ा पहनकर निकलने वाली मुस्लिम महिला पर पुलिस ने जुर्माना किया है । उस महिला पर पुलिस ने 500 यूरो (क़रीब 29 हज़ार रुपये) का जुर्माना किया । देश में बुर्क़े पर जुर्माना किये जाने का यह संभवत: पहला मामला है । हालांकि महिला इसके ख़िलाफ़ अपील कर सकती है । इस शहर में जनवरी में क़ानून बनाकर सार्वजनिक स्थानों में बुर्क़ा बैन किया गया था ।"

"अलप्पुझा (केरल) के एक क्रिश्चियन स्कूल पर आरोप है कि उसने एक मुस्लिम लड़की का इसलिए नाम काट दिया, क्योंकि वह सिर पर स्कार्फ़ बांधने पर अड़ी थी । स्कूल का कहना था कि स्कार्फ़ पहनना ड्रेस कोड का उल्लंघन है । इस स्कूल में नबाला 10वीं में पढ़ती थी, जिसे ज़बरदस्ती ट्रांसफर सर्टिफिकेट थमा दिया गया ।"

(नवभारत टाइम्स, 5 मई 2010)

अच्छाई और बुराई की लड़ाई, जिसमें अन्ततोगत्वा जीत तो अच्छाई की ही होनी है, लेकिन अभी काफ़ी समय से बुराई भौतिक दृष्टिकोण से शक्तिशाली हो गयी है । हालांकि वह अच्छाई को प्रमाण और तर्क के आधार पर पराजित नहीं कर सकती है, इसलिए वह इसे शक्ति और बल के आधार पर ज़बरदस्ती दबाने के प्रयास में लगी हुई है । आज दुनिया भर में इसका प्रदर्शन हो रहा है । बुराई ने कुछ ऐसी चालें चली हैं कि उसने शक्ति और सत्ता को अपने पक्ष में कर लिया है । जनता को धोखा देकर वे उसके प्रतिनिधि बन गये हैं और उत्तरदायित्व की भावना को त्याग कर वे संसाधनों के स्वामी बन बैठे हैं । मीडिया का प्रयोग अपने स्वार्थ में करके पूरे वातावरण को बिगाड़ दिया है । उन्होंने झूठ को इस प्रकार प्रस्तुत करना प्रारंभ किया कि सामान्यजनों के पास उसे स्वीकार करने के अलावा कोई विकल्प ही नहीं बचा । जो लोग इससे सहमत नहीं हैं, उनकी असहमति कोई अर्थ नहीं रखती ।

बुराई का दायरा तेज़ी से फैल रहा है । बात केवल नक़ाब या स्कार्फ़ को प्रतिबंधित करने तक नहीं है, बल्कि समलैंगिकता और विवाहपूर्व यौन संबंधों को भी, न केवल यह कि बुरा नहीं समझा जा रहा है, बल्कि इन्हें समाज के विकास के लिए आवश्यक क़रार दिया जा रहा है । यह बुराइयां अब यूरोप या अमेरिका तक ही सीमित नहीं रह गयी हैं, बल्कि महासागरों को फलांग कर दुनिया के सभी देशों में पहुंच चुकी हैं । मीडिया के माध्यम से बुराई ने ऐसा वातावरण बना दिया है कि हमारे देश में भी अब लड़कियां विवाहपूर्व यौन संबंधों पर न केवल यह कि कोई हिचक नहीं महसूस करती हैं, बल्कि इसे अपना अधिकार समझकर इसके लिए लड़ाई लड़ती हैं ।

सत्य और अच्छाई के समर्थकों को अपने प्रयास जारी रखने चाहिए इस विश्वास के साथ कि जीत अन्ततोगत्वा सत्य की ही होगी । साथ ही हमें यह भी याद रखना चाहिए कि प्रकृति का नियम यह है कि वह ऐसे काम किसी अदृश्य शक्ति के माध्यम से नहीं, बल्कि मनुष्यों के माध्यम से ही कराती है ।

स्वागत योग्य

"शादी समारोह के आयोजनों पर शान दिखाने के लिए हो रही करोड़ों रुपये की बर्बादी रोकने की दिशा में पहल हुई है । गुर्जर समाज उत्थान समिति के बैनर तले 80 गांव के किसानों ने दादरी, गौतमबुद्ध नगर, यू०पी० में महापंचायत की । इसमें शादी समारोह सादगी से आयोजित करने का निर्णय लिया गया ।" ('नवभारत टाइम्स', 4 मई 2010)

गुर्जर समाज का यह फ़ैसला स्वागतयोग्य है । हम सभी को इसका अनुसरण करना चाहिए । शादी विवाह के अवसरों पर धन का अपव्यय पैसे वाले लोगों के बीच एक फ़ैशन के रूप में शुरू हुआ होगा, जो धीरे-धीरे उनके लिए नाक का मुद्दा बन गया । जो चीज़ फ़ैशन के रूप में शुरू हुई थी उसे उस वर्ग ने अपने लिए अनिवार्य कर लिया और फिर देखा-देखी यह बुराई पूरे समाज में फैल गयी । कोई भी वर्ग इससे अछूता नहीं रह गया । वह वर्ग भी नहीं, जिनके पास एक ईश्वरीय विधान है, जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उनका मार्गदर्शन करता है । उनके यहां विवाह को आसान बनाने पर ज़ोर दिया गया है और इसे सादगी से आयोजित करने के निर्देश दिये गये हैं । इतना ही नहीं अपव्यय की निंदा करते हुए क़ुरआन कहता है--नातेदारों, मुहताजों और मुसाफ़िरों को

उनका हक़ दो (जो तुम्हारे माल में है) और फ़ुज़ूलख़र्ची से बचो, निश्चय ही फ़ुज़ूलख़र्ची करने वाले शैतान के भाई हैं। (क़ुरआन, 17:26-27)

अगर इन निर्देशों पर अमल किया जाता तो समाज बहुत-सी बुराइयों से बच जाता। शादी-विवाह के मामले को इतना ख़र्चीला बना दिया गया है कि बहुत-से लोग समय पर शादी करने की स्थिति में नहीं रहते। लड़कियों की शादी तो समस्या है ही, लड़कों के लिए भी शादी करना कोई आसान नहीं रह गया है। हालांकि उनकी आमदनी इतनी है कि वे एक परिवार बना सकें और गृहस्ती संभाल सकें लेकिन उनके पास विवाह में ख़र्च करने के लिए (अनावश्यक किन्तु अनिवार्य) धन नहीं है। इस चक्कर में उनकी आयु बढ़ती जा रही है और स्वाभाविक ज़रूरतें उन्हें कुमार्गगमन की ओर ले जाती है। विवाह को अव्यावहारिक और कठिन बना देने के कारण ही ऐसी स्थिति पैदा हुई है कि आज समाज में विवाहपूर्व यौन संबंधों को स्वीकार किया जाने लगा है। विवाह में होने वाले अपव्यय पर रोक लगाकर समाज को बहुत-सी बुराइयों से बचाया जा सकता है। गुर्जर समाज का निर्णय स्वागतयोग्य और अनुसरणीय है।

ज़हर पीने को अभिशप्त

"सुप्रीम कोर्ट ने केन्द्र सरकार को कोला मामले में आड़े हाथों लिया। कोर्ट ने केन्द्र से उस नोटिफिकेशन को जारी करने में देरी की वजह पूछी, जिसके बाद कोका कोला और पेप्सी जैसे सॉफ्ट ड्रिंक्स मैन्युफैक्चरर्स को प्रॉडक्ट में मिलाये गये अस्ल कंटेंट की मात्रा के बारे में बताना ज़रूरी हो जाएगा। सरकार ने इस नोटिफिकेशन को फ़ौरन इशू करने में असमर्थता जताते हुए इसके लिए तीन महीने का वक़्त और मांगा तो जज जस्टिस ज्ञान सुधा मिश्रा ने फूड सेफ्टी एंड स्टैंडर्ड अथॉरिटी (एफ॰एस॰एस॰ए॰) के वकील पर लगभग बरसते हुए पूछा—क्या तब तक पब्लिक को ज़हर पीना होगा ?"

(नवभारत टाइम्स, 5 मई 2010)

कोका कोला और पेप्सी पर उठने वाला यह कोई पहला विवाद नहीं है और न ही इस पेय के ज़हरीले होने में कोई संदेह है। इससे पहले भी इनमें कीटनाशक पदार्थों की अधिक मात्रा को लेकर विवाद उठते रहे हैं। लेकिन ये कंपनियां इन पेय पदार्थों के इंग्रिडिएंट्स को बताने के लिए किसी तरह तैयार नहीं है। ये दुनिया भर में अपना व्यापार करती हैं लेकिन किसी भी देश के नियमों एवं क़ानूनों को मानने के लिए तैयार नहीं हैं। इनके सेवन से चाहे कितने ही लोगों का स्वास्थ्य ख़राब हो, कितने ही लोग शारीरिक और मानसिक रोगों का शिकार हो जाएं, इन कंपनियों को कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। इन्हें तो अपने कारोबार से मतलब है, जो किसी भी क़ीमत पर चलता रहना चाहिए।

वास्तव में ये कंपनियां उन लोगों की हैं, जिनकी मुट्ठी में अमेरिका की भी सत्ता है। ये वे लोग हैं, जो दुनिया के देशों के भाग्य के फ़ैसले करते हैं। कई बार तो केवल अपने हथियारों के परीक्षण के लिए ही ये दो देशों को लड़ा देते हैं। अपना नज़रिया ज़बरदस्ती थोपने के लिए ये देश के भीतर जनविद्रोह करा देते हैं। जनता का प्रतिनिधित्व करने वाली सरकार यदि उनसे मतभेद रखती है तो वे उसे निरस्त करके अपनी पसन्द के लोगों को सत्ता सौंप देते हैं।

हमारा देश भी उस शक्ति के प्रभाव में है और उन्हें लाभ पहुंचाने के लिए वे देश के आम नागरिकों के हितों को नज़रअंदाज़ करता रहता है। यह ठीक है कि कोर्ट ने उस वकील को लताड़ लगायी, लेकिन इससे अधिक कुछ होने की आशा नहीं है। जज साहिबा मानती हैं कि लोगों को ज़हर पीना पड़ेगा, लेकिन इसके लिए कुछ किया नहीं जा सकता है। हां कंपनी इस ज़हर को अमृत साबित करने की पूरी कोशिश करेगी और इसे अमृत साबित करके ही छोड़ेगी। उसने अपने पक्ष में वातावरण बना लिया है।

● मुशर्रफ़ अली

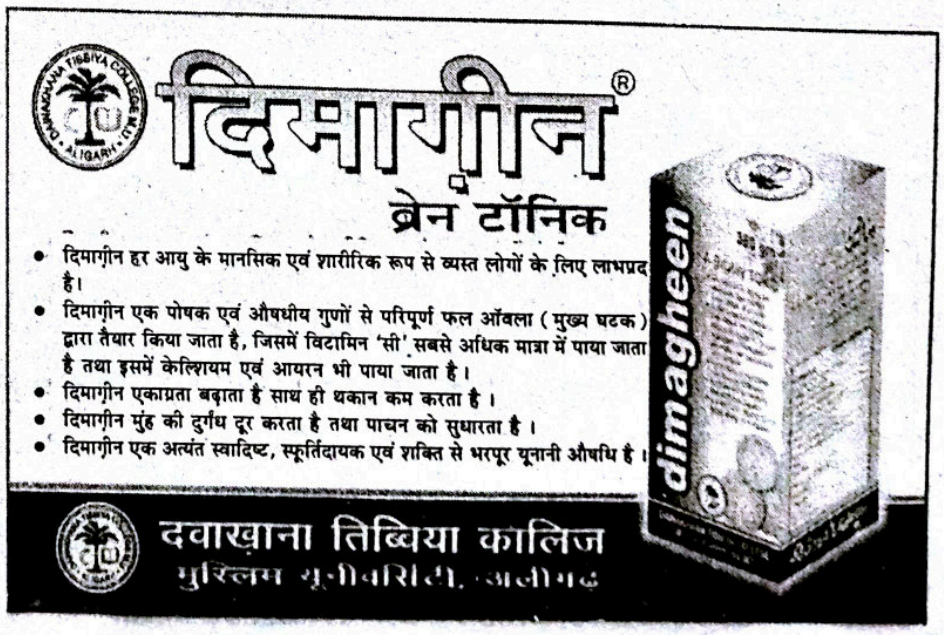

हिंसक कौन ?

अगर यह सच है तो इसका अर्थ क्या हुआ ? साफ़ है कि दंतेवाड़ा में मारे गये सी॰आर॰पी॰एफ॰ जवानों पर वे गोलियां चलीं जो स्वयं सी॰आर॰पी॰एफ॰ के भंडारों से निकली थीं। यानी इन जवानों की हत्या में स्वयं सी॰आर॰पी॰एफ॰ कर्मियों का परोक्ष हाथ था। यही एक भ्रष्ट लोकतंत्र का कारनामा है। इसकी आपाद भ्रष्टता जहां एक ओर नक्सलवाद जैसे विकल्पहीनता से उपजे हिंसक आन्दोलनों को जन्म देती है, वहीं दूसरी ओर स्वयं अपने ही जवानों को उन आन्दोलनकारियों के हाथों मरवाने का इन्तिज़ाम भी कर देती है। यानी शांति और लोकतंत्र का नाटक करते हुए चहुंमुखी हिंसा का वातावरण रच देती है।

(विभांशु दिव्याल, राष्ट्रीय सहारा, 2 मई 2010)

लक्ष्य से अनभिज्ञ

विडंबना यह है कि आदिवासी खुद नहीं जानते कि उन्हें जिन हथियारों को चलाने का प्रशिक्षण दिया जा रहा है, वे आते कहां से हैं। इन हथियारों पर उनका खुद कोई नियंत्रण नहीं है। ये कब और कहां चलाये जाएंगे, यह भी वे खुद तय नहीं कर सकते। इस तरह माओवादी उनके अनुशासन में नहीं, बल्कि वे माओवादियों के अनुशासन में हैं। बेशक, वे सिपाहियों और अर्धसैनिक बलों के सदस्यों की तरह किराये के टट्टू नहीं हैं। जो करते हैं, जी-जान से करते हैं पर वे नहीं जानते कि वे जो कर रहे हैं, उसका वास्तविक लक्ष्य क्या है। कहा जा सकता है, यह भेस बदल कर उनका राजनीतिक इस्तेमाल है।

(राजकिशोर, राष्ट्रीय सहारा, 2 मई 2010)

नींद

पिछले दिनों कोलकाता और बिहार के क़रीब चार ज़िलों में तूफ़ान ने क़हर बरपाया और लगभग 140 मौतें हुईं। चूंकि देश में आई॰पी॰एल॰ का हंगामा ज़्यादा था, सो इतनी बड़ी विपदा अख़बारों की सुर्ख़ियां नहीं बन पायीं। हालांकि प्रभावित ग्रामीण अंचलों में भूस्खलन व तूफ़ान से ज़्यादा लोग मारे गये हैं। ग़रीबों का कुल मिलाकर कई करोड़ का नुक़सान आंका जा रहा है। विडंबना यह कि यह सब तब हुआ, जब इस तूफ़ान की सूचना प्रशासन के पास पहले से थी। तबाही के बाद प्रशासन सीमित साधनों में राहत का काम कर रहा है तो नेता अपनी सियासत चमकाने के लिए बयानबाज़ी कर रहे हैं। लेकिन यह सवाल कहीं से नहीं उठा कि इन हालात में प्रशासन का आपदा प्रबंधन महकमा क्या कर रहा था ?

(पंकज चतुर्वेदी, राष्ट्रीय सहारा, 5 मई 2010)

बदलती प्राथमिकता

लोकतांत्रिक ढंग से निर्वाचित सरकारों को कंपनियों और डेवलपरों की अपेक्षा अपने नागरिकों के हित साधने पर अधिक ध्यान देना चाहिए। उस क़ानून को रद्द करने के लिए क़दम उठाये जाने चाहिए, जो अपने स्वरूप में ही असंवैधानिक है। वैसे भी सेज के सृजन से जो समस्याएं पैदा हुई हैं उन्हें दृष्टिगत रखकर ही सरकार को भूमि सुधारों पर नये सिरे से विचार करना चाहिए। प्रति व्यक्ति 30 एकड़ की अधिकतम सीमा अवास्तविक है, जबकि भूमिहीनों की संख्या बढ़ती जा रही है और अलाभकारी जोतों के कारण किसान अपनी भूमि बेचने और मज़दूरी करने पर बाध्य हो रहे हैं। इस प्रवृत्ति से तो सिर्फ़ माओवादी ही मज़बूत होंगे–जिनकी यह धारणा है कि विकास को लेकर सभी शिकायतों का जवाब बंदूक़ ही है।

(कुलदीप नैयर, दैनिक जागरण, 5 मई 2010)

आज भी वही स्थिति

आज पूंजी की दुनिया ने पूरी दुनिया को बाज़ार में बदल दिया है। हर चीज़ बिकने के लिए तैयार है। परन्तु इसकी क़ीमत पूंजी के मालिक ही तय करेंगे। इतिहास में लौटकर देखें तो दुनिया में व्यापारिक पूंजी जब औद्योगिक पूंजी के रूप में विकसित होने लगी तो उसी के साथ समाज में एक नया वर्ग का उदय हुआ जिसे औद्योगिक मज़दूर (मज़दूर वर्ग) कहते हैं। मार्क्स के शब्दों में सर्वहारा वर्ग। यह नया सामाजिक वर्ग अपने पुराने सामाजिक संबंधों से हटकर एक नये सामाजिक स्वरूप में आगे आया। समाज में पुराने ज़माने की तरह इन्हें अपनी जीविका के लिए गुलामों की तरह 12 से 16 घंटे काम पूंजीपतियों के लिए करना पड़ता था। पूंजी के मालिक अपनी पूंजी के अंधे विकास का उद्देश्य रखते थे। इस नाते मज़दूरों के ऊपर शोषण का शिकंजा कसता चला गया। (पी॰के॰ शाही, राष्ट्रीय सहारा, 1 मई 2010)

चंगेज़ ख़ान और मुसलमान

● एहसान शौक़

जनाब एहसान शौक़ अपनी ''किताब चंगेज़ ख़ान से बाबर तक'' में लिखते हैं कि चंगेज़ ख़ान ने सन 1206 ई॰ में अपने क़बीले के ऊंचे-ऊंचे घराने वाले अमीरों की एक सभा ''कुरिलताई'' बुलायी और उस सभा के सदस्यों ने तेमूचिन को चंगेज़ ख़ान, समुदी ख़ान या सार्वभौम शासक की उपाधि से विभूषित किया । फिर सभा में जो नियम व क़ानून बनाये गये, चंगेज़ ख़ान ने स्वयं उसे सख़्ती से लागू किया । कुरिलताई (सभा का नाम) के नियमों में चंगेज़ ख़ान का यह आदेश भी सम्मिलित किया गया था कि मजलिस की मीटिंग के अवसर पर बोधूरचू (जो चंगेज़ ख़ान का दोस्त बन गया था) औरों के मुक़ाबले में चंगेज़ ख़ान के ज़्यादा क़रीब बैठा करेगा और उसे चंगेज़ ख़ान की तलवार, कमान संभालने तथा उन्हें अपने साथ रखने की इजाज़त होगी । चंगेज़ ख़ान ने अपने भाई किसार को तेग़बरदार (तलवार बाज़) नियुक्त किया और अपने अधीन सेना के सरदारों, नौकरों की देखभाल करने वाले तथा क़िलों की रक्षा करने वालों की ख़िदमत के लिए उसने ऐसे रक्षकों को भी नियुक्त किया, जो बहादुर, निडर और बुद्धिमान थे ।

चंगेज़ ख़ान ने अपने लिए एक मुंहाफ़िज़ दस्ता (रक्षक दल) और जंगल में एक नया फ़ौजी निज़ाम क़ायम किया । पुराने क़बायली जत्थों और सेना की जगह उसने एक स्थायी सेना का गठन किया, जिसमें हारे हुए क़बीले के लड़ाकू योद्धाओं के अतिरिक्त बिखरे हुए ख़ानाबदोशों पर आधारित एक सशक्त सेना बनायी गयी । चंगेज़ ख़ान ने इस फ़ौज में अपने विश्वसनीय साथियों बोधूरचू, किसार, अरग़ौन तथा मकोली के अतिरिक्त जबी नोयान, सोबदाई बहादुर जैसे निपुण तीर अंदाज़ और अनुभवी सेनापतियों को एक-एक हज़ार सिपाहियों की टुकड़ी का सरदार नियुक्त किया । इस तरह इन सेनाओं की टुकड़ी में लोहे जैसे अटूट निश्चय वाले, निपुण तीरअंदाज़ों और उन घुड़सवारों को भर्ती किया गया, जो वाई किंगिज़ की तरह निर्दयी व बेरहम थे, ताकि यह सेना अल्ताई के पहाड़ों से मंचूरिया के जंगलों तक अनेक लड़ाकू क़बीले और शक्तिशाली कैराइट तुर्कों की शक्ति को ख़त्म कर सके ।

कैराइट क़बीले के इलाक़ों में चंगेज़ ख़ान के दुश्मनों की भरमार थी । उन इलाक़ों में मौजूद कुछ क़बीलों के सरदार चंगेज़ ख़ान को मंगोल ख़ान की उपाधि से वंचित करना चाहते थे, वे चाहते थे कि उनकी दोस्ती टूट जाए और ये दोनों एक-दूसरे के जानी दुश्मन बन जाएं । इसी कारणवश वे मंगोलों के साथ बेइन्साफ़ी व अन्याय करते थे और मंगोलों का शिकार भी छीन लिया करते थे । मगर चंगेज़ ख़ान कैराइट सरदार तुग़रल ख़ान उर्फ़ ओंग ख़ान की दोस्ती के कारण कैराइट क़बीले में आबाद दुश्मन सरदारों के अत्याचारों को नज़रअंदाज़ कर दिया करता था और अक्सर ख़ामोश रहता था ।

जबी नोयान और सोबदाई बहादुर के बारे में कहा जाता है कि इनका संबंध उत्तरीय हिरनों वाले क़बीले अलूस आर्यानजी से था । सोबदाई बहादुर भी चंगेज़ ख़ान की तरह कठोर स्वभाव का था । तातारियों से एक जंग के अवसर पर सोबदाई बहादुर ने अकेले ही अपनी सूझ-बूझ के बल पर तातारियों की फ़ौज को तितर-बितर कर दिया था । इससे प्रभावित होकर चंगेज़ ख़ान ने उसे अपना दोस्त और सेना का सरदार बना लिया । इस तरह चंगेज़ ख़ान ने अपने कुशल योद्धाओं की बदौलत एक सुसंगठित सेना का गठन किया ।

बारहवीं सदी समाप्त हो रही थी । चंगेज़ ख़ान अपने दुश्मनों को मिटा देने के लिए अपने क़बीले के बहादुर

योद्धाओं के साथ युद्ध अभ्यास कर रहा था । चीन की दीवार के उस पार, जब बोयार झील के तातारियों ने उत्पात मचाया, तो इस अवसर पर चंगेज़ ख़ान ने क़ैराइट क़बीले के सरदार तुग़रल ख़ान से सहायता मांगी और दोस्ती का समझौता करके तातारियों पर आक्रमण कर दिया, ताकि उद्दंड तातारियों को सज़ा दी जा सके । अत: क़ैराइट और मंगोल क़बीले की संयुक्त सेनाओं के आक्रमण से तातारियों की शक्ति कमज़ोर पड़ गयी और वे पराजय का सामना करने पर विवश हो गये । चंगेज़ ख़ान की इस जीत के अवसर पर चीन के बादशाह ने अपने राज्य की तरफ़ से अनगिनत उपहारों के अतिरिक्त तुग़रल ख़ान को ''ओंग ख़ान'' और चंगेज़ ख़ान को ''बाग़ियों का दुश्मने सालार'' की उपाधि से विभूषित किया ।

कैराइट क़बीले के इलाक़ों में चंगेज़ ख़ान के दुश्मनों की भरमार थी । उन इलाक़ों में मौजूद कुछ क़बीलों के सरदार चंगेज़ ख़ान को मंगोल ख़ान की उपाधि से वंचित करना चाहते थे, वे चाहते थे कि उनकी दोस्ती टूट जाए और ये दोनों एक-दूसरे के जानी दुश्मन बन जाएं । इसी कारणवश वे मंगोलों के साथ बेइन्साफ़ी व अन्याय करते थे और मंगोलों का शिकार भी छीन लिया करते थे । मगर चंगेज़ ख़ान कैराइट सरदार तुग़रल ख़ान उर्फ़ ओंग ख़ान की दोस्ती के कारण कैराइट क़बीले में आबाद दुश्मन सरदारों के अत्याचारों को नज़रअंदाज़ कर दिया करता था और अक्सर ख़ामोश रहता था ।

यद्यपि जब चंगेज़ ख़ान ने उदास और निराश होकर अपने बड़े बेटे जोची ख़ान की शादी तुग़रल ख़ान के परिवार में करने से मना कर दिया, तो तुग़रल ख़ान चंगेज़ ख़ान से नाराज़ हो गया और फिर तुग़रल ख़ान ने दोस्ती का समझौता तोड़कर पश्चिम में आबाद दुश्मन मकरीत क़बीले के सरदार ''जमूका'' के साथ मिलकर मंगोलों पर रात के अंधेरे में आक्रमण करने की एक ख़तरनाक योजना बनायी । इस ख़तरनाक योजना की ख़बर जब चंगेज़ ख़ान को हुई, तो वह अपने क़बीले के लोगों को रात में ही चुपके से उनके ख़ेमों से निकाल कर बाहर चरागाहों में चला गया, जहां ऊंची-ऊंची पहाड़ियों का लंबा सिलसिला चला जाता था । सुबह पौ फटने से पहले ही जब मकरीत और कैराइटों ने मंगोलों के ख़ेमागाहों पर आक्रमण किया, तो वहां उनको इन्सान और जानवरों से ख़ेमे ख़ाली मिले । जब उन्होंने मंगोलों के ख़ेमों की तलाशी लिए, तो उन्हें घोड़ों के खुरों के निशान मिले । उन निशानों क़ो देखते हुए जब वे लोग पहाड़ी चरागाहों तक पहुंचे, तो चंगेज़ ख़ान ने बिना अवसर गंवाए ही अपने बहादुरों की सफ़ें तैयार कीं और तेज़ी से बढ़ते हुए आक्रमणकारियों पर तीरों की बौछार कर दी । थोड़ी देर में घमासान की जंग होने लगी । चंगेज़ ख़ान को अपने बहादुरों के रणकौशल और मंकूत क़बीले के घुड़सवारों की बहादुरी पर बड़ा भरोसा था । सूरज निकलते ही जब आक्रमणकारियों का दबदबा बढ़ने लगा, तो चंगेज़ ख़ान ने अपने एक मुंह बोले भाई ''गुलदार'' को कैराइटों की सफ़ों का चक्कर काट कर पहाड़ी की चोटी पर झंडा लगाने का आदेश दिया । यद्यपि इस जंग में चंगेज़ ख़ान की बुरी तरह



हार हुई, मगर उसने मंगोलों की पुरानी जगी परम्परा के अनुसार पहाड़ की चोटी पर अपने क़बीले का पताका फ़हरा दिया ।

कैराइटों से हारने के बाद चंगेज़ ख़ान के आसपास रहने वाले दुश्मन क़बीलों ने फ़साद फैलाना शुरू कर दिया और उन्होंने पुरानी वफ़ादारियों को तोड़कर नये और शक्तिशाली क़बीलों के साथ वफ़ादारी का समझौता कर लिया । इन प्रतिकूल परिस्थितियों में चंगेज़ ख़ान ने तुग़रल ख़ान को एक विस्तृत ख़त लिखा, जिसमें चंगेज़ ख़ान ने तुग़रल ख़ान की वादाख़िलाफ़ी पर सख़्त नाराज़गी का इज़हार किया था । अत: जब तुग़रल ख़ान ने चंगेज़ ख़ान के ख़त का कोई उत्तर नहीं दिया, तो चंगेज़ ख़ान ने कुरिलताई की मीटिंग में (सभा का नाम) स्वीकृत प्रस्ताव के अनुसार अपने आसपास के सारे क़बीले, जिनमें शैतानों के पुजारी, बौद्ध धर्म को मानने वाले, मुसलमान और ईसाई ख़ानाबदोश क़बीले शामिल हैं, इन सारे क़बीलों में अपने दूत दौड़ाये और उनके सरदारों को अपने झंडे तले एकत्र होने की दावत देते हुए कहा कि– ''तुग़रल ख़ान ने किरासू नदी के किनारे मुझसे दोस्ती का वादा किया था कि हम चुग़लख़ोरों, अहितकारियों और ईर्ष्यालुओं की बातों पर कोई अहमियत न देंगे । अगर हमारे बीच कोई मतभेद उत्पन्न होगा, तो हम मिलकर उस मतभेद को दूर कर लेंगे, लेकिन तुग़रल ख़ान ने हम पर आक्रमण करके हमारे हज़ारों बहादुरों को मौत के घाट उतार दिया है, तो इन परिस्थितियों में हम सारे छोटे-बड़े क़बीले के सरदारों का यह कर्तव्य बनता है कि गोबी के मरुस्थल में बिखरे रहने की बजाय एक मज़बूत और सुदृढ़ चट्टान की छत्रछाया में रहना ज़्यादा अच्छा है ।''

सर्दी का मौसम शुरू होते ही जब गोबी मरुस्थल का सारा क्षेत्र परस्पर युद्ध करने वाले दो गिरोहों में बंट गया, तो चंगेज़ ख़ान ने युद्ध में पहल करने का दृढ़ संकल्प किया और फिर उसने बर्फ़ पिघलने का इन्तिज़ार किये बिना अन्य क़बीलों और मंगोल बहादुरों की एक बहुत बड़ी सेना चोरी-चुपके तुग़रल ख़ान के कैराइट क़बीले की ओर बढ़ाना शुरू की और इस तरह चंगेज़ ख़ान ने कैराइटों पर अचानक आक्रमण करके हिंसक युद्ध प्रारंभ कर दी । सूरज डूबते ही कैराइटों की पंक्तियां तितर-बितर हो गयीं । मंगोल बहादुरों के सामने कैराइट टिक न सके और युद्ध के मैदान से भाग गये । तुग़रल ख़ान और उसका बेटा घायल अवस्था में भागते हुए मरुस्थलीय भू-भाग में तुर्कों के हाथों मारे गये । चंगेज़ ख़ान ने कैराइटों के ख़ेमागाहों पर अधिकार करके उनकी सारी माल-दौलत को अपने अधिकार में ले लिया । लूटे हुए सामान को अपने मंगोल बहादुरों और दूसरे साथ देने वाले क़बीले के बहादुरों में बांट दिया ।

फिर चंगेज़ ख़ान ने अपनी सेना को मरुस्थल में स्थित शहर कराकोरम की तरफ़ कूच करने की आज्ञा दी । मरुस्थल के इस क्षेत्र के रेत का रंग काला था, इसलिए इसका नाम कराकोरम पड़ गया था । अत: तीन साल की पेशक़दमी के बाद मंगोल सेना और उनके घुड़सवार सैनिक पश्चिमी तुर्कों, ताइमानों और ऐगूरियों के क्षेत्रों में घुस गये । मंगोल सेना ने जब उत्तर के बर्फ़ीले पहाड़ों से लेकर दक्षिण में पूरी चीन की दीवार तक और चीन के पुराने शहरों को अपने अधिकार में कर लिया, तो चंगेज़ ख़ान ने दुनिया पर एकछत्र राज्य करने के स्वप्न को पूरा करने और चीन की सुसंगठित तथा प्राचीन कालीन साम्राज्य से टक्कर लेने से पहले गोबी मरुस्थल के उद्दंड और विद्रोही क़बीले, जिनमें

Niyaz Ahmed
Tel. : 2292062 (S)
M. : 98261-29877
Hosiery Centre
Wholesaler
Readymade & Handloom
B/43 Uttar Gangotri, Supela, Bhilai, Durg (C.G)

प्रतिभाशाली ऐगूरी, पराक्रमी कैराइट, ख़ूंख़्वार तातारी, निडर मरकीत के ख़ानाबदोशों और बर्फ़ीले क्षेत्रों के ख़ामोश स्वभाव के शिकारी क़बीले भी शामिल थे, उनको पुरानी पद्धतिशैली तथा उनके आचार-विचार से हटाने के लिए और क़बाइली ज़िन्दगी में नज़मो-ज़ाबता पैदा करने के लिए यासा (मंगोलों का संविधान) का प्रस्ताव पारित किया गया, ताकि एक शासक के बनाए गए नियमों और क़ानून की रोशनी में सेना की शक्ति को सुसंगठित और सुसज्जित करके बाहरी शत्रुओं से लड़ाई-झगड़े के कारण, जो रक्तपात होता चला आ रहा था, उस पीढ़ी दर पीढ़ी चले आ रहे ख़ून ख़राबे के अध्याय को ख़त्म किया जा सके ।

पारंपरिक ख़ानाबदोशी पद्धति और उभरती हुई नयी मंगोल व्यवस्था के बीच संतुलन बनाने के लिए चंगेज़ ख़ान ने यासा (अर्थात उनके संविधान और नियमों) के अनुसार प्रस्ताव पारित करके मंगोलों में आंतरिक एकता और अखंडता पैदा करने का प्रयत्न किया । यासा चंगेज़ ख़ान के द्वारा बनाए गए उन क़ानूनों का संग्रह था, जिसके हर आदेश, हर हिदायत को आसमानी आदेश-निर्देश समझा जाता था और किसी व्यक्ति की यह हिम्मत न थी कि वह उस आदेश की अवहेलना करे । यासा के निम्नलिखित नियम थे–

1. सारे इन्सान एक उस ख़ालिक़ और मालिक की हस्ती का इक़रार करने के पाबन्द हैं, जो मौत और ज़िन्दगी देने वाला और जो कह्हार व जब्बार है ।

2. सारे क़बाइल चंगेज़ ख़ान के आदेश का पालन करेंगे ।

3. अगर कोई व्यक्ति धोखा देता और ग़लती करता, तो उसे सख़्त से सख़्त सज़ा देने का प्रावधान था ।

4. तेमूचिन के अतिरिक्त कोई भी व्यक्ति चंगेज़ ख़ान नहीं कहा जा सकता ।

5. मद्यपान, औलाद की नाफ़रमानी और शौहर से बीवी की उद्दंडता को जुर्म क़रार दिया गया था ।

6. कोई व्यक्ति उस वक़्त तक अपराधी नहीं समझा जाएगा, जब तक वह स्वयं अपने जुर्म को स्वीकार न करे या जुर्म करते समय रंगे हाथों न पकड़ा जाए ।

7. जंग में गिरफ़्तार होने वाले मंगोलों के लिए दुश्मनों से माफ़ी मांगना संगीन जुर्म था । यह सब नियम यासा के तहत चंगेज़ ख़ान ने पारित किये थे ।

अनुवाद : **इरशाद अली ख़ान**

بسم الله الرحمن الرحيم

"जिस आदमी की यह ख़्वाहिश हो कि ख़ुदा उसको क़ियामत के दिन की घुटन और ग़म से बचाए, तो उसे चाहिए कि तंगदस्त क़र्ज़दार को मोहलत दे या क़र्ज़ का बोझ उसके ऊपर से उतार दे।" (हदीस)

BHARAT ELECTRONICS

TOURIST COMPLEX, MAIN ROAD RANCHI
PIN-834001 (JHARKHAND)

بسم الله الرحمن الرحيم

"और अल्लाह की
बन्दगी करो और उसके
साथ किसी को साझी न ठहराओ।
और अच्छा व्यवहार करो माता-पिता
के साथ, नातेदारों, अनाथों, मोहताजों,
नातेदार पड़ोसियों के साथ, और उन
पड़ोसियों के साथ जिनका संबंध न हो,
और पास के व्यक्ति के साथ,
और राह चलने वालों के साथ,
और उनके साथ जो तुम्हारे
अधिकार में हों।"
(क़ुरआन, 4:36)

ER SHAHNAWAZ KHAN SB.,
Sir Syed Colony, Sir Syed Complex,
Nai sarai, Ramgarh - 829122 (JH)

क्या ब्रह्माण्ड समाप्त हो सकता है ?

एडिनवर्ग विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर स्लेन हवेंस के नेतृत्व में खगोल वैज्ञानिकों के एक दल ने हमारी आकाशगंगा के आसपास के सैकड़ों आकाशगंगाओं का अध्ययन एवं विश्लेषण किया । अध्ययन के अनुसार पुराने तारे मर रहे हैं और नये तारों का जन्म नहीं हो रहा है । एक समय ऐसा आएगा जब सितारों भरी रात की जगह चारों तरफ़ अंधेरे का साम्राज्य होगा । हमारी आकाशगंगा में लगभग डेढ़ खरब तारें हैं ।

ब्रह्माण्ड में इस तरह की अरबों आकाशगंगाएं हैं । तारों के भी अपने रंग हैं । नये तारे का रंग नीला एवं पुराने तारे का लाल होता है । तारों का द्रव्यमान ही उनकी आयु निश्चित करता है । बड़े तारों में संलयन के फलस्वरूप– हाइड्रोजन का व्यय ज़्यादा होता है । तारों की आयु का पता, तारे में हाइड्रोजन की मात्रा और उसकी खपत दर के आधार पर किया जाता है ।

अध्ययनकर्ता के अनुसार अरबों वर्ष पूर्व जन्मे असंख्य तारे एक-एक कर लुप्त हो जाएंगे अर्थात मर जाएंगे । फिर अंतरिक्ष में न्यूट्रॉन तारे और ब्लैक हॉल बचेंगे । बाद में ऐसी ही स्थिति हमारे सूर्य एवं सौरमंडल की होगी और अंततः ब्रह्माण्ड का अंत हो जाएगा ।

मनुष्यों की तरह 'ना' कहने के लिए चिंपैंजी भी हिलाते हैं सिर

वैज्ञानिकों के एक दल ने यूरोप के छह चिड़ियाघरों में चिंपैंजी के अध्ययन के लिए लगाये वीडियो की जांच करने पर पाया कि जिस तरह मनुष्य 'ना' कहने के लिए अपना सिर हिलाते हैं, ठीक उसी तर्ज़ पर बोनोबोस जैसे बड़े बन्दर चिंपैंजी भी 'ना' कहने के लिए सिर को हिलाते हैं । जर्मनी के शोधकर्ताओं ने 13 अवसरों पर अलग-अलग चिंपैंजी को 'ना' कहने के लिए अपना सिर हिलाते हुए देखा ।

शोधकर्ताओं ने एक मौक़े पर पाया कि जब उलिंदी नामक चिंपैंजी ने अपनी बेटी लुइजा को भोजन के साथ खेलने से मना किया तो उसने उसके सामने अपना सिर 'ना' कहने की मुद्रा में हिलाया । अन्य बच्चों की तरह लुइजा ने भी अपनी मां के इस आदेश को नज़रअंदाज़ कर दिया लेकिन शोधकर्ताओं की टीम इसे बहुत ध्यान से देखती रही । यह खोज एक बार फिर साबित करती है कि बड़े बन्दरों का व्यवहार किस तरह मनुष्यों से मिलता-जुलता है ।

पिछले हफ़्ते वैज्ञानिकों ने इस बात का खुलासा किया था कि किस तरह स्कॉटिश चिड़ियाघर में एक उम्रदराज़ चिंपैंजी के मरने पर साथियों ने दुख प्रकट किया और मृत साथी को बाड़े के पार से छूने का प्रयास किया ।

मुद्रक एवं प्रकाशक ख़लील अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि॰), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट, गली क़ासिम जान, बल्लीमारान, दिल्ली–6 से मुद्रित ।
फोन: 011-26949430
संपादक : डॉ॰ मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है ।

NEW EMPRESS MILLS
1st Phase Industrial Area BALOTRA-344022 (Raj.)
Visit us. www.Empress. com. E-mail : empresspoplin@hotmail.com
(M) SAYED PARWAN ALI 09214408133
LILLY लिली गोल्ड GOLD
Superior Nighty
KAJAL काजल गोल्ड GOLD
MFG. OF : HIGHCLASS STANDARD POPLIN & NIGHTY PRINTS

KARIM CITY COLLEGE

JAMSHEDPUR

Permanently affiliated to Kolhan University, Chaibasa, Jharkhand

NAAC accreditation : B+ & CPE status

Phones: 2423863, 2437386, 2440206, 2431778, Fax: 2430495
e-mail: jsr_kcitycol@sancharnet.in web: www.karimcitycollege.org



Apart from Conventional teaching in Intermediate Arts, Science, Commerce & B.A., B.Sc., B.Com. upto Honours level – ***we also impart*** *the following courses - because* ***the whole world has become a global village and autonomy in respect of exposure of individual behavior has created a wide ranging job opportunities in the field of;***

* **MASS COMMUNICATION VIDEO PRODUCTION**
* **INFORMATION TECHNOLOGY**
* **COMPULTER APPLICATION**
  [Job Oriented Degree Vocational Courses - Sponsored by University Grants Commission & affiliated to Kolhan University)
* **BACHELOR OF EDUCATION (B.Ed)** – Approved by Ranchi University and affiliated to NCTE, Bhubaneshwar
* **Add-on(Vocational) Courses :**
  One year Certificate/Diploma/Advance Diploma in :

Industrial Chemistry,	**Pollution Management**
e-Commerce,	**Functional English**
Aqua Culture	**Marketing, Sales Promotion & Sales Mgt.**
Information Technology	**Mass Communication Video Production**
Computer Application	

* **New Ventures:**

Post Graduate Diploma under distance education programme from AMU, Aligarh	● ***Journalism & Mass Communication***
	● ***Portfolio Management***
	● ***Language for Advertisement, Marketing & Media***
	● ***PG Dip. In Guidance & Counseling***
PROFESSIONAL Language Resource Centre	***Language learning in, English, French, German, Japanese & Spanish, Chinese, Arabic etc., & Communicative English***

For further details contact office :: Karim City College, Jamshedpur

Dr. Mohammad Zakaria
PRINCIPAL

Posted on 20-21 May 2010
June 2010
E-mail: kantidelhi@rediffmail.com
Publishing Date: 18.05.2010

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका
कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-01/3147/2009-2011
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2009-11

اعلان داخلہ

MILLENNIUM GIRLS SCHOOL

AZAD COLONY, PABRA ROAD
HAZARI BAGH (JHARKHAND)



ملینیم گرلس اسکول وہاسٹل ہزاری باغ میں نئے تعلیمی سال 2010-11 کے لئے بچیوں کا داخلہ جاری ہے۔ دور سے آنے والوں کے لئے بہتر یہ ہوگا کہ وہ داخلہ کی پوری تیاری کے ساتھ آئیں۔ کم سے کم 5,000 روپے ساتھ لیکر آئیں تا کہ داخلہ فیس اور بچی کی دیگر ضروریات کی تکمیل کر سکے۔

WANTED

PGTS, TGTS, EXPERIENCED, UNTRAINED TEACHERS–ALL SUBJECTS

FOR

MILLINNIUM GIRLS HIGH SCHOOL,
PABRA ROAD HAZARIBAGH,
E-MAIL ADD. : 786mgs@gmail.com

Phone : 09835293957, 09279149654

Dr. A. A. Farooqui
Secretary

Dr. Hassan Raza
Chairman

Matloob Ahmad
Administrator

خصوصیات

- عصری علوم کے ساتھ دینی تعلیم۔
- سی بی ایس ای انگلش میڈیم۔
- چوتھے درجے سے کمپیوٹر۔
- کھیل کود اور سیاحت کا انتظام۔
- ناظرہ قرآن کا الگ سے نظم۔
- اسلامیات اور اردو ساتھ ساتھ۔
- ہاسٹل کی سہولت۔

(نوٹ) مقامی لوگوں کیلئے نرسری سے ۵ ویں تک لڑکوں کا ایڈمیشن بھی لیتے ہیں۔